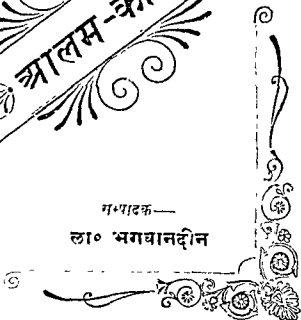




आलम-कलि

गभादक—

ला० भगवानदीन



॥ श्री ॥

आलम-केलि

१९७३

२०७३

रचयिता

आलम और सेवक युविली नागरी

१९७३

संस्कृत

सम्पादक



प्रकाशक

उमाशङ्कर मेहता

प्रथमावृत्ति }
१०००

सं० १९७६

{ मूल्य १ }

प्रकाशक

उमाशंकर मेहता

रामघाट, काशी ।



विक्रेता. ८

(१) एस. एस. मेहता ऐण्ड ब्रदर्स

बुकसेलर्स ऐण्ड पब्लिशर्स

रामघाट, काशी ।

(२) साहित्य-भूषण-कार्यालय

बनारस सिटी ।



प्रकाशक का निवेदन

पाठक वृन्द !

अनेक सुन्दर ग्रंथमालाओं के निकलते हुए भी मैंने यह 'प्राचीन कविमाला' निकालना आरंभ किया है, यह शायद मेरी अनमिज्ञता वा धृष्टता ही कहलायेगी, पर क्या फरक अपना २ शौक ही तो ठहरा। गुर्जरभाषाभाषी होने पर भी मुझे राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा का चाव लग गया है। ला० भगवानदीनजी की शुभ शिक्षा से प्राचीन कवियों का जितना कुछ महत्त्व समझ में आया है, उसीने मुझे इस कार्य की ओर प्रवृत्त किया है।

कई एक प्राचीन कवियों के वे ग्रंथ मैंने एकत्र कर लिये हैं जो प्रसिद्ध तो बहुत हैं, पर कहीं प्रकाशित नहीं हुए। उनका प्रकाशित होना मुझे आवश्यक जँचता है। मैंने बहुतों को यह कहते सुना है कि अमुक कवि की कविता है तो बहुत अच्छी पर खेद है कि प्रकाशित नहीं हुई। आलम की कविता भी उसी गणना में है। इसी कारण मैं इसी ग्रंथ से आरंभ करता हूँ।

यदि हिन्दी प्रेमियों ने इसे अग्रताकर मेरा उत्साह बढ़ाया तो मनिराम, सेनागति, ठाकुर, पजनेश, अग्रदास, सूरदास, केशवदास और अन्य अनेक हिन्दी कवियों के अलभ्य ग्रंथों को सुन्दर सटिप्पण रूप से निकालने का साहस करूंगा।

हर्ष की बात है कि लब्धप्रतिष्ठ काव्यानुरागी. मेरे श्रद्धा-स्पन्द काव्यगुरु ला० भगवानदीन जी (दीन कवि) ने टिप्पणियाँ लिखने तथा संशोधन और संपादन का कार्य स्वीकार कर लिया है, अतः मुझे बहुत कुछ आशा है कि इस माला के पुष्प अन्यन्त मनोहर होंगे।

मेरी प्रार्थना है कि कुछ काव्य प्रेमी सज्जन इस माला के स्थायी ग्राहक हो जायें, तो मेरी चिन्ता दूर हो जाय। स्थायी ग्राहकों का प्रवेश शुल्क केवल ॥) मात्र है। स्थायी ग्राहकों को सब पुस्तकें पौने दामपर मिल सकेंगी।

सज्जनों से यह भी निवेदन है कि यदि उनके पास कोई प्राचीन काव्य ग्रन्थ ऐसा हो जो अद्यतक प्रकाशित नहीं हुआ और जिसका प्रकाशित होना के साहित्यदृष्टि से उत्तम समझते हैं, तो मुझे उसकी प्रतिलिपि देने की कृपा करें, मैं उसे प्रकाशित करने का उद्योग करूंगा।

भवदीय

उमाशंकर मेहता

वक्तव्य

आज कल देश में अनेक ग्रंथमालाएँ निकल रही हैं। नयीन विषयों पर गद्यमय ग्रंथों की भरमार हो रही है। कोई २ ग्रंथ-प्रकाशक अनुवादों की ही झुड़ी लगाये हैं, पर प्राचीन कवियों की कीर्ति के उद्धार की ओर बहुत कम ही लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ है। प्राचीन काव्य का अनुशीलन आज दिन एक व्यर्थ काम समझा जाने लगा है, पर मेरा चित्त तो यह कहता है कि यह भारी भूल है। प्राचीनताप्रिय और सच्चिदानन्द की उपासिका हिन्दू जाति, अलौकिक आनन्ददायिनी प्राचीन काव्य को भुला रही है, यह शुभ लक्षण नहीं। नयीन प्रियता अघश्य अच्छी बात है, उन्नति की द्यौतक है, स्वार्थ-साधक है, लाभकारी है, पर साथ ही यह भी स्मरण रखना चाहिये कि प्राचीनप्रियता भी हिन्दू जाति का एक विशेष गुण है जिसके खो देने से मुझे तो जाति का कल्याण नहीं देख पड़ता। प्राचीनों की कीर्ति का संरक्षण करना, उसका प्रचार करना, उसका सौन्दर्य बढ़ाना यदि हम से नहीं हो सका तो हमें कोई हक नहीं है कि हम उन प्राचीनों के गुणों के उत्तराधिकारी होने का गर्व करें और उन गुणों के धारिस कहला कर संसार में अपना धाक जमाते हुए अनुचित लाभ उठावें और भूठी शान दिखावें। अस्तु,

उपर्युक्त विचार से प्रेरित होकर ही मैंने आज तक यकसी हंसराजकृत 'सनेहसागर' और पद्माकरकृत "हिम्मत वहादुर विरुदावली " खोजकर प्रकाशित कराने का सौभाग्य प्राप्त किया है। यह प्रस्तुत ग्रंथ तीसरा रत्न है जो मेरे परिश्रम से प्रकाशित हो रहा है। चौथा रत्न होगा मतिराम कृत 'सत-सई' और पाँचवाँ होगा सेनापति जी का "कवित्त रत्नाकर"

कवि शिरोमणि श्री सुरदास जी की कविता बहुत कम पढ़ी जाती है। कारण यह है कि उनका बड़ा ग्रन्थ 'सुर-सागर' साधारण पाठक खरीद नहीं सकते। अतः मैंने उनके सागर को मध्यकर पाँच रत्न अलग निकाल लिये हैं। उन्हें भी इसी रूप से प्रकाशित करने का उद्योग कर रहा हूँ। देखें कौन प्रकाशक इस काम में मेरा हाथ बँटाता है।

पुस्तक परिचय

'आलम' कवि कृत 'आलमकेलि' ग्रन्थ का नाम सभी साहित्य सेवियों के मुख से सुना करता था, पर अप्रकाशित होने के कारण दर्शनों का सौभाग्य न हुआ था। यत्र तत्र फुटकर कवित्त देख कर अनुमान होता था कि 'आलम' एक अच्छे कवि होंगे।

इस वर्ष सौभाग्य वश मुझे निज शिष्य पं० उमाशंकर मेहता (पद्मानिवासी और काशीप्रवासी) के सरस्वती-मंडार में एक हस्तलिखित प्रति देखने को मिली जो संभवत् १७५३ की लिपी हुई है और जिसके अन्त में लिखा है—

इतिथी आलमकृत कवित्त 'आलमकेलि' समाप्तम् ।
संवत् १७५३ समये आसन, वंदी अष्टमी वार शुक्र ॥ "

पुस्तक देखते ही मुझे तो इतना आनन्द हुआ कि मानो पद्मा की हीरे की खानि ही मिल गई हो। मैंने मेहता जी से प्रकाशन के लिये अनुरोध किया। मेहता जी ने कहना मान लिया और फल स्वरूप यह पुस्तक आपके सामने है।

इस पुस्तक में केवल आलम ही के रचे छंद नहीं हैं, वरन् 'सेख' कृत छंद भी हैं। 'आलम' और 'सेख' का सम्बन्ध सब ही लोग जानते हैं। छंदों में ऊंची साहित्य-मर्मज्ञता, सच्ची कृष्ण भक्ति, और अनूठी प्रतिभा का परिचय प्रतिछंद मिलता है। मुझे तो 'आलम' की प्रतिभा से 'सेख' की प्रतिभा कुछ ऊंची जँचती है। लोग कहते हैं कि 'आलम' जी 'सेख' के लिये मुसलमान हो गये, पर मुझे ऐसा जँचता है कि 'आलम' की सुसंगति पाकर 'सेख' कृष्णभक्ति में रँग कर कृतार्थ हो गई।

कविताकाल

'आलम' और 'सेख' का कविताकाल साधारणतः सं० १७४० से सं० १७७० तक माना जाता है। यह हस्तलिखित प्रति जिसके अनुसार यह पुस्तक छपी है सं० १७५३ की लिखी हुई है। इससे यह स्पष्ट है कि इसमें वे ही छंद संग्रहीत हैं जो उस समय तक बन चुके थे। यही कारण है कि इसमें 'आलम' और 'सेख' के कुछ अधिक प्रख्यात कवित्त (जो इस संग्रह के बाद रचे गये होंगे) नहीं मिलते। उदाहरणवत् 'आलम' के ये मशहूर छंद इसमें नहीं हैं। हमारे ग्राम के निवासी और हमारे परम हितैषी मित्र बा० पुत्तलाल जी सोनार इन छन्दों को पढ़ते पढ़ते आँसू बहाने लगते थे:—

सवैया

जा थल कीन्हें विहार अनेकन ता थल बाँकरी बैठि चुन्यो करे
 जा रसना सौं करी बहु बात सुता रसना सौं चरित्र गुन्यो करे
 'आलम' जौन से कुंजन में करी केलि तहाँ अब सीस धुन्यो करे
 नैनन में जो सदा रहते तिनकी अय कान कहानी सुन्यो करे
 हमारे मित्र पुस्तलाल जी सारंगी भी बजाते थे। बरसात
 के दिनों में कभी कभी यह कवित्त सारंगी पर गाया
 करते थे:—

कैधौ मोर सोर तजि गये री अनत भाजि;

कैधौ उत दादुर न बोलत है ए दई।

कैधौ पिक चातक महीप काह मारि डारे;

कैधौ बकपाँति उत अन्तगत है गई।

'आलम' कहै हो आली अजहूँ न आये प्यारे,

कैधौ उत रोति बिपरीत बिधि ने उई।

मदन महीप की दोहाई फिरिबे तें रही,

जूझि गये मेघ कैधौ दामिनो सती भई।

'सेख' का यह निम्नलिखित कवित्त बहुत ही मस्त हो
 कर गाया करते थे:—

रात के उनींसे अलसाते मदमाते राते,

अति कजरारे दग तेरे यौ सोहात हैं।

तीखी तीखी कोरनि करोरे लेत काढ़े जीउ,

केते भये घायल औ केते तलफात हैं।

ज्यों ज्यों लै सलिल चख 'सेख' धौवै बारबार,

त्यों त्यों बल बुंदन के वार झुकि जात हैं।

फैवर के भाले कैधौ नाहर नहनवाले,

लोह के पियासे कहुँ पानी तें अघात हैं।

सात्पर्य यह कि आलम और सेख के बहुत से छंद इसमें नहीं मिलते। इसका कारण यही जान पड़ता है कि वे छंद इस हस्तलिपि के बाद की रचना हैं। यह हस्तलिपि आलम के जीवन काल में ही उनके किसी शिष्य वा भक्त द्वारा लिखी गई है। अतः हमें तो अत्यन्त प्रमाणिक जँचती है।

जीवनवृत्त

लोग कहते हैं कि 'आलम' कवि जाति के ब्राह्मण थे, और 'सेख' रंगरेजिन के प्रेम में फँसकर मुसल्मान हो गये थे। सच्चे साहित्यमर्मज्ञों का मत है कि सच्चे कवियों का कोई धर्म नहीं, वे तो धर्म के दिखाऊ बंधनों को तोड़कर सच्चे प्राकृतिक सौंदर्यमय प्रेम-पथ के पथिक होते हैं। सभी देशों और सभी कालों में ऐसे कवि होते आये हैं। आलम भी वैसे ही थे।

'सेख' केवल रंगरेजिन ही न थी वरन् ऐसा जान पड़ता है कि वह सच्चे प्रेमरंग में स्वयं भी रँगो हुई थी। बड़ी प्रतिभावाली और हाज़िर जवाय थी। सेख से उत्पन्न आलम का एक पुत्र भी था जिसका नाम 'जहान' था।

कहते हैं एक बार आलम के आश्रयदाता शाहजादा मुज-जुंम (औरंगजेब के पुत्र) ने मज़ाक में 'सेख' से पूछा कि "क्या 'आलम' की बीबी आपही हैं?" 'सेख' ने हँसकर तुरंत जवाब दिया था "हाँ हुज़ूर! 'जहान' की माँ मैं ही हूँ।" ऐसी प्रत्युत्पन्न मतिवाली और ऐसी प्रतिभावाली स्त्री पर रीझ कर आलम ने कुछ बुरा नहीं किया था। प्रत्येक सच्चा कवि ऐसी स्त्री पर निह्वावर होना अपना सौभाग्य समझेगा।

आलम ने 'रेखता' नाम से कुछ ऐसे कवित्त लिखे हैं जिन से जान पड़ता है कि आलम जी फारसी भाषा और उसके

साहित्य से भी अच्छी जानकारी रखते थे और खड़ी बोली में भी कविता करने के पक्षपाती थे (देखिये छंद नम्यर २६६ से २७३ तक) ।

छंद नम्यर १६६ में 'सेख' ने सर्वनाम और क्रिया के ऐसे रूप प्रयुक्त किये हैं जिनसे प्रत्यक्ष मालूम होता है कि वह पंजाब निवासिनी थी । अनेक छंदों से उसकी कृष्णप्रति अटल भक्ति भली भाँति प्रगट है (देखिये छंद नं० २४२, २४६

पुस्तक आपके सामने है मेरे कहने की कुछ आश्चर्यकरता नहीं, कविता आपसे आप रचयिता की प्रशंसा करा लेगी । हाँ ! अपने विषय में मुझे इतना कहना है कि मैंने इस पुस्तक का शूफ देखा है, टिप्पनियाँ लिखी हैं और यत्र तत्र लिपि दोषों का संशोधन किया है । तो भी जहाँ जहाँ छंदों का अर्थ समझ में नहीं आया वहाँ मैंने पाठ ज्यों का त्यों रहने दिया है । यथाशक्ति मैंने उद्योग किया है, पर मुझे संतोष नहीं हुआ कि पुस्तक शुद्ध रूप से निकली है । पाठकों से निवेदन है कि उनको जो त्रुटियाँ वा अशुद्धियाँ मालूम हों उनसे मुझे सूचित करने की कृपा करें तो अगले संस्करण में संशोधन कर दिया जायगा ।

हो सका तो मठिराम कृत 'सतसई' और सेनापति कृत 'कवित्त-रत्नाकर' भी शीघ्र ही इसी रूपसे सेवा में प्रस्तुत करूँगा । पर यह बात पाठकों की कृपा पर ही निर्भर है आशा है कि हिन्दी प्रेमी इसे अपनाकर प्रकाशक का उत्साह बढ़ावेंगे ।

श्रीरामनवमी
सं० १९७६
काशी

विनीत

लाला भगवानदीन

विषय-सूची



विषय	पृष्ठ
बाललील	१
वयः संधि	५
नवोद्गा	६
प्रौढ़ा वर्णन	८
अभिसार	१०
मानिनी	११
संकेतस्थल	२२
नायक की दूती	२५
विरह वर्णन	४३
सखी की उक्ति सखी प्रति	५३
संडिता वर्णन	६७
प्रेम कथन	७४
घंशी	८०
प्रवत्स्यत्पतिका	८३
भँवर-गीत	८४
उद्धव का लौटना	८२
जसोदा-विरह	८४
गोपी-विरह	८५
पवन वर्णन	१०१

विषय		पृष्ठ
जमुना-कुञ्ज	...	१०३
गंगावर्णन	...	१०४
दीनता	...	१०५
शिवको कवित्त	...	१०८
देवी को कवित्त	...	१०८
रामलीला	...	१०९
रेखता	...	११४
सवैया	...	११६
विपरीति वर्णन	...	१२१
यशोदा की उक्ति	...	१२६
नवयौवना	...	१३१
मानवर्णन	...	१३२
चन्द्रकलंक	...	१३८
कुचछवि	...	१४०
युगलमूर्ति	...	१४१
अभिसार	...	१४४
आगतपतिका	...	१४६
शान्तरस	...	१५१

— आलम-केलि —

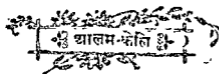
— २०५९७७ —

वाल-लीला

पालने खेलत नन्द-ललन छलन बलि,
 गोद लै लै ललना करति मोद गान है ।
 'आलम' सुकवि पल पल मैया पायै सुख,
 पोपति पोषूष सुकरत पय पान है ।
 नन्द सों कहति नन्दरानी हो महार ! सुत
 चन्द की सी फलनि पढ़तु मेरे जान है ।
 आद देखि आनंद सों प्यारे कान्ह जानन नै,
 आन दिन आन घरी आन छवि आन है ॥ १ ॥

भीनी सी भँगूली घोंच भीनो आंगु भलकतु,
 कुमरि कुमरि कुकि ज्याँ ज्याँ भूलै पलना ।
 घुँघुरू घूमत घने घुँघुरा' के छोर घने,
 घुँघुरारे चार मानो घन घारे चलना ।
 'आलम' रसाल जुग लोचन विसाल लोल,
 ऐमे नन्दलाल अनदेखे फहँ कल ना ।
 घेर घेर फेरि फेरि गोद लै लै घेरि घेरि,
 टेरि टेरि गावै गुन गोकुल की ललना ॥ २ ॥

१—घुँघुरा = घुनघुना, फाट का रंगीन गोला जिसमें घुँघुरा या कोडियों लगी होती हैं और जो पालने में बंधा छटकता है ।

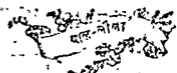


जसुदा के अजिर विराजै मनमोहन जू;
 अङ्क रज लागे छवि छाये सुरशात^१ की ।
 छोटे छोटे आछे पग घुँघुड़ घूमत बने,
 आसों चित हित लागै सोभा बालजाल की ।
 आखी बतियां सुनावे द्विनु छाँड़ियो न भादै,
 छाती सौं छरावै लागै छोह वा दयाल की ।
 हेरि अज-वारि हारी वारि फेरि डारी सब,
 आलम चलैया लीजै ऐसं नन्दलाल की ॥३॥

वैहाँ दधि मधुर धरनि धखो छोरि खैहै,
 पाम तें निकलि धौरी धेनु धाइ खोलिहै ।
 धूरि लोटि ऐहें लपटहै लटकत ऐहें,
 सुगद सुनैहें वेनु बतियाँ अमोलि हें ।
 'आलम' सुकवि मेरे ललन चलन सीखै,
 दतन^२ की घाँह अज गलिनि में डोलिहै ।
 सुदिन सुदिन दिन, ना दिन गनोंगो-माई;
 जा दिन कन्हैया मोलों मैया कहि खोलिहै ॥४॥

टोरी^३ कौन तागी दुरि जैसे की सिगरो दिन.
 धिनु न रहत धरै फहों का कन्हैया को ।
 पल न परत फल विकल जसोदा मैया,
 टौर भूले जैसे तलबेली लगै को ।

१—सुरशात = इन्द्र । २—दतन की घाँह = दत्तदेव जी का दाघ
 पद छै हुए । ३—टोरी = आदत, बानि ।



आँचन सौं मुख पौड़ि पौड़ि कै कहति तुम, . ३
 ऐसे कैसे जान डेत कहँ छाटे मैया को ।
 खेलन ललन कहँ गए हैं अकेले नेकु, . ४
 बोलि दीजे यलन^१ बलैया लाग मैया को ॥ ५ ॥

ऐसे बारी बार^२ याहि पाहगे न जान दीजे,
 बार^३ गये वारी तुम यनिता संगन को ।
 प्रजः टोना, रामन निपट टोनहार डोलै,
 जसोदा मिटाउ टैंव और के शंगन की ।
 'आलम' लै गई लान धारि फेरि डारि नारि,
 बोलि धौ सुनाइ धुनि कनक कंगन को ।
 छोर मुख लपटायें छार घकुटनि^४ भरै, दीया !
 नेकु छवि देखो छगन-गंगन की ॥ ६ ॥

बीस विधि आऊँ दिन पागेये न पाऊँ और,
 याही काज याही घर यौतनि की वारी है ।
 नेकु फिरि पेहें कैहें देरी दे जसोदां मोहि,
 मो पै हठि मागैं धंसी और कहँ डारी है ।
 'सेख' कहँ तुम सिंगवो न कछु राम याहि,
 भागी गरिहाइनु की सोखे लेनु मागी है ।
 संग लाड मैया नेकु न्यारो न कन्हैया कीजे,
 यलन^५ बलैया लैकै मैया यलिहागी है ॥ ७ ॥

१—यलन = यत्नदेवती । २—बार = बरतन । ३—बार = वारी ।
 ४—घकुटनि = चुंगन । ५—यलन = यत्नदेवती ।



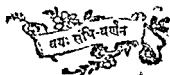
— आलम-कलि —

मन को सुहेली^१ सब करतीं सुहागिनि सु—
 अंक की अँकोर^२ दै कै हिये हरि लायों है ।
 कान्ह मुख चूमि चूमि सुख के समूह लै लौ,
 काहू करि पातन पतोखी^३ दूध प्यायों है ।
 आलम अखिल लोक लोकनि को अँसों^४ ईस,
 सुनो कै ब्रह्मांड सोई गोकुल में आयो है ।
 ब्रह्म त्रिपुरारि पचि हारि रहे ध्यान धरि,
 ब्रज की अहीरिनि खिलौना करि पायो है ॥ ८ ॥

चारोदस भौन जाके रवा एक रेनु कोलौ,
 सोई आंगु रेनु लावे नन्द के अवास की ।
 घट घट शब्द अनहद जाको पूरि रह्यो,
 तेई तुतराइ बानी तोतरे प्रकाश की ।
 'आलम' सुकषि जाके आस तिहुं लोक प्रसै,
 तिन जिय आस मानी जंसुदा के आस की ।
 इन के चरित चेति निगम फहत नेति,
 जानी न परत फछू गति अधिनास की ॥ ९ ॥

अभिधान

१—सुहेली = सुख गदक लीला । २—अँकोर = अँकवार ।
 ३—पतोखी = रनों की पती छोड़ी दोनिया । ४—अँसों = शक्तिमान ।



वयःसंधि-वर्णन ।

कंज^१ की सी कोर नैना औरनि अरुन भई,
 कीधौं चँपो सीव^२ चपलाई ठहराति है ।
 भौदन चढ़ति डीठि नीचे को डरनि लागी,
 डीठि परे पीठि दै सकुचि मुसकाति है ।
 सजनी की सीख कछु सुनी अनसुनी करे,
 साजन की यातें सुनि लाजन समाति है ।
 रूप की उमँग तरुनाई को उठाव नयो,
 छाती उठि आई लरिकाई उठी जात है ॥१०॥

जुटि आई भौहें मुरि, चढ़ी हैं उचौहें, नैना
 मैन मद माते पलकन चपलाई है ।
 फटि गई छुँटि पै लिमटि आई छाती ठौर,
 डौर^३ तें सँवारी देह और कछु भई है ।
 आलम उमँगि रूप सोना सरवर भयो,
 पानिप तें काई लरिकाई मिटि गई है ।
 झलक सी भई पियरस पियरई किधौं,
 कछु तरुनई अरु नई अरुनई है ॥११॥

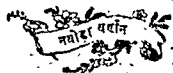
१-कंज की.....अरुन भई = नेत्रों के कोनों में कुछ कुछ कमलदल की
 कोरों की सी खालिमा या चली है । २-चँपो सीव.....ठहराति है = पंच
 लवा की सीमा सी पाँव ही गई है । ३-डौर = टंग ।

काँधे ही कंधेलो अलवेलोपनो खेलो चादे,
 पाछे ही 'विसारे' खेलें भाई देखै रूप की ।
 सावकी कुरंगी की सी संध्या कां मयंकु जैसे,
 लाँक विनु डोले औ निसक सीत धूप की ।
 आलम भुक्ति थोरी हँसे ते हँसति पुनि;
 हरत हरी को मनु आनन अनूप की ।
 चंदन चखौंड़ा^१ भाल गोरे अंग आंगीलाल;
 पूछे ते पिछौंड़ी जाति मींड़ी अँड़ी रूप की ॥१२॥

नवोदा वर्णन

फोनी चाहौ चाहिली^२ नवोदा एकै बार तुम,
 एक बार जाय तिहि छलु डग दीजिये ।
 'सेस' कहौ आवन सुहेली सेज आवै लाल,
 सीखत सिखैगी मेरी सीख सुनि लीजिये ।
 आवन को नाम सुनि सावन किये है नैना,
 आवन कहै सुकैसे आइ^३ जाइ छीजिये ।
 परवस बसि करिवे को मेरो बसु नाहि,
 देसी बस कहौ कान्ह कैसे बस कीजिये ॥१३॥

१-विसारे = विषय; सपर (बाज) । २-भुक्ति = शोभती है ।
 ३-चखौंड़ा = तिरक । ४-चाहिली = चाद करनेवाली । ५-आइ = आयु ।

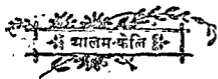


जोति सां हिये में जागी मैं तो जानी जैसी लागी,
 सोच तें हिये में लाल ! लागी नारि? है नई ।
 रसहि न जानै कहे विरह न मानै ताको,
 लैही छवि छाये कलु मूरि मोहनी मई ।
 'आलम' रसाल नन्दलाल सुनि जानि-मनि^१
 मोंहि ऐसी कठिन सुबुद्धे दिसि की भई ।
 तुम रिक्कार प्रेम-पीर पियराने कहुँ,
 अंकम की संक सुनि प्रियां पीरी है गई ॥१४॥

कोकिल किलक घानी सुनि सुनि शानि मानी,
 यही जानि तोपै सीखि सुरहि सुधाख्यो है ।
 तन हूँ की घानी ताकि चंपाऊ उजार गयो,
 यहै चेति चित हूँ ते भौरनि उताख्यो है ।
 'आलम' कहे हो पूरो पुन्य को सुहायो फोस,
 मुख की निकई हेरि हिमकर हाख्यो है ।
 रूप रयो भयो नाही रोकि गयो मन माहीं,
 तो पर है मार आपा बारि फेरि डाख्यो है ॥१५॥

पौन के परस बुद्ध-घंटिका के डोलें डोलै,
 हार हूँ न हिये धरै खरी कटि खीना है ।
 घेनी की लटक जिनि प्रीया को लरक जाय,
 लुटो अलकनि छवि काकी लुटि लीनी है ।

१—हिये ... नई = गर्दन झुककर हृदयसे जग गई है । २—नारि =
 गर्दन । ३—जानिमनि = ज्ञानी शिरोमणि । ४—बानी = (घर) रंग ।
 (नोट) 'नायघो' मे भी इस शब्द को इसी अर्थ में प्रिया है ।



'आलम' कहै हो तनु कनकमै तायो तामैं,
 पेन मैन जोति रस हीरा ओप दीनी है ।
 और है सिंगार भार तुहीं आपनो सिंगार,
 विधि है सुनार तू जराउ जैसी कीनी है ॥१६॥

चितवत औरै लागै धोले औरै जोति जागै,
 हँसे कळू औरै रुसँ औरै निकाई है ।
 अङ्ग अङ्ग मोहनी मोहन मन मोहिवे, काँ,
 एन-नैनो^१ मानो मैन मोहनी बनाई है ।
 'आलम' कहै हो रूप आगरो^२ समातु नाहीं,
 छवि-छलकति इहाँ कौन की समाई है ।
 मूपन को भार है-किसोरी धैल गोरी बाल,
 तेरे तनः प्यारी फोटि भूपन गुराई है ॥१७॥

पेसे रूप देस की लुनाई लुटि लई है-सु,
 नई नई छवि अङ्ग अङ्ग उमगति है ।
 जाई की सी माल सु लजाइ रही काहे तँ सु,
 जाइ जाइ हरिजू के हिये में खँगति^३ है ।
 'आलम' कहै हो षंडे वार हैं सेघार मये,
 तेरी तरनाई सु-जराइ सी जगति है ।
 मोतिन को द्वार हिये हाँस ते पहीरै नहीं,
 पोत^४ ही के छुरा अपछुरा सी लगति है ॥१८॥

१-एननैनो = छगनैनो । २-आगरो = बहुत अधिक । ३-खँगति है = चुमती है, चोट करती है । ४-पोत-द्वारा = काँच की छोटी गुरियों को कटो।



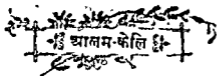
प्रौढ़ वर्णन

सौरभ संफेलि मेलि फेलि ही की बेलि फीन्ही,
 सोभा की सहेली सु अकेली करतार की ।
 जित ढरकें हो कान्ह तितहो ढरकि जाय,
 साँचे ही सुढ़ारी सब अंगनि सुढार की ।
 तपनि हरति कवि आलम परस सोरो,
 अति ही रसिक, रीति जानै रस-चार की ।
 सखि हूँ को रसु सानि सोने को सरूप लै कै,
 अति ही सरस सो सँवारी घनसार^१ की ॥१६॥

पातरी अँगोठी^२ अँगो अँग हूँ सों लागी रहै,
 भलकतु अंग भोनी भलक दुकूल की ।
 'आलम' सुधारे कच फारे सटकारे भारे,
 डारे आछे पाछे प्यारी स्याम सुखमूल की ।
 काम के संजोग धाम दृच्छ कटाछन काने,
 आछो छवि सैनिक सँवारी युद्ध मूल की ।
 कब हूँ कै फोर नैन औरनि लों आवैं चले,
 कब हूँ कै धावैं हुति आभा सुतिफूल^३ की ॥२०॥

गोरे आंक धोरे लांक धोरी घैस भोरी मति,
 घरी घरी और छवि अङ्ग अङ्ग में जनै ।

१—घनसार = कपूर । २—अँगोठी = (अंग + इट) अंग के लिये जितनी धारिये, ठीक उमान की, पुस्त । ३—सुतिफूल = (अतिफूल) कर्णपूज ।



कहि कवि आत्म छलक नैन मन मई,
 मोहनो सुनत वैन मन मोहनै ठगै ।
 तेरोई मुखारविन्द निंदै अरविन्दै प्यारी,
 उपमा को कहै ऐसी कौन जिय मैं खगै ।
 सपि गई चन्द्रिकाऊ छपि गई छवि देखि,
 भोर को सो चाँद भयो पौकी चाँदनी लगै ॥२१॥

हीरा से दसन मुख घीरा दासा कीर चारु,
 सोने से शरीर रवि चीर चली धाम को ।
 खलित कपोल हग डोलै कवि आत्म सु,
 बोली मृदु बोली के रिभाये लाल स्याम को ।
 पेशरि विचित्र नीको पेशरि को टोको सोई,
 ते सरि न पावै भूलै केसी सची धाम को ।
 बेनी गूयें फूल तर गरे मखतूल छुटा,
 फूल की कमान देखि भूल परी काम को ॥२२॥

अभिसार

साधन की सांभ की साहायनीयै ठौर तहां,
 जूही जाही बेलि घोरि फूलि वन छाई है ।
 आत्म पंथन पुरघंया को परस गाले,
 सीरी आयै रसिक सरस सरसाई है ।



आली चलि धूनरि पहिरि हरियारी भूमि,
तेरे चमकत चपलाऊ चपि जाइहै ।
औरनि के भाये बनि और आइहै सुपुनि,
हौं तो आइहौं न यह बेरी पनि आइहै ॥२३॥

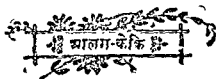
जागन हे जोन्ह सोरी लागन दे रात जैसे,
जान सारी सेत में संघात की न जानिहै ।
अथये की ओर परी साथ लीजै मो सी नागि,
आतुरी न होइ, यह आतुरी की खानिहै ।
घूँघट ते 'सेख' मुख जोति न घटेगी छिनु,
भाँनो पट न्यारिये भूलक पहचानिहै ।
तू तो जानै छानी पै न छानी या रहैगी घोर,
छानी छवि नेनन की काको लोह छानिहै ॥२४॥

मानिनी

समुद्र को पार है सुभूमि ह को चार है पै,
प्रीति को न पार चार कौन विधि कीजिये ।
'सेख' कहै देखे अनदेख्योई करत कैहू,
अंक भरि भेटे ह वियोग रस भीजिये ।

१—छानोन्नीकी हुई । २—छानी-छन छन कर निकली हुई ।

३—छानिहै=पियेगी । ४—चार=घोर, अंत ।



मेरे कहे घारी^१ तू निहारी जो विहारी तन,
 हेरे ज्यो^२ हठतु^३ हेतु एतो कत छोजिये ।
 जाकी वास वेधे मन फूल देख्यो चाहै जनु ।
 हेरे ते कुतुम जानि कहैं कर लीजिये ॥२५॥

घनिता री यनि घनवारी चोली घन घन,
 श्वनन करि येनु याजै यनी घानी सौ ।
 माननीन मुचै मानु एते मान को है मानो,
 मेरी न मनाई माने मोहन की मानो सौ ।
 आलम सुरति मुख कहा जानै का सौ कहैं,
 कहे रैन घीति जैहै एक ही कहानी सौ ।
 पान सौअ पान जोरि प्रानपति प्यारे संग,
 ऐसे मिलि प्यारी जैसे पानी मिले पानी सौ ॥२६॥

भौहनि चढ़ाइ फे रिसाइ नैन नाइ रही,
 सांस हूं न चलै जड़ जहपि कियो है तनु ।
 कहै कवि आलम यंचन ऐधि खैचि मनु,
 कहा भयो जो पै हठु कीनो है राँक को धनु ।
 घाही को बरजि डोलै बेसरि को मोती प्यारी,
 जेहि लागि डोल्यो डोल्यो फिरत लाल को मनु ।
 छाकी मलकनि अधरनि पर छाई मारि,
 कएँ है यखारि तू तो रुखे हूँसति जनु ॥२७॥

१—घारी = बहिदारी जाई। २—ज्यो = (नीच) मन। ३—हठतु = हठ करसा है।



चंद-कर . पूरन . परे जु कुमुदिनि . पर,
 वे हू कोने हाइ भाइ मानिनी सुभाइ कै ।
 डोलें दल दिगसि प्रकास्यो पौन मंद जाइ,
 कुसुम डोलाइ छाई जपा जूही जाइ कै ।
 आलम सुगंध बन केतकी कपूर सन,
 लायो लाइ कालिन्दी के बन सुख चाइ कै ।
 आली तजि मौन करि गौन हित-भौन चलि,
 केल करि केल-कुंज' केलि के उपाइ कै ॥२८॥

काहे को खुभी उतारो बहुगो तरौना धारौ,
 कोटिक तरौना खुभी छवि पर धारिये ।
 चन्दन को वैदा सोई उड़ विधु रवि को है,
 अंजन हूँ सेत लागे ऐसा आँखि कारिये ।
 तेरे आँग की निकाई कहाँ लौं कहोंगी भाई,
 रति हूँ पंचति अजौं ध्यान हूँ न धारिये ।
 पत्तोई विलम्बु भारी करो जिनि और प्यारी,
 आलम अकेली कुंज एकले विदारिये ॥२९॥

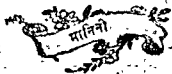
पिय को कहनि हां हां आतुर है पाई गई ।
 ताको यह मानवती आनिषो उपाउ है ।
 वू चलि हौं आई तौ लौं बात ही चलाई जाय,
 चतुर संखीन; नेक देखिये को चाउ है ।



कहे फयि आलम मुके हँ रीभि छीभि जव,
 मानु छाड़ि बालि तव बोलिये को दाउ है ।
 नाहिं क्रिये नाहिं बलि नाहिंनै मनाई जाति,
 जेतो नाहिं तेतो रचि तिय को सुभाउ है ॥३०॥

आई सीरी साँझ भीर गैयाँ दौरि आई घर,
 वन घन पुर घोच पूरि धूरि धाई है ।
 आलम चहुँधा चढ़ि रूपनि चिरैयाँ बोलौ,
 भूपन वने हँ बलि बेरी वनि आई है ।
 आली लौ लौ बलि जौ लौ लाली में लपेटो ससि,
 रबि को न छवि छिन जौन्ह ना जनाई है ।
 ब्राह्म हँ के छल मिलि हौंही भई तेरी छाँह,
 जौ लौ परछाँही परछाँही यानि छाई है ॥३१॥

छलिये को आई ही सु हौंही छलि गई मनु,
 छोकती न छनु करि पठई विहारी हौं ।
 तू तौ चल है पै आली हौंहीये अचल सी हौं,
 सादी रूप-रेख देखि रीभि भीजि हारी हौं ।
 'सेख' भनि लाल-मनि वेंदी की विदा है ऐसे,
 गोरे गोरे भाल पर चारि फेरि डारी हौं ।
 बैरिनि न होहु नेकु बेसरि सुधारि धरौ,
 हौं तो बलि बेसरि के 'वेह' बेधि मारी हौं ॥३२॥



फूली-सुजुन्दाई कुसुमाकर^१ की रैन की श्री,
 फूल्यो बन घन रसवीधिन विहरि लै ।
 आलम सुभग ये सुभायनु की सोभा तन,
 आभा मिलि कोटि कोटि आभरनु करिलै ।
 मंजन के आवि ते घै न्यारे हैं सिंगार हार,
 अंजन की रेख हग खंजनु-में धरिलै ।
 चन्द्रमा-लिलाटी तैंडव पती कहा ठाढ़ी वेगि,
 पाटी पारि प्यारी कबनाटी चीर करि लै ॥३३॥

सेत सुख बिधु जोति अंजन जूहर सजि,
 यक^२ धनु अरुन सुमति सँग लाए हैं ।
 पेम सुरा सुधे धेनु सुन्दरः समान रंभा,
 'आलम' चपल ह्यु काम के सधाए हैं ।
 प्रीति मधु^३ पूतरी कल्प लच्छी पूरन,
 धनंतरि सुदिष्टि गजु गति पलटाए हैं ।
 काहें को समुद्र मधि देवतान थम फीनो,
 चौदह रतन तिय नैननि में पाए हैं ॥३४॥

जानति हैं नीके रति रतन अनन जेती,
 याजे रतिरनि हूं के तेजहि तजै है री ।
 अघेरो कै आई है सवेरो बन नेरो यह,
 मेरो बहो किये कहौ तेरो कहा जैहै री ।

१-कुसुमाकर = शरंत । २-यक = तिरछे कटाक । ३-मधु = अमृत ।
 *नेवमें चौदह रस लिखलाये गये हैं । यह कपाल इमी कविने दिखलाया है ।



३ आलम-कलि ३

बिदा फरि मौहि दै तूं वादि हीं वदावे वैठी,
 फान्ह को वदन देखि वेदनि यद्वै है री ।
 'आलम' बिलंबिये ना चलि आंली लालन पै,
 लाख ललना की दुति लखे ही लजैहै री ॥३५॥

छल छाँड़ि छिन छिया छयीली छवीले घोळि,
 छोड़िहै न हा हा क्रिये मेरे पायँ छून री ।
 आन तीय तिनके री तन तन ताकतिये,
 तिन तन तनकहीं तिन तोरि तू न री ।
 फाँड़े आछे स्वच्छ फान्ह फालिंदी के फच्छु फधि,
 'आलम' फछू उछाह गावे तेरे गून री ।
 सुनि प्यारी सोच न सकोच ऐसे लोवनन,
 चलि चित चाइ चाहि रचि चीर चूनरी ॥३६॥

चोली चारु चीर कै चरन धरिये को भई,
 चाहै पति रचि कै तू रचो मुखचारि की ।
 नोर भरे फाहे नये नोरज-नयनि नारि,
 आन फान्ह नेरे हुनी न्यारी सोळ नारि की ।
 तेरेई महनु हेतु ताते हीं कहति तो सौं,
 'आलम' फहै सुआंली अति मनुहारि की ।
 मूरख न होहि री न मुख मोरि मेरी लिख,
 प्रान की गुरति सुनि मुरली मुरारि की ॥३७॥

हीन भई रजनी रतिक रिनुराज की, न
 हीन भयो मातु, जाते लालच न डंकी री ।



प्राचियो रची पै तू न रची मेरे, बचननु,
 अलिः माता घोली पै तू घोलह न घोली री ।
 हुम बेती हली तू न हली अली चलिवे काँ,
 चकई मिली पै तू न हियो खोलि घोली री ।
 उये रवि कौन काज उठन रुठन तेरो,
 'आलम' न बंचि काल सुरंति कलोलो री ॥३॥

तू तौ मेरी प्रानप्यारी प्रान की कहत तोसों,
 ऐसे प्यारे प्राननाथ पर प्रान धारिये ।
 सँवारो सँवारे सैन सिनि रो सँवारे हँ सों,
 ऐसी सैत सौरि क्यौ न आपको सँवारिये ।
 'आलम' पियूपनिधि अधर अधर जोरि,
 संरस अमिय जाहि पूजै न पधारिये ।
 अनेग नारीनु तंजी नागरा सुनग नारि,
 तासों रो न गहि मानु होहि न गँवारिये ॥३॥
 अरी अनघोली तू तौ घोलेह न घोले पुनि,
 अनेग धिली के व्यापे अनघोली जाहिगी ।
 करि कह्यो गौन करि हठ हू न करिये सो,
 फरसों डब कर जोरि करि कर लाहिगी ।
 'आलम' समुक्ति होहि सामुहीं समीप सम,
 ऐसो स्याम तजि स्यामा काहे मैं समाहिगी ।

१-सौरि = स्मरण करके । २-अनेग = अनेक, बहुतसी । ३-सुनग = सुन्दर रत्नवत ।

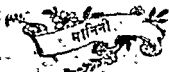
पूछे तें पिछौरी तानि पाछे दे रही है मोहि,
पिय रस दुर्कें प्यारी पाछे पछताहिगी ॥४०॥

नेक निसि नासिहै तो नारि न सकैगी सहि,
मनसिज सोस संक मेरे संग नासु री ।
ऐसी हुसयानी ऐसे समै कैसे स्याम जूसों,
सारस सी अखियनि ऐसे भरै आँसु री ।
किसलै कुसुम सैन 'आलम' संचित सुख,
सविता-सुता^१ समीप सरस निवासु री ।
विसरैगो रोस रिस सय ही रसिक संग,
। सुर सौं या वन में सुनैगी नेकु वाँसुरी ॥४१॥

मानिती अनमनी है, मौनो को सो मौन गहो,
मानो कहूँ मन गयो तेरे मन मांह सों ।
रारि सों मुरारि बैठे हारो मनुहारि कै तू,
नारि यों निवारि आरि^२ जोरि बांह बांह सों ।
'आलम' अकेली तू मैं आजु कछु और देखी,
औरै सुनी औरै चालि औरनि की छांह^३ सों ।
छपाकर छपे छिनु छीन भई छपा^४ छीया^५,
छाँड़ि दे छपीली अथ नाही कीयो नाह सों ॥४२॥

१—सोम = शोच । २—सवितासुता = यमुना । ३—आरि = हठ ।

४—छपा = कपटप्रय शिवा । ५—छपा = रात्रि । ६—छीया =



याती न कहत; मुनि घात सूधे गात यौरी,
 'पेम-उत्तगात' कहु औरं यात घड़ी है ।
 प्यारो भियराइ पल विकल परै न फल,
 पलक-पलक पुनि प्यारी जोभ रदी है ।
 'आलम' उदास^२ यस रहत उसास लै लै,
 कहु पढ़ि डाखो कही कौन मन्त्र पढ़ी है ।
 तेरी चितवनि भयो चकित अचेत मारि,
 चेटक-सो जाग्यो कहु तूही चित चढ़ी है ॥४३॥

उनकी विकलताई देखि अकुलाई हौंही,
 लागै घड़ी वार समाचार कैसे कै कहीं ।
 तपत उसास आवै धारि न ब्यारि भावै,
 हौंही न ब्यारि भई सीरी सीरी है यहाँ ।
 'आलम' निपट अकुलाये हैं री लाल तुव,
 रस यस भये अथ प्रायँ कर सों गहों ।
 तजिये बिलम्ब यामें उनको अकाज होय
 चलिये कृपालु है कै न्यारे कैसे हों सहों ॥४४॥

कहँ भूल्यो वेनु कहँ धाद गई धेनु कहँ,
 आये चित चैनु कहँ मोरपंख परे हैं ।
 मन को हरन को है अदुरा^३ हरन को है,
 छाँद ही छुवत छवि छिन है कै छरे हैं ।

१—पेम-उत्तगात = प्रेम-कलह, पण्यमान । २—उदास = शोक ।

३—अदुरा = अन्तरा ।

'सेख' कहै प्यारी तू जौ जयहीं ते चन गई, निभा
 तव ही ते कान्ह अमुवनि सर करे हैं ।
 याते जानियति है जू घेऊ नदी नारे नीर, निभा
 कान्ह धर विकल वियोग रोय भरें हैं ॥४४॥

तेरी गति देखैं गति मति मेरी भूली और,
 तैसेई गिया के रोम रोम कलमले हैं ।
 'शालम' अहे तो पापी दुहुँ दिसि पै नोई या,
 पेम-परसंग के कहुँ ना डंग भले हैं ।
 वा घरी तैं वैसे ही उहाँही उही और दीडि,
 पीठि पलटे तैं मानो कान्ह काह छले हैं ।
 चूर है कै चेत्यो कहुँ वाँकी सूधी चालि आली,
 तू तो चलि आई वाँके नैनाऊन चले हैं ॥४५॥

दोहनें के भिस तिहि गोहनु^१ लगाइ चलो,
 दोहनी भुलानी मन मोहनी मयी भयो ।
 'शालम' कहै हो गुन^२ गेहऊ विसाखो उन,
 देहऊ सँभाखो नहीं नेहु पेसो है नयो ।
 सिथिल सिवार सेवै छूटे हुते वाग तू छू,
 लगोही किवार भाकि हरि हरि सो लयो ।
 अधर मुखात वूमो आधियो न आवै वांत,
 अधो मुख देखि मन आधोआध^३ है गयो ॥४६॥

१-तिहि गोहन लगाइ चला = इसके निकट गई । २-गुन = हालत,
 दशा । ३-आधो आध = दो टुकड़े, धारत ।



साधे राज हंस ते तो हींसनि हँसाइ गयो,
 । ये रीतेरी गति देखि फिरो गुन करी^१ को ।
 लांक की लचक लसे लहँगा की ढिग^२ दुरै^३,
 । चूरी ही में चाहि चूर भयो वाही घरी को ।
 'आलम' अजहु आदि रस यस पयो जौ लौं,
 जग्यो नहीं जोग चा वियोग-विस-वरी को ।
 रूप गुन आगरी तू नागरी तें आगे^४ है कै,
 तें जु डग भरी डगमग्यो मन हरी को ॥४८॥

जोगी कैसे फेरनि वियोगी आवै यार यार,
 जोगी है है तौ लभि वियोगी विललातु है ।
 जा छिन ते निरखि किसोरी हरि लियो हेरि,
 । ता छिन ते खरोई धरोई पियरातु है ।
 'सेख' प्यारे अति हीं बिहाल होइ हाय हाय,
 पल पल अंग की मरोर मुरछातु है ।
 आन चाल^५ होति तिहि तन प्यारी चलि चादि^६,
 । बिरही जरनि ते बिरह जखो जातु है ॥४९॥

नीर साँरचै न रसकन को दुरै न ऐसे,
 पेम परतछ ज्यो पुरै न को सो पातु है ।
 नेक डीठि जोरतही चोरी भई चातुरी की,
 । गौरी गुन आगरी गरतु याही गातु है ।

१-करी = (करि) हाथी । २-ढिग = गोठ, संजाक । ३-दुरै = आसक्त होगया । ४-आगे हवै कै = वद कर । ५-चाल = दशा । ६-आदि = देख ले ।

तेरे अरु पी के निजु ही के समाचार हैंरी,
 का की कहीं तोसों, हरि ज्यों ज्यों थिलेलातु है ।
 तनक मैं वेग ऐसे मद हू को नहीं मारि,
 जैसे वेग नैननि मैं नेहु आरि जातु है ॥५०॥

संकेतस्थल वर्णन

सोखन सिखाय जाय धीरजु यँधारि लाय,
 यतरस लाय कहीं नेह की जु याग है ।
 'शालम' सुकवि कहुं सोच ही मैं लोच्यो मन,
 फान्ह के घचन सुनि फानन हितात है ।
 जेतक नपोदा हियो पोदा के के वियतन,
 देखै दुरि दुरि नैना लागे याही घात है ।
 घले दोडि फोर फिरै घुघट के छोर है के,
 लाजन के मारे तारे नीचे भये जात है ॥५१॥

भारं भारं है रही तो आरि सग्री धार मय,
 उन्हें वेनि आरि जान्यों भूटे ही रहति है ।
 सुनि सुनि पाय धारे 'सेध' प्यारी सनमुख,
 ताकि मुख मोहनी सुमम ही गदति है ।



अंक भरि लोन्ही परजंका परःपौढ़ि तय,
 सपनो समुक्ति वारि अखियाँ भरति है ।
 विरही ही भारी सुधि अजों न सँभारी अय,
 तुम जानो प्यारी हम न्यारी है रहति है ॥

प्यारी पिय दोऊ पहिली ही पहिचानि भये,
 मान जनु पाये ज्यों ज्यों राति नियराति है ।

'आलम' सकुचि लग-लोगनि की लागी रहै,
 दुरि दुरि देखें डीठि कैसे कै अघाति है ।

लाज ही की ठौर तिहि ठौर है सचेत इत,
 कोर हूँ सौँ जोरि नैन सखी मुसकाति है ।

पाँधति दृगंचलनि बीच मनु मानो चलि,
 चिकने से नेह गाँठि छूटि छूटि जाति है ॥५३॥

सरद उज्यारी निसि सीतल समीर धीर,
 सोवत पियारी पिय पाये सुख सैन के ।

'आलम' सुकचि आगे जागै वै रसाल लाल,
 बालहि जगवै लगे लोभ बाल-बैन के ।

चिलक सरौर रोमराजी राजै पिय पानि,
 पल्लव उठे हैं जैसे चंदन में चैन के ।

सकुची पनच उतरै तैं चाँच चारु सोहै,
 धरे वे विचित्र मानौ पाँचों वान मैन के ॥५४॥

१-लग-लोगनि = निकटस्थजन । २-सकुची पनच = तिकुड़ी हुई पर्यंचा ।



श्यालम-केलि ६६-

घंघट जवनिका में कारे-कारे केसः निसि,
 खुटिला जेराउ जरे डोवटि उजारी है।
 उघट्टी किलक कटि किंकिनी-नूपर, दाजें,
 नैना नटा नायक लकुट लटः धारी है।
 कहै कवि 'श्यालम' सुरति विपरीति समै,
 थंमजल थंजुली पुहुप-सरि डोरी है।
 अधर सुरंगभूमि नृपति थंनंग-थामे,
 नृत्य करे बेसर को मोती नृत्यकारी है ॥ ५५ ॥

नैसीये तरल तमधार, सीतिलमाल बेलि,
 रही हिलि मिलि अलि डोरनि के जोर सों।
 कह्ये ललित रन्ध तारे से उज्यारे न्यारे,
 कह्ये रहै एक है कलिन्दी छवि छोर सों।
 कहै कवि 'श्यालम' किलक हांसी और ध्वनि,
 सुनिये न आन वानी निजु मन्द सोर सों।
 कामिनी विलासी कारे कुंजनि में कारे कान्ह,
 जामिनि कहत जाम घोस भयो भोर सों ॥ ५६ ॥



नायक की इती

काम रस माते है, करेरी फेलि कीन्ही कान्ह;
 फूलनि की मालिका हू; मींड़ि मुरभाई है।
 'आलम' सुकवि यहि और सी न जानो बलि;
 ऐसी नारि सुकुमारि कहौ कौने पाई है।
 कमल को प्रांत लै लै हाथ नयाको गात छूजे;
 हाथ लाये; मैली हीय गांत की निकाई है।
 अंचर दै, मुख सनमुख तासौ घात कीजे,

ना तखो उसाँस लागै मुकुर की हाई, है ॥५७॥

हौ तो ल्याई कालि प्यारे क्रोटिक जतनु करि,
 तुम ऐसे रोस हौ; रुसाई सुकहा जु की।
 'आलम' बिलोकि मींहि मुख मोख्यौ तौ में आई;
 मैं हू मन में कहौ सुबोतौ रैनि अंजु की।
 अलप वयसो अलवेलीयै खरोयै घाल,
 नवेली न लीजै यौ खिभाई वसिता जु की।
 कर परसत कुंभिलात कलेवर वाको,

वाही तौ है पही लाल फूल की सी नाजुकी ॥५८॥

१—मुकुर की हाई है = आँसु की तरह उसका मुख मलीन हो जायगा।

२—तौ में आई = तब में आकर, कुछ हाकर। ३—वसिता = वश्यता।

४—नाजुकी = सुकुमारता।



आलम-कलि है

जवहीं तू देखी ग्यारि वारि-चांसुरी विसारि,
 तनु मनु मोहि भयो महा दुखदाई है।
 कछु न सोहाय्य पै उसांसनि विहाय दिन,
 वाही की सुगति बित हित सौ हितदाई है।
 'आलम' कहै हो पर पीर की हरनहारि,
 चितु की कहानी सुसुकानि हो मैं भाई है।
 तेरे तो बचन मेरे प्रान के आधार हैं री,
 हा हा कहि कैसे कैसे समाचार ल्याई है ॥ ५९ ॥

कान काँकी कौरि^१ लागि गोरी गोरी जैसी आगि,
 तवहीं तें आँखिन में आगि सी बरति है।
 आजै नैन खाये पान होरा जरी वीरि^२ कान,
 दसन की जोति छवि हीरा की हरति है।
 ज्यो गई लगाइ नेहु बँडो है भुलाय गेहु,
 पँठी भौंही देखि देह पँठियै परति है।
 मनु खोय पैनी भई पांजरनि बधि गई,
 काजर की रेख उरै जाजर^४ करति है ॥ ६० ॥

कुसुंभी पहिर दिये कुसुमा के हार गूँथे,
 केसरि कुसुम लखि लागै दग दूत री।
 अछराते^३ आछी आछे चच्छु छवि छोरनिनी,
 आछी आछी-काछी आँगी उरज अछूत री।

१- हितदाई है-अच्छी लगी है। २- कौरि लागि-द्वार के एक पासे से लग कर।
 ३- वीरि = वीर। ४- जाजर = छेददार (जमोरित)। ५- अछराते = अन्ततः।



आज ही मैं देखी कवि आलम अकेलीअवाल,
 चँद सो अधैगो अधै अरही ते उतरी ।
 चितवन हँसों प्यारी हित चित वसि करि ।
 चित में समाय रही चित्राकी सी पृथरी ॥६१॥

मुदित सरोज सम सुभग जो उरोज उर,
 चातुरी के चोज मैं मनोज बेलि बै गई ।

कमल से हाथ रंभ जंघा गौन हाथी को सो,
 हाथ ही हाथन सब रयान मूसि लै गई ।

अलबेली अलिम मदन महा मोहनी सी,
 मोतन लगाइ पीरों महा मोह दै गई ।

सिसुता की सानी बैस रूप की जुन्दाई जैसे,
 आधे ही निहार नैना आधे आध कौ गई ॥६२॥

तषहुँ पठार्ह हों मनाई जाय आई हुती,
 उनहीं कछो जनाय जानी ऐसो स्यान है ।

अय हौं जौ जाउँ लीनो नाउ दीनो चाउ नहीं,
 उतर न पायो फिरि आई ऐसे मान है ।

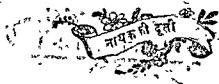
'आलम' सुकवि काहु कान लागि कीनी ऐसी,
 आउ बलि ऐहै मतो यहै मेरे जान है ।

अनमने होहु न अबोले कछु याते कान्द,
 आन भाँति कहीं मोहि रावरे को जान है ॥६३॥



आलम-केलि ६३

कहौने पसीठी बंध डीठी है करति आंगे, ना
 । निपाछे चंदि विरह चहुँवा वैठि कूकिहै ।
 नेकु मंगल जाते देखि ऐसे मुरझाई रहे, ना
 १३०० निघात सिनि गात तौ पतौथा है कै सुकिहै ।
 कौवरें हिया के तुम कठिन कटाछु कान्ह,
 पैठ जैहै पीठि है यहुँ जु दिग दूकिहै ।
 यहै डीठि मूठि सौ चढ़ैगो हियौ घेघि घेघि,
 यहै नैना धनुक न बंधै सर, चूकिहै ॥६४॥
 यहै अनहारि रोकि । आई हौं निहारि मुख,
 कलुकु सरद ससिगो कैसी अजुहारि है ।
 कौन धौं सँवार कीन्हौ सोभा को विचार चारु,
 विचार 'घार' सौधि मुख चारिगहूँ, विचारिहै ।
 बिन हूँ सिंगार कवि 'आलम' सिंगारो तन,
 गारि आंक थोरे लांक सादी सुधी वारि है ।
 कहिये को मैतका पैरतियो नारूप ऐसो,
 ऐसी कान्ह देखे बनै जैसी नोकी नारि है ॥६५॥
 अंग नई जोति लौ परंगना विचित्र एक,
 अंगन में अंगना अंगन की सी ठाढ़ी है ।
 उजरई की उज्यारी गोरे तन सेत सारी,
 १३११ मोतिन की जोति सौ जुन्हैया मानो पाढ़ी है ।



'आलम' सुआली वनमाली देखि चलि छुति,
 सुगढ़ कनक की सी रूप गुन गाढ़ी है ।
 देह की वनक बाकी चौर में चमक छाई,
 छीरनिधि मथि किधौ चांद चिरि काढ़ी है ॥६६॥

ऐसें कैसे कहीं ऐसी औरनीकी नारि ना पै,
 नीके कै निहारे अति नीकी करि जानिहौ ।

'आलम' सुकबि रहम कहा पहिचानै नाथ,
 परख तुम्हें हो सब बातनि की खानि हौ ।
 जामिनी में जात सब कुंज में उज्यारी होति,
 कामिनी कहोगे कहे कामिनी जमानिहौ ।
 सनमुखो हूए सौहें डीठि ठहराति नहीं,
 डीठि परे पीठि दए आजनि में जानिहौ ॥६७॥

अंग अंग जगै जोति जोह सो उज्यारी हाति,
 उजरी उज्यारी प्यारी मानो चंद जैसी है ।

'आलम' कहे हो मन मन लो बड़ेये यात,
 रूप की निकाई ताकी तहां लगि तैसी है ।
 और की पठाई हो तो आवति हो रावरे पै,
 वा दिन की कुंज कोऊ औरी नारि ऐसी है ।
 वही भूली औरी भूली सब सुधि बुधि वाहि,
 ही तो देखि रोकी तुम देख्यो कान्ह कैसी है ॥६८॥

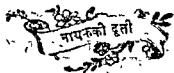
काम फेलि येलि सो अकेली कुंज आम धरी,
 यदन की आमा जनु फूलतु कमल है ।

कहि कवि 'आलम' जगभगत' श्रंग चाके,
 रवि के किरनि मिलि कदली फो दलु^१ है ।
 चाँद सो चमकि उठो दाभिनी सो चमकति,
 ब्रज की भाभिनी निधीं रंभा^२ कीनो छलु है ।
 रूप की निकाई देखि हीं तो आई धाई कान्ह,
 ऐसी लुचती के पाएँ जीतय^३ को फलु है ॥६९॥

सची को सरूप लैके सुन्दर सरोज आनि,
 सोभा सानि साँचे भटि ससि ह समेत की ।
 जोवन की जोति अङ्ग मैन की तरंग तैसी,
 सोने की सलाका जानु फौली फूलि केतकी ।
 कहे कवि 'आलम' करति नित चालि^४ आलि,
 कैसे जाति धरनी हरनि हरि चेत की ।
 सादे मोती कंठ सोहै पंच रङ्ग अङ्ग चारु,
 सुरँग तरौटा^५ सोहै सारी सार सेत की ॥७०॥

सारी सेत सोहै नख नूपुर की आभा सेत,
 चंद मुख धारे श्रंग चाँदनी सो बन्द की ।
 उरज उतंग मानो उमँगो अतंग आवै,
 कसि पैठी आँगी उर गाढ़ी जरीबन्द की ।

१—दलु = गाभा । २—रंभा = इसी भाग की अप्सरा । ३—जीतय =
 जीवन, निर्दगी । ४—चालि = चालवाजी । ५—तरौटा = त्रैतरौटा (अंतरपट)
 बारीक साड़ी से नीचे पहनने का कपड़ा ।



कहै कवि 'आलम' किसोरी वैस गोरी जगी,
 जग की, उज्यारी प्यारी प्यारे नन्द-नन्द की ।
 सुभर^१ नितंब जंघ रम्भा के से खम्भ चलि,
 मन्द मन्द आवै गति मद के गयन्द की ॥७१॥

आठो अंग^२ निपट सुठानि थानि ठानि ठई,
 गांठि से कठोर कुच जोवन की ठैठी^३ है ।
 गुन की गँभीर अति भारियै जघन जुग,
 थोरे ही दिजन गोरी रूप रंग जेठी है ।
 कहै कवि 'आलम' दिखाइ दुरिजाइ वारि,
 घरी घरी मारि मारि मनहि अमेठी है ।
 सखी सौ कहत धात जगमग मुसकाति,
 कौल के से पात नैन पातरी अंगेठी^४ है ॥७२॥

सीसफूल सीस घखो माल टोका लाल जख्यो,
 कलु सुक मंगल में भेदु न विचारिहौ ।
 देसरि की चूनी जोति खुटिला की इनी दुति,
 योरनि^५ के नगनि तरैया ताकि धारिहौ ।

१-सुभर = पूव भरे हुए, पान । २-आठो अंग । यथा-
 दो-पहिले जोवन, रूप, गुण, सील, प्रेम पहिचान ।
 कुल, वैभवं, भूषण, पहुरि आठो अंग बखान ॥

३-ठैठी = गांठ । ४-अंगेठी = (अंग + इठ) अत्यंत सुन्दर । ५-योर =
 कर्णभूषण (दोहरे) ।

ॐ आलम-केलि ॐ

‘सेख’ कहै स्याम विधु पुन्यों को सो देखि मुख,
 बुद्धि बिसरैगो बेगि मुधि न संभारिहो ।
 नभ के से नखत दुरैंगे नही न्यारे न्यारे,
 दीपक दुराय तब दीपति निहारिहो ॥ ७३ ॥

देह में बनक^१ सी है लांक^२ ह तनके सी है,
 नूपुर भनक सी ह महा छवि बंदी है ।
 चाल गति मन्द^३ सी है लागै सुख कन्द सी है,
 निरखे तें चन्द^४ सी है कोककला पदी है ।
 ‘आलम’ के प्रभु वाके पटतर^५ दीजै कौन;
 तेरे चित बली चडै वाके सम गदी है ।
 आँगन में पगु भरै सखी कंध बाँह धरै,
 कंचन के खंभ मानो चंपलता चढ़ी है ॥ ७४ ॥

चंद्र की मरीचि भरि साँचि दारी साँचि रस,
 कंचन जड़ित जनु रतन की पाँति है ।
 भूषण की आभा अंग सोभा के सुभाइ मिलि,
 चाहे चकचौंधे चितु रवि को सी काँति है ।
 ‘आलम’ मुकवि नेकु छौह के छुये तें कान्ह,
 काम के संताप ह की हाति सीरी साँति है ।

घोलति चलति चितधति मुसकाति अति,
 रूप की निकाई छवि औरै औरै भाँति है ॥ ७५ ॥

१—बनके = सुन्दर बनावट । २—लांक = कटि । ३—मन्द = शान ।
 (शनि की तरह बहुत मंद गति से चलती है) । ४—चन्द = चन्द्र । ५—पटतर = उपमा ।
 ५—चाहे = देखने से ।



मालती की माल सी विमल परिमल^१-मई,
 किसलय कुसुम सुपद्मिनी की जाति है ।
 सोंधे भीने छूटे थार भार तिहि अकुलाइ,
 डोले भर मोतिन की लर अरसाति है ।
 कहै कवि 'आलम' कुमारी वृषभान की सु,
 ऐसी सुकुमारि देखि छतिया सिराति है ।
 अलप धयहि केलि अलवेली अकुलाइ,
 कमल कलो ज्यौ परसे तै कुम्हिलाति है ॥७६॥

जुवती जहाँ लौ आई छवि उज्यारी छाई,
 कुंज है जगमगात जौन्हि कोऊ जानिहै ।
 मैं हू पहिचानी, उन आप पहिचान्यो नहीं,
 अजहँ मनोज हूँ सौ नहीं पहिचानि है ।
 कहै कवि 'आलम' न ऐसी कहूँ देखी सुनी,
 रीझि रीझि रहौ कान्ह देखें मनु मानिहै ।
 सुखही की रासि रसरसि ऊपरसि ऐसी,
 रोम रोम नख सिख पानिप की खानि है ॥७७॥

ससि है चकोरनि कौ भौरनि कौ कौल-माल;
 मृगनि कौ नादमई सुन्दरी सुजान है ।
 केलि कौ फलपतर सोभा ही कौ रतिपति,
 कामे को पियूप ऐन काम ही के दान^२ है ।



३ आलम-कलि ६-

'आलम' सुकवि पवि^१ रची है विरंचि ऐसो,
नेक हूँ न देखि लेहु कहा तुमै ज्ञान है ।
रति को सुभाउ ऐन मैनका के हाउ भाउ,
रम्भा कैसे रूप सय गुन की निधान है ॥७॥

यदन बिलोकि साध^२ सुधा की विबुध करै,
कुमुदिनि फूली जानि कुमुद को बन्धु^३ है ।
चम्पा,^४ सिंह, सारस, करिनि, कोकिला, कदलि,
योजू, विंघ, लीने सष ही को मन बन्धु है ।
'आलम' सुकवि ऐसो कामिनि विचित्र रवि,
और को जू रच्यो चाहै तू ती विधि अन्धु है ।
जैसोपे गुननि अति आगरी चतुर हरि,
तैसोई सरूप एक सोनो श्री सुगन्धु है ॥८६॥

कंचन को बेलि तन यानि^५ सो बढत दिन^६,
छिन छिन रूप जोति नैननि समाति है ।
भारी सो लगतु हियो ज्यों ही उर ऊँचो होतु,
डगनि भरित कटि टटिये डरानि है ।
'आलम' सुकवि हरि मोहति मोहनी है कै,
नेकु तिरछीहैं चाहि मुरि मुसुकाति है ।
यो जत चपल जकै मैनु थकै मैनु बकै,
सोभा की रसाल बाल बरनि न जाति है ॥८७॥

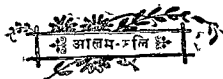
१-रवि = पडा उद्योग करके । २-साध = इच्छा । ३-कुमुदबन्धु = चम्पा । ४-चंरा विंघ = रूप हातिशयोक्ति अलंकार द्वारा इनका अर्थ समझो । ५-यानि = रंग । ६-दिन = प्रतिदिन ।

पहिरे कुसुंभी सारी सादी सेत आँगे आँग,
 छानी छवि चाहि फेरि छाह हीं चहति है ।
 चूड़ा पंइ फेरि करि बेसरि सुधारि धरि,
 कंकन करनि फिरि मन उमँगति है ।
 कहि कवि 'आनम' चनति फिरि ठाढ़ी होति,
 आलिनु के साथ अलवेल्यो हो करति है ।
 अलग लग्यो सो लाँकु घोले डग डोलै ऐसे,
 डगनि भरति जनु लगसो लफति है ॥८२॥

सुनि चित चाहै जाकी किकिनी की भनकार,
 करत कलासी सोई गति जु विदेह की ।
 'सेध' भनि आजु है सुफेरि नहि काल्ह जैसी,
 निकसी है राधे की निकई निधि नेह की ।
 फूल की सो आभा सध सोभा लै सकेलि धरी,
 फूलि ऐहै लाल भूलि जैहै सुधि नेह की ।
 कोटि कवि पचै^२ तऊ धरनि न पावै कवि^३,
 बेसरि उतारे छवि बेसरि के बेह^४ की ॥८३॥

अलवेली वैस बाल चंपेली की माल गल्ले,
 अलवेली प्रीति रिय रंगीली रंगमगै ।
 सोने की सो छरी छवि छाजति छयीली तिय,
 अंग अंग ठौर ठौर मिलमिली सी लगै ।

१-प्रगली = खंची नचतीली चोत की लौद । २-पचै = कोरिख
 करे । ३-कवि = कवन । ४-बेह = (वेप) छेद ।



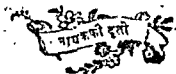
अलवेली डोलनि हँसनि पुनि अलवेली,
अलवेली डोलनि में जोति सी जगमगै ।
नैननि में भौहनि में अधर कपोलनि में,
ऐसो जाको जोवन-जराउ सो जगमगै ॥२३॥

हार हू को भार उर केहूँ ना सँभारै नारि,
अल्प अहार रस वास को अहार है ।
सीरें सियराइ तातें तातीसी है जाइ डोलै,
पौन के परस प्यारी पान की सी डार है ।
कहि कवि 'आलम' न रंभा हू न रति-हू में,
मैनका' घृताची ऐसी रूप को अपार है ।
बानक विचित्र अब चित्रिन न होइ ऐसी,
वित्र लिखि पूनरी जिआई करतार है ॥२४॥

विरही विलंबि खाँगे^२ विरह वियोग माँगै,
प्रेमहि प्रतीति है सुनेमहि निवाहि हौ ।
'आलम' सनेही ये जु देही के दहे हैं ते तौ,
जोगी जैसे मिले हैं वियोगी जानें ताहि हौ ।
कौंधनि सी भौंकि चकचौंधनि लगाई जिन,
फालिह तें फन्हाई तुम रोकि रहे जाहि हौ ।
पूयो ऐसी आनि घर पैठिहै घरी में यलि,
देहरी डुवार लगि दीपकु न चाहि हौ ॥२५॥

१—मैनका, घृताची = इन्द्रपुरी की अप्सरा विशेष ।

२—खाँगे = कम होता जाता है, शून्य होता है ।

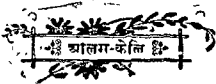


पानिप सौ मोती जैसे यद्गन धार पर,
 तैसै चपल नैन धिरकनि थोरी है ।
 यचन फँ आँगें भाइ भौहनि अगाउ जाइ,
 'सजनो समुझि रोझि आग भायें' भोरी है ।
 'आलम' कहे हो विधि उर ते उतारि आनि,
 पान की सो अनी सो उलटि कटि जोरी है ।
 मीनी आँगी झूलके उरोज को कसाउ फसे,
 जावक लंगायें पाउँ पाथक तें गोरी है ॥६॥

तरल^२ तुरंग नैना तरुनाई भरि आई,
 गोरे मुख सोहे अरुनाई अधरन की ।
 सरल सुदेस फेस तरल तरौना^३ दोऊ,
 चलत फलाई नीके ललित करन की ।
 अमर-मूरति कवि 'आलम' है मेरे जान,
 फोऊ अमरावती तें आई अमरनको^४ ।
 रमाऊ न भायें ऐसे रूप को आरंभ^५ देखि,
 सोभित सरीर मधि आभा आभरन की ॥ ७ ॥

रस भरी रूप भरी सुखद सुखाम भरी,
 सोभा के सुभाई भरी ऐन मैनका सी है ।
 दर्पन सी देह ऐसी नेह को नई नवल,
 यज में न देखी फोऊ सुरपुरयासी है ।

१-अप भायें भोरी है = अपनी समझ में भोली भाली है । २-तरल = चंचल । ३-तरौना = कर्णकुल । ४-अमरन की = देवकन्या । ५-आरंभ = प्रथमोत्थान, उठान ।


 आलम-केलि

'आलम' सुकवि लोनी सोने के सरोजहू, तें,
 फूल ही के भार^१ भरि-पान की लता सी है ।
 चंदन चढ़ाये चंद चाँदनी सी छाड़ रही,
 चन्द्रमा सी मुख छवि हाँसी चन्द्रिका सी है ॥२॥

ससि तें सरस मुख सारस से राजें नैन,
 जोन्ह तें उजारो रूप रवनि^२ रसान सी ।
 रति हू तें नीकी प्यारी प्यारे कान्ह जाके पाछे,
 बेनी की बनक डोलें मानो अलि आलसी ।
 सारी सेत सोहैं कवि 'आलम' विहारी संग,
 चलति बिसद गति आतुर उताल सी ।
 फूल ही के भार भरि सीस फूल फूलि रहे,
 फूली सांभ^३ फूली^४ आवै फूलन की माल सी ॥६॥

ब्रज की नागरी ब्रजनाथ अति प्रान प्यारी,
 चली रूप बनि बनि वासव की बाल^५ सी ।
 रसिक रवन तजि आरस सरस मति,
 रसना^६ की ध्वनि बोली रसना रसाल सी ।
 गोरे गात गहनो जराउ को जगमगत,
 ऐसी कवि 'आलम' है जोवन-सु-भा^{*} लसी ।
 दीपति नवीन नग पाँति पट भीने मानो,
 फंचन के खंभ में दिपति दीप माल सी ॥६॥

१-भार = बजन, शीत । २-रवनि = (रमणी) स्त्री । ३-फूली
 सांभ = संख्या समय । ४-फूली = अति हृषित । ५-वासव की बाल =
 पीरपट्टी । ६-रसना = किकिणी । * -सुभा = सुंदर छटा ।



मृग मद पोति भाँपी नीलंघरः तऊँ जोति,
 धूम उरभाई मानो होरी की सी भारी है ।
 लै चली हौँ अंधियारी अंग अंग छुबि न्यारी,
 आरसी में दीप की सी दीपति पसारी है ।
 ऊजरो सिंगार 'सेख' जोन्ह हूँ को साजु कीनो,
 जोन्ह हूँ में जोन्ह सो लस सुधा सुधारी है ।
 बार बार कहत हौँ प्यारी काँ छपाइ ल्याउ,
 कैसेँ कै छपाऊँ परछाहियो उज्यारी है ॥६१॥

थोरे भाइ रीक्ति राचे प्रेम प्रीति पुरी साँचे,
 ऐसे रिक्कार को गिराइ गई गैन ही ।
 प्रोढ़ा नहीं प्यारी सो नवोढ़ा अलधेली जानि,
 खेली एक संग ते सहेलियो कहै नहीं ।
 धारी खाहु 'सेख' भनि पीरे पीरे होहु जनि,
 विरहु को भेदी वाके भूलि हूँ भिदै नहीं ।
 बैन ही मैं कालि कछू मैत की सी मूरि डारी,
 मैत ही के रावरे सुनाउँ नाते मैं नहीं ॥६२॥

१—भारी = लौ, लपट । मिलाओ = "जाके तन की छाँह दिग जोग
 छाँह सी होत" । (विहारी) । २—गैन = (गमन) चाल । ३—भेदी =
 फाट में छेद करने का बर्ता । ४—चाप भी सोम (मैत) के बने हुए हैं-
 तममें तनक भी मैं (सुदारी) नहीं है ।

३ आलम-केलि द्वै

अँसियन लागी ढरौ तब लगि फेरी करी,
 तेरी मनु माने तब मेरी यहै काजु है ।
 सजनी बुलाई सब सौँज लेन धाई तब,
 सौँहँ करौ साजन समीप ही को साजु है ।
 कालि मुकि^१ घैठी आजु हँसि घर पैठी, मिटो
 मान मद, भयो चाके मदन को राजु है ।
 सीम्नी^२ वहै घात जाते रात पीरे, गात भये,
 सीम्नी नहीं कान्ह तुम्हें रीम्नी घह आजु है ॥६३॥

रस में विरस जानि कैसे, घसि कीजे आनि,
 हाहा करि मोसों अब, बोलि हौ तौ लरौंगी ।
 औरनि के आधे नाउँ आधी रैनि, दौरि जाउँ,
 राधा जू के संग पै न आधो, डग भरौंगी ।
 'सेख' होत न्यारे ऐसी पीर लाये प्यारे तुम,
 अयहीं हौ विरह, बखाने पीर हरौंगी ।
 आज हू न ऐहै कोऊ कालि चलि जैहै सौहँ,
 परौ^३ लगि हौ ही चाके पाय जाय पारौंगी ॥६४॥

निमुकनि रैनि मुकी घादर ऊ मुकि आये,
 देख्यौ कहौं भिक्षिनि की भ्राँर^४ भहनाति है ।
 पानी ते न पैडो^५ बूमै पानि पसखो न सूकै,
 फाजर सी आजु की अँध्यारी कारी राति है ।

१—मुकि घैठी = नाराज हो गई । २—सीम्नी = पूरी हुई । ३—परौ = पारौंगी ।

४—भ्राँर = भ्रनकार । ५—पैडो = मार्ग ।



प्यारी पै पठावत न मेरी पीर पावत हो, ...
 प्यारी तौ तिहारी पिय तुम हीं पत्याति है ।
 देह काँपै देखें द्वार गेह छाँड़ि पती बार
 'मिहरी' की जाति कोऊ दिहरी लौं जाति है ॥६५॥

जाकी यांत रात कही सो मैं जात आजु लही;
 मो तन तिरोछे हँसि हेरि सुख दियो है ।
 ऐसे देखी आन कोऊ सो न देखी आन^२ तुम;
 वाके देखे मानस मरु कै^३ कोऊ जियो है ।
 कै तो कहँ बीधो^४ उर बेधिवे को ठौर नहीं,
 'सेख' ऐसे रावरे कठोर मन कियो है ।
 पीरो नहीं प्रेम पीर सारो न सिधिल भयो,
 चीरो नहीं चितु या सु हीरो है कि हियो है ॥६६॥

मोती कैसी ढरनि ढरकि आवै नैना नेकु,
 तुमैं दौरो^५ लागी जानौ गौरी ढरि आई है ।
 'सेख' भनि ताकों हाय हाय करौं पाय परौं,
 आय वाय ऐसी जीय कैसे करि आई है ।
 नेहु नहीं नैननि सनेहु नहीं मन माहि,
 देह नहीं विकल रवियोग जरि आई है ।
 भूठे ही कहतु परबस मखो जातु हीं सु,
 पर बस नहीं परबस बरिआई है ॥६७॥

१—मिहरी = जो । २—आन = आनवान । ३—मरु, कै =
 मुशकिल से । ४—बीधो = अटका है । ५—दौरी = घानि, आदत ।



॥ आलम-केलि ॥

भोरी घैस राची जिनि भुरये हौ साँचो नहीं,
 काँची प्रीति जानौ, जहाँ कहुँ नैना लागे हैं ।
 'आलम' सनेही ते वे पैड़े नैं न बँड़े होहि,
 पेम पैड़े आये पैड़ बड़े ही सो भागे हैं ।
 विरहनि बेधे नहीं जानत सनेह सील,
 लोनी देह दरसन पल, पल जागे हैं ।
 अजौ मसि भीजी नहीं ऐसी मन बसी बातें,
 बोली ठोली हाँसी के कन्हाई दिन आगे हैं ॥६८॥

जानति हौं तुम आपु आपुने ह हाथ नाहीं,
 कछु मन खिन ही मैं खीन है कै खोयगो ।
 खरेई निडर बैठे बगर उसाँस लेत,
 जानति हौं इन अँसुअनि डर धोयगो ।
 रोययो है कान्ह सुतो सोययो को नेहु नहीं,
 नेमु यहै पेम-पथु आये, दुख बोयगो ।
 आँखिन के आगे तुम लागेई रहत नित,
 पाछें जिन लागो कोऊ लोग लागू होयगो ॥६९॥

मनु मिल्यो जासौं सुपनेहुँ मिलि जैए पल,
 हिये मैं जौ है है ती ॥६९॥ एती कहा हाते की ।
 'सेख' भनि प्रथम लगनि हिलगाने तन,
 तैसो आये ताँवरि^४ भँवर मद माते की ।

१—मसि भीजना = देख आना । २—लागू = निकट । ३—एती कहा हाते की = इतनी रुहायत की । ४—ताँवरि = घुमरी (घूम घूम कर गिर पड़ना)



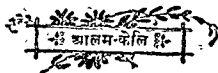
जैसे तुम विधे ऐसे ग्यारिनि विधी है कान्ह,
 हौं नाकहीं यात राखि ठकुर-सोहाते की ।
 बैननि को मतो चाँके मन हूँ मैं नाहिनै पै,
 कछुक मितार्ई देखौ नैननि के नाते की ॥१००॥

रहै डीठि कोर-ढाँके बहुखो भरोखा भाँके,
 दुहँ कर कौरो टेकि द्वारो भाँके दौरि कै ।
 हुती अलबेली तैसी लगी-तलावेली अंग,
 नये नेह खेली लाजु हारी तिनु तोरि कै ।
 'आलम' कहै हो घरी घरी अटा चढ़ि जाय,
 चाहै चहँ ओर पाछे राखै नैना मोरि कै ।
 नेकु चलै चितै छाहँ ऊमी है कै ऊमी बाह^२,
 बार बार अंगराय आँगुरिनु जोरि कै ॥१०१॥

(विरह वर्णन)

परम भावती तेरी लाल मैं विकल देखी,
 धपुन सँभारै कछु उठि न सकति है ।
 कीनो फहा मोसौ कहौ स्याम हौं यलाह लेउ,
 जात अधकधकी उर अनल धुकति^३ है ।

१—ऊमी हूँ कै = सड़ी होकर । ऊमी बाहँ = बाहँ ऊपर की उठा कर ।
 २—धुकति है = जलती है ।



डारे सीरो नीर होति : घीय ज्यों प्रयत्न ज्वाल,
 महर महर : सिर, पाँर, भभकति है ।
 एक ई अघार वांके हिये, है रहतः प्रान,
 घाटक^१ लगायें मगु कुंज कौं तकति है ॥१०२॥

तीर सो लगै समीर ससि सों कहति सुर,
 विषु घनसार भयो सारी भई सार^२ सी ।
 'आलम' अतंग दाह कौनो है अदाह^३ तन,
 अंगना के अंग अंग तंपनि अंगारः सी ।
 दुखनि अडार^४ लाय सुखनि बिडार जाय,
 मारि मैं डारि दीनी पीरी पीरी डार सी ।
 अजहूं लौं पाय धारि तोपि लीजै पोषि नारि,
 सोचहों के सोक सूखी जैसे जलधार^५ सी ॥१०३॥

ताती होति छाती छिनु जूड़ियो है जाति कछू,
 ताती सीरी राती पीरी वृक्कि न परति है ।
 'आलम' कहै हो कान्ह कौन विधा जानों याकी,
 मौन भई काहू की न कानि हू करति है ।
 आगि सी भंवाति^६ है जू ओरो सी बिलाति है जू,
 छिनु हू न देखे सुधि बुधि बिसरति है ।
 अंसुवनि भीजै औ पसीजै त्यों त्यों छीजै बाल,
 सोने येसी लोनी देह लोन ज्यों गरति है ॥१०४॥

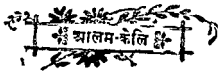
१—घाटक = टकटकी । २—सार = लोहा । ३—अदाह = (आशय)
 पूर्णरति से दग्ध । ४—अडार = समूह । ५—भंवाति है = बुझतो है ।



बेगि ब्रजराज तजि काज नेकु चलि तहाँ,
 जहाँ पैसी प्यारी है सकल सुख दैन की ।
 'आलम' चकोर बिन चंद्र की चमक ऐसी,
 चकित है रहै नहीं आवै यात चैन की ।
 सेज पर अंसुवनि सानि कै सुमन सब,
 सैनन मुनावै सु सकति नहीं चैन की ।
 राति सिसिराति^१ न सिराति^२ सु सुरतिहीन,
 सारस घदनि सु खताई अति मैन की ॥१०५॥

विधा को विचार कै सकानी हू न जान्यो नेकु,
 पीरी होति जाति अरु तांतो सीरो गातु है ।
 सुमन सुहाते तैं तो हिये हूँ ते हाते करि,
 नैननि सौँ चाँद नेकु हेरे न हितातु^३ है ।
 तुम्हरे वियोग कवि 'आलम' बिरहें बख्यो,
 तुम बिनु प्यारे हरि कलु न बसातु है ।
 आइ^४ हूँ को ओर आये ऐसी गति होति भई,
 ओरती^५ से नैना आँगु ओरो सो ओरातु^६ है ॥१०६॥

१—सिसिराति = सरदी बढ़ती जाती है । २—सिरात = बोलती है ।
 ३—हिये हूँ ते हाते करि = हृदय से त्याग दिये हैं । ४—हितात है = धरदा
 लगता है । ५—आइ = आयु । ६—ओरती = ओलती । * ओरातु
 है = सतम हुआ जाता है ।



अंचर की श्रोत्र कै कै कोटनि की श्रोत्र कोन्हें,
 परत फफोट^१ है बयारि लागे बत की ।
 मलय कपूर आनि राजिव के रस सानि,
 नेकहू के लागै अति जागै आगि-तन की ।
 'आलम' सुकवि कहै बावरी है मोंगि^२ रहै,
 हाइ हाइ कछू पीर पावो वाके मन की ।
 हम सब जतनु जुवति करि हारी अब,
 तुम ही कहो सुनाय जतन जियन की ॥१०७॥

अनंगु दहतु याकों अंगन सहन दुख,
 अंगनहि सीरी करौ अंगनहि आर कै ।
 फूल जलु चन्दनु समीरहुँ न सीरी होति,
 अतिहि तपति थकी सकल उपाइ कै ।
 कहि कवि 'आलम' न डोलै औ न धोलै बाल,
 नैन आँखु धार ढरै बैठी मुरझाइ कै ।
 मानो बिनु नौरहि अधार^३ बेलि ढोली जाति,
 फटिक सलाका दुहं राखी टेक लाइ कै ॥१०८॥

घैननि संतोपे औन, नास घान हूँ अचानी,
 अति हूँ अनूप ओप रूप तोपै नैन द्वै ।
 अधर मधुर परसत रसना सरस,
 काम केलि मिलि सुख साँचे अंग अंग छवै ।

१—फफोट = फफोले । २—मोंगि रहै = चुप हो जाती है । ३—मानो
 जाति = मानो बिना निरुद्ध अधार के कोई लता गिरी जाती है ।
 ४—दूद = दोनों ओर ।

अब कवि 'आलम' बिलोहे धिनु छिनु तिय, ॥
 पिय पोय कहि कहि कहै कहो कहाँ स्वै ।
 सुरति समानी मन मनहों मैं देखि बोलै,
 मोरे जान पाँचहु समाने पाँच रूप है ॥१०९॥

पिय जक लागे हूँ विकल; यकि थकि जाइ,
 पूछे हूँ न कहै कहु काम छाया है छली ॥
 'आलम' सुकवि लोग कहत मरुरै औरै,
 अति कै मरुरै काम डरी मरी है अली ।
 जेतो उपचारु कीजै तोतोई बिकारु होतु,
 जानि ऐसी घात; हौं तौ प्यारे तुम पै चली ।
 चन्दन चुवाये; नलिनी को रसु नाये आँगु,
 पानी पाये; जैसे प्रजरति चूने की कली ॥११०॥

अटा चढ़ी हुती बिधु; छटा सी छवोली प्यारी,
 उमकि भरोघा तुम कान्ह ठाढ़े हें कहूँ ।
 उतहीं गिरी ही वैसी जौ न आली आनि लागै,
 जीवन की औधि ही सु ऐसी टरी टेक हूँ ।
 'आलम' मयंक पुरो परिवा सो है गयो है;
 कुह जौ न परै तौ रही ही कला एक हूँ ।
 पतियै भई तँ अब जौ न बेगि ऐहो प्यारे,
 एहो निरदर्द तोहि दया नहीं नेक हूँ ॥१११॥

जरीयै रटति ताकी जरी नं जुरति कहँ, ॥
 जड़ है रहति फिरि जूड़ियौ कहति है ।
 'आलम' मुकवि सुधि एकी न परत कान्ह,
 देहहि विकल ; किधौ विरह दहति है ।
 सेज तें परति भूमि बैठे तें उठति पुनि,
 ऐसे बहराइ तब पीयहि चहति है ।
 उलटि पलटि लोटि लटकि लपटि जाति,
 छटपटी लागे छटपाटियै गहति है ॥११२॥

जाख्यो जु मनोज सिंघ तीजै नैन ज्वाला करि,
 वहै जोर जुर आयो तेही ज्वाल जरी है ।
 विरह अपार ताकी पीर को न परि पासो,
 पीर के उपाइ बिनु पोढ़े पास परी है ।
 पते पर 'आलम' बसंत यह वैरी भयो,
 बिस सी बघारि लागै ते ही बिस भरी है ।
 कीर की कलह कलमल्यो मनु कोकिला ह,
 कुहकि कुहकि कान कलकान करी है ॥११३॥

प्रीति की परनि वैरी विरह की जीति भई,
 हारे सब जतन जहाँ लौ जानियत है ।
 वेदन घटै न विघटी सी बहै जाति 'सेज'
 आन आन भाँति उपचार आनियत है ।

१--जरी = जड़ी, घड़ी, थोपप । २--पोढ़े पास परी है = बड़ी दृढ़
 काँच में पड़ी है । ३--कलकान = परेशान ।

जन्म है न जरी कछु मरी जाति कन्त विनु,
 'नेह निरमोही के न मन्त्र मानियत है ।
 चन्दन चितैप वरै चाँदनी न चाही परै,
 चन्दा हू की ओट को चँदोया तानियत है ॥११४॥

सीतल पनारी^१ जानि डारी पंच नारिन में,
 पानी की पनारी^२ चहँ और भरी पूरि है ।
 ओस में पसारि कै उसीर आनी सीरी करि,
 तैसियै तुपार घनसार हू की धूरि है ।
 'आलम' कहै हो एह जतन जुडै ना बाल,
 जीय की कठिन जोबो जुवती को दूरि है ।
 आस यहै एक है उसाँस जा न रुँधे छिनु,
 'नेहु के निबाहिये को आहि^३ बड़ी मूरि है ॥११५॥

इहाँ तो ठकुरई है अघै नहीं और 'घार,
 रावरे जु आपने सुभाइ कौहँ आइहौ ।
 'सेर' कहै उनके तो उनै रहे नैन भरि,
 मोहिं फेरि मोहन बिलंग दरनाइहौ ।
 अब न चले तौ फिरि चलि न सकौगे उन,
 अँसुवन फान्ह कहँ ठाहर^४ न पाइहौ ।
 आइ घर राखौ बैठि घरनि को घेरि नातो,
 घरिक में हरि घरनाइ^५ चढ़ि जाइहौ ॥११६॥

१-पनारी = पौनार (पननाल) कमलनाल । २-पनारी = नाला
 ३-आहि = आइ, ठंडा सांस । ४-ठाहर = जगह, स्थान । ५-घरनाइ =
 घुमना, पड़ो को बनी हुई नाथ ।

तूहँ आई हों हूँ आई चाहौ, दौरि आवति है,
 ताकी कौन गति जाके जरँ जीय जरिये ।
 मूरि कों गई ते आई तेऊ इतही कों धाई,
 जान्यो वैरि विरह विरोधे जाहि डरिये ।
 एतौ धीरँ धीरँ ऐहँ वने वागे वीर जैसे,
 ढोले पाँइ धारत उपाइ, कौन करिये ।
 देखे दुख तीय के बिसेपे मरियो है माई,
 लेखे^१ नाही पीय के परेखे^२ याहि मरिये ॥११७॥

जीय की कहै न अनमनिये रहति प्यारी,
 मनु ठौरु नाहीं सोई नारि औरै है भई ।
 सुतनु पसीजे उर अंसुवन भीजे, छीजे,
 फहौ कहा कीजे जानो ठग मूरि है दई ।
 'आलम' सुकवि ढिग हँसति सहेलनि जौ,
 सपनो सो देख्यो काहू अपनाइ-सी लई ।
 वैन की सु-धुनि सुनि नेक ही भरोया भाँकि,
 अकल-विकल^३ कछू बाचरी सी है गई ॥११८॥

चलहु छुपीले पिय हृवीली सो, प्रीति यहै,
 एतारु छुपे पाछे दिन को उदोन है ।
 सो तिय सतारै मैन नैना सित अस्मित ते,
 अंसुवा चलत जनु सरिता को सोत है ।

१-लेखे...के = नियतमको इस बात का कुछ ध्यान हो नहीं है । २-परेखे
 मरि = इसी को सोचें समझ कर । ३-अकल विकल = अप्रयत्न व्याकुल ।

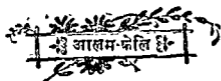


पती घेरं भई मोहि इत आये मेरी उत,
 । मनु तुम विनु तपे तनक न ओते है ।
 चूनी सो लग्यो है आंग सुनो स्याम विधां वाकी,
 सुनो भौन देखि ताहि दूनो दुख होत है ॥१२६॥

अधर अधर विनु धरे न धरति धीर,
 माधौ सुधानिधि वाके प्रान के अधार जू ।
 बिलपति घाल सुअबल बोलै बोल लाल,
 बोलति है बिलखि बिलोकति है वार जू ।
 'आलम' अल्प साँस रही है सरीर सोई,
 जतनन सखी राखै काने सोधि सार जू ।
 बसन बिसारे बैसी मदन बिसिख बसि,
 बिस को लहरि जैसे जाति बिसँभार जू ॥१२७॥

रुठे तें न ठौर छाँड़े उठै न उठाये हठि,
 कठिन हठीली अति बैठी निठुराई कै ।
 कोरु की कहानी कहै तासों कहौ कहा कहीं,
 'आलम' जु कहि रहै जगनि हौ कुराई कै ।
 मेरी न सिखति सिख आपुनी सिखायै सिख,
 सखिनु को सिख थकी सिख खों दुराई कै ।
 तुम हो चतुर चतुरापी वै तो चातुरी है,
 चाहि बित चोरि लेहु एक चतुराई कै ॥१२८॥

१-ओत=आराम । २-वार=द्वार । ३-सार=प्रबंध । ४-जाति
 बिसँभार=बेहोश हो जाती है । ५-कुराई=करता । ६-चतुरापी=
 चतुरपना ।



कहुँ मोती माँग कहुँ धाजूबन्द भूवा भरे,
 कहुँ हार फंकन हमेज टाँड़^१ टीक^२ है ।
 ऐसे कै बिलारी स्याम, ऐसी यैस ऐसी वाम,
 विहकि पपीहा की सी धार धार पी कहुँ ।
 'सेख' प्यारे आजु कालि आल चाल देखौ आइ,
 छिन छिन जैसी तन-छीजन की छीक^३ है ।
 सेज-मैन-सारी^४ सी है सारी हूँ बिलारी सी है,
 बिरह बिलाति जाति तारे की सी लीक है ॥१२२॥

कोजिये न धार यह धार और धार नहीं,
 नैकु धार लागेह ते धार ते बिसेपिहौ ।
 खरी है निसाँसी^५ तैं तौ कीनी है बिसासी मारि,
 दण्ड दसा सी लाख भाँति लखि लेखिहौ ।
 जानन हो लाल जैसे होत हैं हवाल फिरि,
 बाल बिसराइये को रेख आन रेखिहौ ।
 पाखक तैं पावति हीं पाँतुरी सी राखी है मैं,
 प्यारे फिरि लागे पल राख आनि देखिहौ ॥१२३॥

पान^६ की सी पान खाये हेम कैसे पानी न्हाये,
 पीयूष सो पानु किये पानिप है जो कही ।
 कोककला की सी कला कोकिला सी फल कुल,
 काम की कलाँल अरु जैती कला ओक ही ।

१-टाँड़ = भुतदह का आभूषण । २-टीक = गसे का आभूषण ।
 ३-छीक = छया । ४-मैन-सारी = मोमनी बनी हुई मोटा । ५-निसाँसी =
 स्नोंस हीन (मुदाँ सी) । ६-पान की सी = पान की कला सी मुलायम ।



'आलम' बिचित्र हरि, आपुं ही रिझाय आई,
 आपनी हितूयै जानि आये चाके ओक ही ।
 लोल लता ललित ललामताई ललिता की,
 लाल लालची कै लाई लव अवलोक ही ॥१२३॥

सखी की उक्ति सखी प्रति

नेह सौं निहारै नाहुं नेकु आगे कीने बाहु,
 छाँहियो छुवत नारि नाहियो करति है ।
 प्रीतम के पानि पेलि आपनी भुजै सकलि,
 धरकि संकुचि हियो गाढ़ी के धरति है ।
 'सेख' कहि आधे घैना थोलि करि नीचे नैना,
 हा हा करि मोहन के मनहि हरति है ।
 फेलि के अरम्भ खिन खेल के बढ़ायवे को,
 मोढ़ा जा प्रवीन सौ नबोढ़ा है ढरति है ॥१२५॥

कौरि आनि लागै विछुधारे सखी जागै सौति,
 आस पास मोन के उसाँस ही को भरु है ।
 उन वसि कीने कान्ह देखन न दीने काह,
 मैं हूँ वस कैहीं न दिखैहीं कछु धरु है ।

॥ आलम-केलि ॥

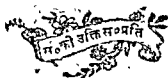
'आलम' विचित्र स्याम आये मेरे मया करि,
 ओऊ तिया आधौ-बैठो उनही को घर है।
 पाये अरु पाये औ छुपाये छतिया लगाये,
 काम ते निडर भई अथ फाको डरु है ॥ १२६ ॥

देख्यो है कन्हाई तव ऐसी है कै आई तो मैं,
 कोटिक उपाय लाय जतननु ज्याई है।
 'आलम' कहै हो आलु बैठे ही गिरी ही सुनि,
 कहँ नेरे वैरी आनि बांसुरी बजाई है।
 मेरे ऐसी मूरि ही मरी हः जिये छुये छिनु,
 मरे ते कठिन यह कैसी मुरछाई है।
 मारे डारे बिस ज्यों बिसारे वान मारी जानु,
 भाटे हः न मानै मानो वारे कारे खाई है ॥ १२७ ॥

आवत ही लखी बाल अतिही विकल कछु,
 तन नः सँभारै जानो कान्ह देखि आई है।
 वंसी को सबद किधौ बिसको वसेरो सेप,
 किधौ बाँस बिसअर ताके छौना खाई है।
 मोपै मुरी मंत्र हो सजीवन घनन्तर को,
 ताह पढ़ि दोन्हे एक लहरौ नः पाई है।
 नाँउ सुनि लाल तव मैर सो जगत अथ,
 रसु सो पियाय कहँ जतननु ज्याई है ॥ १२८ ॥

१—वारे कारे खाई है = साँप के बच्चे ने काट छापा है।

२—बिसअर = विपथर (सर्प)।



विरह की मूरि जिहि मुरली के मारे माई,
 को न भई जोगिनि वियोगिनी बैरागी है ।
 एक घरजे तै गई दौरी सुनि दौरी भई,
 ताको धन मेलि मूरि लैन को न भांगी है ।
 पावन दै पीर पेम आचन दे पुरो नेह,
 आंजु ही ते जरनि जुन्हैयाहू सौ जागी है ।
 मेरी जो न कह्यो मानै मेरियै बलाय जानै,
 आगन दै लाई याहि लागन दै लागी है ॥१२६॥

जुड़ी यौ जनाई माई किधौ काहू डीठि लाई,
 औचक मिले कन्हवाई छुतिया घरक तै ।
 घायल तराइल^२ सी मानो करसाइल^३ सी,
 धार धार वाइल^४ सी घूमति घरिक ते ।
 लै गई लयाय घरघाली^५ घर घालिबे को,
 हौ न उन्हे देत होन बाहिर फरिक तै ।
 दोहनियो डारि सिर मोहनी डराय आई,
 थहर थहर आई कौपित^६ घरिक तै ॥१२७॥

आपुन देही है परदाह को विलगु मानै,
 जानि वृष्णि रिभवति या कुशानि राधरी ।
 आलम संताप तन ताके हू तिया को तपै,
 ताके नेकु कांह ताको तोहि कहा ताधरी ।

१—लाय = अग्नि । २—तराइल = (तरल) चंचल ।
 ३—करसाइल = (कृष्णसार) मृग । ४—वाइल = घातुल (जिसे पाई
 चढ़ी हो) । ५—घरघाली = घरको टराव करनेवाली ।



आलम-कलि ६१

तरुनी की उग कहा मुनि ही डुलावे सुर,
 मुरली के सुनत डुलावे सीस-डावरी १।
 पेम को परोइ लीजै बिरह न थोरि दीजै,
 नेह को निहोर कीजै छीजै बिनु पाँवरी ॥१३१॥

घरु है कि वनु हाँ तो भूलि परी जनु तेरो,
 कहा भयो-मनु कहि कौने घसि कीनो है।
 जकी सी औ थकी सी है चितवति चकीसी है,
 छली है कि छकी है कि काहू कछू दीनी है।
 'आलम' विकल बागी-मैन की ठगौरी लागी,
 नैननि की ठौरी लागी तातें तनु छीनो है।
 यहई सुठौरई है परयस-थौरई है,
 हौं तहीं सो औरई है जाको नाँउ-लीनो है ॥१३२॥

हँसे हँसि-देइ बोले बोलै औ न खोलै-पेम,
 यातें पहिचानी कछु पीरी-पीरी है भई।
 'आलम' कहै हो याके हिये की पोढ़ाई देखौ,
 कैसे कौ दुराई माई प्रीति कान्ह सौं नई।
 अयै अनमनी हुती अँसुवा भरति ठाढ़ी,
 औचक ही धाइ धाइ भुज भरि है लई।
 पूछे तिहि अँसुवा कहे हो? कहे कैसे आँसु,
 पलकें-पसारि-दई पुतरीनु-पी गई ॥१३३॥

१—डावरी = छोकरी (नवोढ़ा) । २—परोय लीजै = मान लेना बाँधिये । ३—बागी = धूमती फिरती है । १—धाइ = दूध पिलानेवाली ।

फूली साँझ^१ के सिंगार सूही^२ सारी जूही हार,
 सोनो सों लपेटे गोरी गौने की सी आई है ।
 'आलम' न फेरफन्द^३ जानत ही चंदमुखी,
 नन्द भौन दीपक जगाइवे को ल्याई है ।
 जोति सों जुरति जोति आगे नैना जुरे जाइ,
 चातुरी अचेत भई त्रितयो कन्दाई है ।
 घाती रही हाती^४ रसमानी छवि छाती पूरि,
 पाँगुरी भई है मति आँगुरी लगाई है ॥१३४॥

सखिन बुलावै कान्ह मुखहि न लावै मुफि,
 दूतियो निकारी वीनि घेगि हो बगर तैं ।
 हों न भई हाती^५ कहीं वाही की सुहाती पेसो,
 मान रस माती हों न बोली डोली डरत ।
 जौलों कहुँ मुरली की घोर^६ सुनां कान 'संख',
 घरी ही में देहली दुहेली^७ भई घर तैं ।
 परी तिहि काल हुती पोरि पोरि थाल जनु,
 सोरी भई सुनि छुटि वोरि गई फर तैं ॥१३५॥

आन और कान देतीं मनहि यौगइ लेतीं,
 मुरली की धुनि सुनि चितहि न आनती ।
 कान्ह चितये ते तौ हों देखि मुसिकानी कत,
 भूली तव रूखी है के त्यों ही त्योरी तानती ।

१-फूली साँझ = संध्या समय । २-सूही = सूखी । ३-फेर, फंद = छत्र
 कपट । ४-हाती = अज्ञ, एक तरफ । ५-हाती=अज्ञ । ६-घोर=रसोली
 ध्वनि । ७-दुहेली=कठिन (घर से देहरीतक जाना कठिन हो गया)



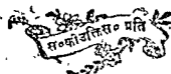
आलम-काल

'आलम' कहै हो कहूँ, ऐसियों विसासो है री,
जानि^१ यनि^२ भई वात काहू की न मानती ।
माँसो मुख मोरि जैहै आगनि^३ सो जोरि जैहै,
काहे को हौं जोरौं नैनो जौ हौं ऐसो जानती ॥१३६॥

हियो ना सिराउ विसराउ न बियोग धरु,
माँगत मरुकै पेम पावक प्रजारी है ।
व्याकुल के जीवे कल कोवे की जहाँ लौं मूरि,
याँसुरी विह्वन^२ विसवेलि कै विसारी है ।
'आलम' रसाल गुन जाके नटंसाल भये,
सोई मूलजीवनि सजीवनी हमारी है ।
औपद्^३ हितावै ताहि वेदन न भावे जाहि,
भीरि छाँड़ि घोर पैद पीर मोहि प्यारी है ॥१३७॥

काँकी लाज काको डरु कौन आपु कैसो धरु,
कौन धरवसी^३ कछु वात धरु की कहै ।
साँस लेत हिये में सलाका ऐसी सालति है,
काहू चितधनि भाई नित चित को दहै ।
'आलम' कहै हौ परयस न धसात कछु,
भागे हूँ न छुटै दुख अति साथ ही गहै ।
पलकते न्यारी कीनी नौदऊ विडारि दीनी,
निसि दिन नननि^३ मै घैरी घैठोई रहै ॥१३८॥

१—जानि=विपुत्रम । २—विह्वन=तिषाय, अज्ञाया । ३—धरवसी =
दिनाख, पुरवती ।

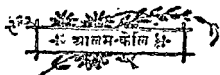


निरखें निवाहें तेई गोरी हैं कठोरी हम,
 चोरी ही में चाहें पतझारी कैसे पात हैं ।
 'सेख' कहि एक बार फान्हर की खोरि आयें,
 ठौर रहै मानसु^१ कठोर सोई गात हैं ।
 मोहनी से बोल कारे तारनु^२ की डोल मिला,
 बोल डोल दोऊ बटमारे वान वात हैं ।
 नैना देखें स्याम के ते नैना कैसे सुनै माई,
 नैना सुनै तिनै कैसे नैना देखे जात हैं ॥१२६॥

घर देखै घन-देखै घरी-घरी जाइ देखै,
 देखियो करत मनु देखि ना अघानो है ।
 'आलम' कहै हो अनबोली गैल लागी डोलै,
 बोलि कै चितै है याको चितु ललचानो है ।
 नेकु नैना फेरि फान्ह सैननि ही हंस्यो तव,
 गैन^३ थकि ठौर चकी मैन हनी मानो है ।
 धमक सी लागी धाइ साल उठो डर आइ,
 चौकि फिरि चितयो हुंसारु सरु जानो है ॥१४०॥

मेरो सो न मेरो मनु औरै कहु भयो जनु,
 पलकें न लागै जागै नैना औरै है भये ।
 जहाँ हुती तहाँ ठाढ़ी विरह की पीर घाढ़ी,
 मदन की आगि जागी रोम-रोम है तये ।

१—ठौर रहै मानस = चित्त ठिकाने रहै । २—कारे तारनु की डोल =
 काली पुस्तकियों की 'चंचल' चाल । ३—गैन = (गमन) गति, चाल ।
 ४—सरु = (सर) बाया ।

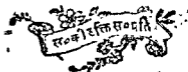


'आलम' कहै हो भूली भोरहू तें भोरे^१ आर,
 द्वारे भूमि भाँकी कान्ह देखि नेकु ही लये ।
 लटपटी पेचै लखि चटपटी लागी आँग,
 अटपटे आयै लाल माहि लटू कै गये ॥१४१॥

वन सौ वनिकै वनघारी ब्रज खोरि आर,
 बाँसुरी बजाई बाँधे वनिता विवेक^२ कै ।
 सुनि धुनि धारै वसकाम धामकाम तजि,
 रोके प्रभु 'आलम' बिलोके धार^३ एक कै ।
 उभकि भरोखें फिरि चाहि चली आली घर,
 ठगि ठौर कान्ह रहे टेके प्रीति-टेक^४ कै ।
 अकुटी कुटिल चले लोचन तिरीछे तीछे,
 मनु कटि गयो सु-कटाक्ष लागे नेक^५ कै ॥१४२॥

जाँगन ही खरी हौं मगन भई छगुनत^६,
 स्याम अंग नीको वाके संग ही न गौनी मैं ।
 मनहि मरोरि तोरि चोरि संग डोरि सखी,
 नयो नेहु जोरि सो रो गो रो खारि कौनी मैं ।

१—भोरे आइ = घोले से आकर । २—बाँधे वनिता विवेक = स्त्रियों
 की विवेक बुद्धि को बाँध दिया (विवेक शक्ति मार दी) । ३—धार =
 बाण । ४—नेक के = तनक से । ५—छगुनत = विचार करते हुए ।

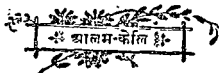


धौरे^१ ही तें धाय धुकि^२ 'आलम' अधोन करि,
 हिये धकधकी दै न धोरजु है धौनी^३ मैं ।
 अंचल की आट मैं दगंचल लगाइ नेकु,
 मोहि गयो मोहि सखी चचल चितौनी मैं ॥१४३॥

मनु अकुलाय तनु छिनु छिनु जाय जरि,
 धनु न सोहाय पनु^४ याही तें न जाइहै ।
 खेटकु करत जेतो तिय^५ को मरन तेतौ,
 लाज को हरन तोसों कोऊ न लजाइहै ।
 ता दिन निकुंज ही ते भाजे भोर 'आलम' सु,
 मेरे जान चोरि चित अजहूँ भजाइहै ।
 राजिव दगनि तेरे राजत बिलोकि दग,
 रीकि वसि भई खोकि कहूँ न पराइहै ॥१४४॥

खरीयै हुती सु तौ लौं परीयै विकल कीनी,
 मनु हरि लोत्री हेरि अब तन तें गयो ।
 देख्यो न अघाइ नैन लाइ^६ तन लाइ रही,
 विरह घड़ाइ आइ जानों विष दै गयो ।
 साँवरे सं गान कवि 'आलम' सरोज चख,
 अचानक आइ अब आँगन हूँ कै गयो ।
 भोरी कटि भोरै मोह मोरि याही खोरि सखी,
 नेकु मुख मोरि कै करोरि^७ जिय लै गयो ॥१४५॥

१—पौरि = निकट । २—धुकि = झपट कर । ३—धौनी = (पमनी) नस । ४—पनु = प्रतिज्ञा । ५—जैत = जगिन । ६—अघाइ = अघो तरद वुरख कर ।

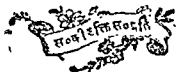


'आलम' कहै हो भूली भोरहू तें भोरे^१ आइ,
 द्वारे भूमि भाँकी कान्ह देखि नेकु ही लये ।
 लटपटी पेचै लखि चटपटी लागी आँग,
 अटपटे आये लाल मोहि लटू फै गये ॥१४१॥

वन सौ वनिकै वनवारी ब्रज खोरि आइ,
 बाँसुरी बजाई बाँधे बनिता विवेक^२ कै ।
 सुनि धुनि धाई वसकाम धामकाम तजि,
 रोभे प्रभु 'आलम' विलोके चार^३ एक के ।
 उभकि भरोखें फिरि चाहि चली आली घर,
 ठगि ठौर कान्ह रहे टेके प्रीति-टेक के ।
 अकुटी कुटिल चले लोचन तिरीछे तीछे,
 मनु कटि गयो सु-कटाक्ष लागे नेक के^४ ॥१४२॥

आँगन ही खरी हौं मगन भई छगुनत^५,
 स्याम अंग नीको वाके संग ही न गौनी मैं ।
 मनहि मरोरि तोरि चोरि संग डोरि सखी,
 नयो नेहु जोरि सो री गो री खोरि कौनी मैं ।

१—भोरे आइ = घोड़े से आकर । २—बाँधे बनिता विवेक = स्त्रियों
 को विवेक बुद्धि को बाँध दिया (विवेक शक्ति मार दी) । ३—चार =
 बाल । ४—नेक के = तनक से । ५—छगुनत = विचार करते हुए ।



धोरे' होतें घाय धुकि^२ 'आलम' अधीन करि,
 हिये धकधकी है न धोरजु है धौनी^३ में ।
 अंचल की ओट में दगंचल लगाइ नेकु,
 मोहि गयो मोहि सखी चाल चितौनी में ॥१४३॥

मनु अकुलाय तनु छिनु छिनु जाय जरि,
 यनु न सोहाय पनु^४ याही तें न जाइहै ।
 चेदकु करत जेतो तिय^५ को मरन तेतो,
 लाज को हरन तोसों कोऊ न लजाइहै ।
 ता दिन निकुंज ही ते भाजे भोर 'आलम' सु,
 मेरे जान चोरि चित अजहूँ भजाइहै ।
 राजिव दगनि तेरे राजत विलोकि दग,
 रोकि बसि भई खोकि वहुँ न पराइहै ॥१४४॥

खरीयै हुतो सु तौ लौं खरीयै विकल कीनी,
 मनु हरि लोनौ हेरि अथ तन तें गयो ।
 देख्यो न अघाइ नैन लाइ^६ तन लाइ रही,
 विरह वढ़ाइ आइ जानों विष दै गयो ।
 साँवरे सं गान कवि 'आलम' सरोज चख,
 अचानक आइ अथ आँगन हूँ कै गयो ।
 मोरी करि भोरै मोह मोरि याही खोरि सखी,
 नेकु मुख मोरि कै करोरि^६ जिय लै गयो ॥१४५॥

१—धोरे = निकट । २—धुकि = झपट कर । ३—धौनी = (धमनी)
 नल । ४—पनु = प्रतिज्ञा । ५—जाइ = अग्नि । ६—करोरि = अखी तरह
 खुरच कर ।

जब कल्यो देखि मित्र हौं तौ भयो देखि चित्र :
 अजहूँ लौं चित की अचेत - चतुरई है ।
 रीभयौ हौं तिहारी इन नैननि की रोकि काँजु,
 कौन मृदु मूरति रिभाय मुरभई है ।
 घूँघट की ढिग चाँपि भृकुटी उचाइ 'सेख'
 मन्द मुसकाइ चपला-सी काँधि गई है ।
 तुम सोध वाही के सिधारे कुंज सुधापुंज,
 मोहि कान्ह धरो एक पाछे सुधि भई है ॥१४६॥

छीकत हौं गई-जु वा साँवरे सौं भेंट भई,
 सर की सी दर्ई री-सुभाय सौँहें हेरि कै ।
 'आलम'-न नीरो आवै येनु दूर तैं वजावै,
 'दाध' पर लावै लोनु रछ्यो मुख फेरि कै ।
 मनु संगही लगाय गयो सुधि बिसराय,
 गनत न गति गाई ऊँचे सुर टेरि कै ।
 तब ही तैं सुधि नाही रही कछू मोहि माहीं,
 नैना ना अनत जाहीं रहे अयसेरि कै ॥१४७॥

चंद्र को चक्रोर देखै निसि दिन को न लेखै,
 चंद्र विन दिन छुवि लागति अंध्यारी है ।
 'आलम' कहै हो आला अति फूल हेत चले
 फाँटे सौं कँटोली बेलि ऐसी प्रीति प्यारी है ।

१-रहे अयसेरि कै = इतिभार कर रहे हैं, पाट जोड़ रहे हैं ।



कारो कान्ह कहत गँवारी^१ ऐसी लागति है,
 मोहि घाकी स्यामताई लागति, उज्यारी है ।
 मनकी अटक तहाँ रूप को विचार कहॉ,
 रीझिबे को पैड़ों तहाँ वृकि कछू न्यारी है ॥१४॥

वरु करौ जिन्ह सों ते वैरिनि भई हँ ग्वारि,
 तिनहि कं आगे बात कान्ह की कहति है ।
 'आलम' सुगाय^२ कोऊ गारि लाय, जैहँ तव,
 उनहि मिलैगी जाय ऐसे उमहति है ।
 पलकें उचाट नैना चकि चारौ-होन ऐसे,
 औचक चितै कै फिरि नीचे को गवति है ।
 वहै जब मनसा में नेकु ठहरैहै फिरि,
 डीठ ठहराये घर बाहर चहति^३ है ॥१४६॥

घर बैठे घैरु^४ कीजै ऊतर^५ बनाइ लीजै,
 औरै घतियाँ-बनाय उपजै नई नई ।
 नेक चाहे मुसकाय घदुखो न चाहो जाय,
 पलकें नवाय लीजै ठग ठगि सी लई ।
 तव सों सयानु अभिमानु कवि 'आलम' हो,
 जौ लों आली नेकु खोरि कान्ह की नहीं गई ।
 वापै सँन आयो जात कीजतु वाही को भायो,
 वातन चितैये नेकु जनु वाही की भई ॥१५०॥

१—गँवारी = गँवारपन । २—सुगाय = सदेह करके । ३—चहति है = देखती है । ४—घैरु = किसी की निदामय चर्चा । ५—ऊतर = गवाय ।

फहाँ आई बैरिनि वेषुधिन को सुधि देन,
 सुधि आर्ये बुधि जाइ सुधि बुधि हरी है ।
 'आलम' प आली तू तौ कालि हुतीभली आज,
 लाल की सो लगनि भुलानो विसँभरी है ।
 मोहि देखि मोहन को मुख देखि मोही हौं सु,
 मेहु है कि नेहु देहु दीन खीन घरी है ।
 घरस सिराने नैना घरसि सिराने नैना,
 गहिली' गघौरि अजौ पहिलियै घरी है ॥१५१॥

निधरक भई अनुगवति^२ है नंद घर,
 और ठौर कहुँ टोहे^३ ह न अहटाति है ।
 पौरि पाखे पिछ्यारे कौरे कौरे लागी रहै,
 आँगन देहली याही बीच मँडराति है ।
 हरि रस राती 'सेख' नेकहुँ न होइ हाती ।
 पेम मद माती न गनति दिन राति है ।
 जब जब आवति है तब कछु भूलि जाति,
 भूल्यो लेन आवति है और भूलि जाति है ॥१५२॥

जयहीं जमुन जैहै सुधि विसराइ पेहे,
 घरौ डारि औरनि के संग धाइ आई है ।
 रोम खरी रोव खरी कपै थरहरै खरी,
 जड ह रहति कछु जुड़ियो जनाई है ।

१—गहिली = यावली, रत्नमत्त ।

२—अनुगवति है = अनुगमन करती है । बार बार जाती है ।

३—टोहे हुन अहटाति है = दूँसे से भी नहीं मिलती ।



'आलम' कहै हो अथहीं ते रिक्खवार भई,
 दुरै न दुराई में तो अथ लौं दुराई है ।
 रूप रस प्यासी भई कान्ह तन डीठि दई,
 गागरि भरन गई नैना भरि लाई है ॥१५३॥

दिग चलयो आवै अरु टका^१ देत ढोली बाहँ,
 ढोटा ऐसो ढीठ नहि पैयत डगर में ।
 नागरी आगरी हम तासों लँगराई^२ करै,
 ऐसो कान्ह नागरु है वसत नगर में ।
 नेकहु न कह्यो करै करै जैसी मन धरै,
 'आलम' न काहू डरै देख्यो अचगर^३ में ।
 वहै सुनि पैहै पैहै दैहै गारी चारि नैकु,
 नूपुरनि वारि^४ नारि^५ नंद के वगर में ॥१५४॥

भटकावै मनु सु नटावै तनु टट^६ आवै,
 हटक्यो नारहै हारी निपट हटकि कै ।
 पटकत मटुकी भटकि भटकत पट,
 विपट छटकि छूटी लट सुलटकि कै ।
 'आलम' टिकाये टीठि टिक्यो टोकि टोकि भुज,
 टकटकी लाई टरि गयो सो सटकि कै ।
 कटि पीत पट सटकारी साँट कर नट,
 चटपटी लाय टरि गयो मो भटकि^६ कै ॥१५५॥

१-टका = धका । २-लँगराई = लंगरपना, टिठोई । ३-अचगर =
 शरारत, छेड़-छाड़ । ४-नूपुरनि वारि = नूपुरों का बगना शौकले ।
 ५-टट = (तट) निकट । ६-मो भटकि कै = मुझको भटका कर ।



शालम-केलि

बांसुरी विसद बंसी बट को बसेरो तहाँ,
 त्रिविध बयार बन विसद बहति है ।
 बरन बिरह कवि 'आलम' विविध बर,
 बार बैस बूझि मानों बिरसु गहति है ।
 बारिज बदति बिरचौहीं^१ बैन बानी बाकी,
 विपनु^२ बचन सुनि बिरचि रहति है ।
 बारक कहत बिलखौहीं हौहीं बार भई,
 बार बार मोसों अंध बावरी कहति है ॥१५६॥

जिय की कहै न अनमनीयै रहति प्यारी,
 मनु ठौर नानी सोई नारि औरियै भई ।
 सुतनु पसीजै उर अँसुवन भोजै छीत्रे,
 कहा कहा कीजै जानो उगमूरी^३ है दई ।
 'आलम' सुकवि ढिग हँसति सहेलिन सों,
 सपनो सो देख्यो काह अपनाय सा लई ।
 वेनु की सुधुनि सुनि नैक ही भरोसा भांकि,
 अकल बिकल कछु बावरी सी है गई ॥१५७॥

गौन कं सुनत रही मौन मूली मौन सुधि,
 पीरी पति आई यकि योरी रही हाथ ही ।
 चौंफति चकति पछिताति मुरझाति तन,
 ताही छन आय उर लाय लई भाय ही ।

१--बिरचौहीं=बिरचे प्रेमप्रया। २--विपनु-बचन=विपन्न बचन।
 ३--उगमूरी है दई=किमा उगने कीई वस्तु तिला पर विशेष फल
 रिता है।

रही ही नवाय नारि, पूछति पियारे के-सु,
 कैसे हूँ कैसे हूँ कै उठाय, उत माथ ही ।
 मुख तन चितै हरवरे^१ गहवरे^२ गरे,
 उतर-उसाँसु आँसु भाये एक साथ ही ॥१५॥

नय नये, नेह नये, मोह नये, नये धन,
 नयला नयल नीके पारस परस ही ।
 किरच कणूर कर कोरै^३, योरी भरि हरि,
 कर योरी देत करकर^४ उठी, रस^५ ही ।
 रोके कवि 'आलम' सुभाय ब्रजराय निसि,
 मोर भये ऐसे दग कोर लौ दरस ही ।
 सारस से सर से सरस, अरसौं हैं रस,
 रसिक रसिक संग जागे रास-रस ही ॥१५६॥

खंडिता वर्णन

रजनो बिहाने^६ उठे दोउ अरसाने आँग,
 राधे रति रानी तैसे मोहन मनोज हैं ।
 'आलम' कहै हो पल कोरनि कटाच्छु देखि,
 मोर ही खुलत मानो रातेई सरोज हैं ।

१—हरवरे = शीघ्रता से । २—गहवरे गरे = गद्गद् कंडने ।
 ३—कोरै = कोमल । ४—करकर = कड़क, दृढ़ । ५—रस ही = पार से ।
 ६—बिहाने = नीतने पर ।



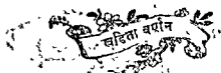
आलम-केलि ६१

सहज की अरुनाई अरु नौकी तरुनी के,
 अधरनि रेख राजै उपमा के चोज हैं ।
 कुसुम बंधूक की ज्यों लीकें सोई न्यारी पीय,
 नैन के परस लागे घरुनी के चोज हैं ॥१६०॥

एक सुनि बोल अनबोले डोले डोले फिरें,
 बाँह की डुलनि मनमोहन डोलाये हैं ।
 अंतर ही एक हये तंत्री कैसे तंत्र भये,
 ऐसे मंत्र काम ल फटाछुनि पढाये हैं ।
 हेरनि अहेरी तेरी गीत की अहीरी तैरी,
 हेरि हेरि मानसु अहेरो करि पाये हैं ।
 जाके नटसाँल ताके कैसे हैहें हाल ऐसे,
 नैना तेरे लाल लाल फाके लोह न्हाये हैं ॥१६१॥

अनम दुहागी^४ जिनि देहरियो देखी नहीं,
 खिन में सोहागी भई ऐसे जाको भागु है ।
 मेरी हितू कैसीऊ, प्रिया, की हितू चित नहीं,
 हौ न ताकी आलो जामें विरह विरागु है ।
 'सेखः प्यारे तेरी गति कहत न बनि आवै,
 नेकु न्यारे होतः हिये दीनो आय दागु है ।
 अब ही की घरी पेहै घरी कि पहर पेहै,
 फत पीरी जाति तेरो केतक दुहागु^५ है ॥१६२॥

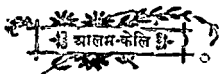
१—सोम = पद बिन्दु । २—तंत्री = तंत्रिक । ३—नटसात = फलक पीड़ा । ४—दुहागी = दुर्भाग्यवती । ५—दुहागु = दुर्भाग्य ।



सीख सी भुलाई है कि काहु बचराई है कि,
 खीभी है परसिन की पेसी चुरि धाई है ।
 मैं हूँ फह्यो, तै हूँ कहे-हा हा चुपकै न रहै,
 जोई-जोई कही सोइ करिहौं दुहाई है ।
 कान्ह सौं पिछौड़ी है कि कान्ह की कनौड़ी है कि,
 मौड़ी है जु डरपी कै छल अति छाई है ॥
 साँची कहीं आज तुम पायनि परत कान्ह,
 मेरे जान देया कहूँ द्वैज देखि आई है ॥१६३॥

तो सी ढीठी निठुर बसोठी देखी मैं न कहूँ,
 मीठी मुझ आगे पीठि पाछे करै रारि सी ।
 मेरे आये मेरी भई वापै धाही की है गई,
 दई को न डरु लोक लाज दई डारि सी ।
 'आलम' सुकधि आई वातनि रिभाय मनु,
 मुरभानो मोहन मुरी है बेभार मारि सी ॥
 धान सी बनाय सुलचाय द्विये लाय इत,
 तू नौ चली नारि फिरि नावक की नारि सी ॥१६४॥

मानस को कहा बसि कीजतु है धावरी सु,
 धासी-सुरवास हूँ को बसि कै बसाऊँरी ।
 मैंका को स्वामी कामकन्दला को कामी भोरि,



'सेख' मनमोहन के मोहन के मंत्र जंत्र,
 मोहिं जे न आयें ते बिघाता पै न पाऊं री ।
 आसतनि' लेत हाथ चंद्रा चल्यो आवे साथ,
 नदिन को नीर धीर उलटि बहाऊं री ॥१६५॥

प्यार की प्रतीति भये प्रेम को प्रकास इति,
 तातें रस रीति प्रीति प्रगट' जनार्इ है ।
 तैं न कछो मैं न लखी मैन कछो ऐन आनि,
 घैनन की रीति सय नैननि में पाई है ।
 कंप यंभ स्वेद कछु भौंहनि में भेद' मानो,
 नेह को नवेद' दै कै लालन पंठार्इ है ।
 चाली कछु औरै तैं उताली घनमाली कछो,
 तोहि यनमाल सौंहें आली बनि आई है ॥१६६॥

दोरघ' दरारे से वै डोलैं मतयारे से वै,
 कारे कारे तारे मानो मलिन' अलिन' के ।
 आये अरसात से सुफूले' मुसकात से,
 पै राती राती रेखैं छाँड़े अहन कलिन के ।
 'आलम' अलोल दिये केलि के कलोल भरे,
 मानो दीप दीपत न कज्जल मलिन' के ।
 मोहन प्रतक्ष पिय दच्छन-सुलच्छन से,
 आली तेरे चच्छनि में लच्छन नलिन' के ॥१६७॥

१—आसतनि = मंत्रासत । २—नवेद = (फारसी) निमंत्रण ।
 ३—नलिन = कमल ।



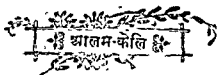
गहक^१ करत कत गवनो हो गिरिधर,
 रीभी हौं तिहारी सौं कहति गृजगामिनी ।
 मली कीनी भोर भये हौं न भूली चतुराई,
 रोखे भोरा भोर लगु कौन ऐसो भामिनी ।
 कैसे तन बने पट लसत कपोल नख,
 हँसत दसन दुति दमकै ज्यों दामिनी ।
 मरगजे^२ बागे^३ रस पागे नैना लागे आवैं,
 आगे रही पाग घँसि जागे लाल जामिनी ॥१६८॥

नींद छाये रैन के उनींदे दृग मूँदे आवैं,
 नींद के आरस इंदीबर निदरत हौं ।
 पियरो बदन भयो हियरो लुवत मोदि,
 सियरो लगत ज्यों ज्यों नियरो करतु हौं ।
 'आलम' सु प्यारी जिहि पेसे कै पठाये पिय,
 जाके दिन प्रति उठि पगनिं ढरत हौं ।
 कच मुकुराये^४ मधुकर कीसी माल लाल,
 मुकर बिलोकी कत मुकरे^५ परत हौं ॥१६९॥

खरी अनखात है है घीरियो न खात है है,
 भाँकि भाँकि जात है है नेक भये न्यारे हौं ।
 'सेख' कहै उनही निम्नाह पठये हो पिय,
 भाँकी दैन आये तुम हिये भुकि हारे हौं ।

१—गहक = देर । २—मरगजे = मलगज (शिकनै पड़ा हुआ ।)

३—बागा = जामा । ४—मुकुराये = छिटके हुए । ५—मुकरे परत हौं = टवकार करते हो ।



आलम-केलि

बोली ताहि साँ हो साँहें जोरै कौन भौंहें ऐसे,
 पाय परो चाके जाके पाय पर धारे हो ।
 प्यारी कहौ ताही साँ जु रावरे साँ प्यारे कहै,
 आजु कालि रावरे परोसिनि के प्यारे हो ॥१७०॥

कै रहेंगी रोस वै जु कौहर सी कौवरी हैं,
 ऐसो कोरा छुड़ि कत भोराभोर आये हो ।
 'सेख' निसि जागे के निमेष आवैं लागे, जिहि
 राग अनुरागे ऐसी भाँति ताहि भाये हो ।
 पाछिलियो जानि पहिचानि ही सु नाही जनु,
 हा हा छलु छाँड़ी पिय पाद परों पाये हो ।
 लटक लटक लटकन भये हिये लागि,
 लटू कहूँ और मोसों लाट पाट लाये हो ॥१७१॥

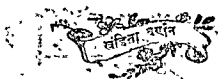
लाये सीरी देह इत चिकने सनेह चित,
 पानी कैसी धूँद ऐन धैन ठहरात हो ।

आलम अन्यारे नैन काह के अनंग आनि,
 रोप धरे नैननि लखे न नैन जात हो ।

लोमी रस लच्छ ऐसे दच्छन के वंचिये जू,
 लच्छन सदोष लाये आये अरसाँत हो ।

डोले डोले यो लौ धैन जी पर ते डोलति हैं,
 पी पर तिया ते भये पीपर के पाँत हो ॥१७२॥

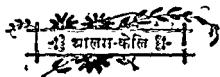
ढोली ढोली डगँ भरी ढोली पाग ढरि रही,
 ढरे से परत ऐसे कौन पर ढहे हो ।



गाढ़े जु हिया के पिय ऐसी कौन गाढ़ी तिये, १७२
 गाढ़ी गाढ़ी भुजनि सों गाढ़े गाढ़े गहे हो ।
 लाल लाल लोयन उनीदे लागि लागि जात,
 साँची कंठों 'सेख' प्यारे में तो लाल लहे हो ।
 रस वरसात सरसात शरसात गाँत,
 आये प्रात कही रात रात कहीं रहे हो ॥१७३॥

भली भई भोर भये पाँच धारे भावते जू,
 हम अनभावती हैं भावतिजु भाये हो ।
 रोस है कहत हैं न रिस कीजै रस की सु,
 जाके रस रसे तिन वस करि पाये हो ।
 ऐसो परिहसु हियो तरकि मरीजै पै न,
 'आलम' पतीजै पुनि पिय जानि पाये हो ।
 अंग नये चिन्ह रतिरंग न दुरत नयो,
 आँगन में अंग संग अंगना लै आये हो ॥१७४॥

जम सी जुन्हैया जरौ जागत जु जाय निनु,
 जामिनी के जाम जिमि जात जमजाल से ।
 आलियो न, और अकुलाइहों अकेली अरव,
 'आलम' ए आली काह आली पै है आलसे ।
 आरसी लै देखो अरसोंहें हो रसिक रस—
 मसे धसे सीस फेस भेस अलिमाल से ।



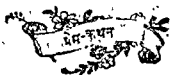
अधर ललित लाल, माल लाल पाग, लोल,
लाल लाल नैना लाल लालची गुलाल से ॥१७५॥

मैन हरि कहे मुरझाई सैन, रही थकि,
मैन ही में नैन उरझाई कै रिझै गये ।
और ही के मोरें आये भोर मेरे भोन कान्ह,
भाँके पीरे सीरे तनु तातो करि तै गये ।
रैन अष आई सुनि सजनी न लागै पल,
रजनी के जागे दिन रैन जाग दै गये ।
खुले पल कोरनि तै तामरस भोर ऐसे,
आपुन उनीदे आये मेरी नीद लै गये ॥१७६॥



प्रेम-कथन

भली कीनी भावते जू पावँ धारे यहि खोरि,
अनत सिधारे कि बसत याही पुर ही ।
ग्वारि काह गोपिकै धखो है सब गुनी जानि,
औगुन न जानौ तुम लखनि के गुर ही ।



'आलम' कहै हो चख चाहि चिनु चोरि लीनो,
नीकी चतुराई कीनी भले जु चतुर हो ।
निःकट रहत तुम पती निठुराई गही,
अब हम जाने कान्ह निपट निठुर हो ॥१७७॥

जीउ है जानतु जेजे अनदेखें दुख होत,
अमुना ते आवत ही जात देखे अब तें ।
भौनु न सुहातु है उसाँसन विहात दिन,
रतिपति अग्नि दहति तन तब तें ।
'आलम' कहै हो प्यारे काहू को तो पीर वृक्षो,
दूर ही तें यदन दिखैयो कीजै अब तें ।
ऊँचे चितवत नाही नीचे मुसफयात जात,
ऐसी निठुराई कान्ह कीने वदी कय तें ॥१७८॥

आवत परेखो जहाँ जीय की न जानै कोऊ,
जरी ऐसो ब्रजु तहाँ कैसे करि रहिये ।
कालिंदी के कूल तकि कोटि सूल मूल भई,
मुरली को धुनि छिन सुनिये न सहिये ।
'आलम' कहै हो कुलकानि गई जाति हई,
बिरह विकल भई कौली बाट बहिये ।
कासों कहीं कहे कोऊ पीरौ न बँटावै तातें,
चुप ही भली है कान्ह कलुयै न कहिये ॥१७९॥

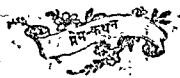
आलम-केलि

औरनि के आगे नाचे और ग्यारिनी सों राचे,
 हम सोंहें नोचो मुख ऊँचो के दिखाइये ।
 सूधे करि नैन धोलो धैन जासों बाढ़ै चैन,
 मैं के उदोत चारु याँसुरी बजाइये ।
 नित ही मिलन कवि 'आलम' हो जी के प्यारे,
 मित्त चित्त पर हित-यतियां लिखाइये ।
 जासों तें ठग्यो है मोहि ताही सों ठगैहों तोहि,
 कौन है ठगौरी तेरो मोहि धों, सिखाइये ॥१०॥

देखिये न भाखिये न मन ही में राखिये पै,
 आँगन है जैये बोलो खेला जासों रसु है ।
 'आलम' कहै हो कोऊ तन की तपनि-हरै,
 चितये सिराइ ताहि यहै बडो जसु है ।
 औरनि की कहा कहाँ बहुतन दिय प्यारे,
 पीर पर वृकन न इहै परिहसु है ।
 हों तो चुप रही जानि इती निठुराई कान्ह,
 तेरे जी में बसी है तो मेरो कहा बसु है ॥११॥

तू तो चिते चलि गयो चित हू न कीनी है है,
 मेरे चित वहै चितवनि भई साल है ।
 यावरी विकल चाहि ठगी हों ठगौरी वाहि,
 वैरी बधू वारे मुख यहै बात चाल है ।

१-परिहसु = दुस ।



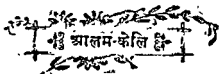
'आलम' कहै हो काहँ अथलीं न लागो मन,
 । लाग्यो तव जान्यो होत ऐसोई जँजाल है ।
 जापै धौतै सोई जानै कहे कान्ह कौन मानै,
 तेरे जी की तुही जानै मेरो ऐसो हाल है ॥१२२॥

जादिन तँ तुम चाहे' लोग कहँ पीरी काहे,
 पीरी न जनैये पल पल जिय जरिये।

॥१३॥ 'आलम' कहै हो गुरुजन सखी सौति संध,
 औरै बिधा धूमँ जोई कहँ सोई करिये ।
 घूँघट की थोट आँसू घूँटिबो करत मैना,
 उमँगि उसाँस कौलीं धीरज यों धरिये ।
 याको मरियतु है जु ऐसे हँसि बोलो कान्ह,
 ऐसी मया करिये तो ऐसे काहे मरिये ॥१२३॥

जैसे डोलै पीरो पात लागे धौत ही की बात,
 ऐसो तनु डोलै अरु ऐसो ई बरनु है ।
 तेरी धौली ऐसी भई पहो कान्ह निरदई,
 तेरे प्रेम परँ भयो फाँसी को परनु है ।
 सुधे रहि सुधे ऐरि दीठि नेक हू न फेरि,
 नेकु अनजोरे नैना जीय को जरनु है ।
 मनाहि मरोरि मुरि मुसकाय टोटा तँ तो,
 मुख मोखाँ सो तो यामँ और को मरनु है ॥१२४॥

१-तुम चाहे-तुम तो देता । २-बरनु-रंग ।



मया^१ करि चितै चितु, चोरि लीनो, हितु करि,
 हित-विनु चितै, नहीं सोई सोच नित हैं ।
 'आलम' कहै हो, पुर वास में, जो बसी तिन्हें,
 नेसुक^२ न चाउ निसु, वासर चकित हैं ।
 देखे टक लागै अनदेखे पलको न लागै,
 देखे, अनदेखे-नैना-निमिष-रहित हैं ।
 सुधी, तुम कान्ह ही जु आन की न चिन्ता हम,
 देखेहु दुखित अनदेखे-हु दुखित हैं ॥१८५॥

वैना सुने-जरनि श्रवाँकी सोऊ सोरी होति,
 पावक^३ दहे को तेई धावक^३ अमिय के ।
 दूरि ही ते दरसि कपूर जनु, पूरे पल,
 फूल-हू-ते कोमल हिताने^४, हार हिय के ।
 'सेख' कहै प्यारे चित घर के उजारे दिया,
 कहँ कहँ नैननि के तारे, फेहू तिय के ।
 देखे विन-जियँ-नहीं, देखे-मुख जियँ-हम,
 तुम चिरंजीवो कान्ह-जोय मेरे जिय के ॥१८६॥

कहु न सुहात, पै उदास-परयस वास,
 जाके बस हूजै तासों जीते हू पै हारिये ।
 'आलम' कहै हो हम दुहँ विधि थकी कान्ह,
 अनदेखे दुख देखें धोरज न धारिये ।

१-मया = प्रेम । २-नेसुक = तनक भी । ३-भावक = उपवास
 दावे । ४-हिताने = अन्वेषण लगे ।



कलुषै कहोगे कै अघोले ही रहोगे लाल,
 मन के मरोरे कौलों मन ही में मारिये ।
 मोह सौ चित्तैषी कीजै चित हूँ की चाहि कै जू,
 मोहनी चितौनि प्यारे मोहन निवारिये ॥१८७॥

तुम निरमोही लोग औरै कछु बूझत हैं,
 कहां एती यात को परेखो जिय मानिये ।
 भावै सोई आयै जु बियोगो दुख पावै जातै,
 परधस भये एती मनहि न आनिये ।
 अब नैना लागे भागे कैसे छुटियत है जू,
 पैड़े के चलत सोई नाके पहिचानिये ।
 नैननि के तारे तुम न्यारे कैसे होहु पीय,
 पावन की धूरि हमै दूरि कै न जानिये ॥१८८॥

बैंठो काहू छिनु ह तो उनही को छोह करि;
 तनु मनु पनु धनु कीजै नवछावरो ।
 नैननि पै है जू प्यारे पैड़ो करो पाँठ धारि,
 पुतरौन प्यारी लगै पायँनु की पाँवरी ।
 'आलम' तिरिछे चाहि हँसि कछु योले लाल,
 ता दिन ते ही छकी छकी डौलों यावरी ।
 मोहि गये मोहि निरमोही है न आये यह,
 मोहनी की खानि मुसुकानि है जु रावरी ॥१८९॥

नीची डीठि आपु क्यों हूँ ऐसे है दिखैये, जू पै,
 कैसे हू न देख्यो जाय जेतो सोचु करिये ।
 मुरली की धुनि सुनि द्वार उभकन काज,
 मन के चलत तन; हो में काँपि डरिये ।
 लाजनि की भीर पल पैडो ऊ न पावें नैन,
 'सेख' धीरे सकुचि विचारि पाँच धरिये ।
 कीजै कहा कान्हर; कनौडो है कै जीवो नाही,
 ना तो एक पास में उसाँस लै लै मरिये ॥१६०॥

वंशी

सुर पाये सिर धुनि रहें सब सुर मुनि,
 नर खग गन पल टारे ना टरत हैं ।
 'आलम' सकल तान-दान मृग मीन वेधे,
 ताँह के हिये में जाय वेधोई करत हैं ।
 वरही मुकुट वंशीधर धनमाल यह,
 पाँसुरो सबद सुनि पंगु है परत हैं ।
 समुक्ति सनेही भये सेही किते तेही छिन,
 नेकु न विदेही और देही सो अरत हैं ॥१६१॥

१-उभकना = भाक कर देयना । २-पैडो = रास्ता । ३-कनौडो =
 रहसान से दया हुआ । ४-मेही = स्याही नामक जंतु ।



बाँसुरी बिसारो ना तो ब्रज ना बसैगो कहूँ,
 विधि वाँधि बाँसुरीके बस करि दर्ई हैं ।
 'आलम' कहै हो न्याइ नैन देखे नैन तवै,^१
 कान सुनि कान्ह ऐसे तेई ठग तेई हैं ।
 चित अनचेते तुम तातें मुसकात ही जू,
 रीझि मुरझाय के सु केती गिरि गई हैं ।
 घूमै लागे गाँसो, सी उसाँसनि की आस नहीं,
 रावरे को हाँसी है निसाँसी^२ औरे भई हैं ॥१६२॥

जेते सुर लाने उर तेते छेद काने और,
 जेते राग तेते दाग रोम रोम छीजिये ।
 ताननि के तीखे जनु धाननि चलाई देति,
 चीरि चीरि अंगन नुनीर तनु कीजिये ।
 अन्तर की सूनी^३ घर सुने करै 'सेख' कहै,
 सुनि सुनि सबद बसेरो वन लीजिये ।
 हम ब्रज बसिहैं तो बाँसुरी न बसै यह,
 बाँसुरी बसाय कान्ह हमें विदा दीजिये ॥१६३॥

न्यारे रहो प्यारे अंगसंग की सगाई छाँड़ी,
 औगुन गनैया लोग सौगुन सुगातु^४ हैं ।
 'आलम' संयोग विनु बढ़त वियोग जेतो,
 प्रीति पथ कान्ह मनु तेतो ठहरातु है ।

१-तवै = संतप्त होता है । २-निसाँसी = स्वाँस हीन (मृतपव)

३-सूनी = खाली । ४-सुगातु है = संदेह करते हैं ।

औरनि की श्रोलै^१ अथ योलिहों न रावरे सों,
डोलिये न साथ हियो हेरेई हेरांतु है ।
जीजे विनु वातो चित रातो अनरातो कौजे,
नैननि^२ को नातो पै न हातो कियो जांतु है ॥१६४॥

डगरा^३ दै जाहि नट नागर चतुर कधि,
'शालम' बसेरो दुरि जैयो पुंरि चारि^४ हैं ।
लीजे दधि पीजे जान दोजे और काज कौजे,
सांभे ते पसोजे तनु भीजे पट चारि हैं ।
जो रस बिचाखो तुम सो रस न जाँने हम,
गोरस लपेटो सव गूजरी गँवारि हैं ।
जैसे तुम आछे हो छवीले छैल तैसी और,
आछी आछी पाछे आवै रीझो रिझवारि हैं ॥१६५॥

धौरी आवै धौरी कहै धूमरो धूमरि आवै,
ऊँची कै कै पँछनि बोलावै लाल जाहिनै^५ ।
मेढ़ी कैरी कांजरी पियरि धौरी भूरी चाह,
बलही मँजीटी बन बेला अरगादिनै^६ ।
मव्य सोहै स्याम धूर धूसरित भूरी भौहँ,
बलि बलि 'सेख' उपमा में देउँ काहिनै^६ ।
गोविंद को मेनु कछू गायन में रसि रह्यो,
आगे गाय पाछे गाय गाय वायें दाहिनै ॥१६६॥

१—ओने = घटने में । २—नैनन... जान है = देवता तो नहीं रोका जा सकता । ३—डगरा = मार्ग । ४—चारि = जिसरी । ५—अरगादिनै = गानकर । ६—काहिनै = किसरी (ये पंजाबी-ढंग के रूप हैं)



प्रवत्स्यत्पतिका

धीर तें अधीर भई पीरनोर^१ चीर भीजै,
 सोचनि कुचनि पर लोचन वहत हैं ।
 'आलम' अँदेसे ऐसे कैसे यहि वैस जीजै,
 ऐसे उसाँसन प्रान कैसे कै रहत हैं ।
 कहा करौं माई मेरे प्रान मेरे हाथ नाही,
 प्रान प्राननाथ, साथ चलयोई चहत हैं ।
 पल न लगत पल कल न परत सुनि,
 आली री ललन कालि चलन कहत हैं ॥१६७॥

सेवा सावधान देव चरितन चित राखौ,
 कहा भयो कान्ह जु कलोक रँगै^२ खात हैं ।
 'आलम' ए वै हैं जिन बलि डारि बालि मारि,
 रावन के कंध गारि बांधे लिंधु सात हैं ॥
 बाँभन अक्रूर नन्द जू के दुख दूरि करे,
 एतौ पुनि पूरनु पुराने घेर पात हैं ।
 अंच^३ भरै फंचनहि कीरा कहूं कोरत हैं,
 कंटक की कोर कहूं हीरा बेधे जात हैं ॥१६८॥

घरते निकलि घरी एक जो रहन हैं तौ,
 घरी सी भरत नेन ऐसे ए अंधान हैं ।

१—पीर नोर = दुःख व श्रांत । २—रँगै = धोषा २ मंग मांग कर ।
 ३—अंच = अंगनी श्रांप) अग्नि ।



✽ आलम-केलि ✽

यन लौं पनारत' पनारे से है रहत हैं,
 निसि न्यारे नीर नये नारे, ज्यों निदान हैं ।
 कैसे कवि 'आलम' सँदेसे मधुवन के लै,
 फूटे सर छूटे जल धारा मेरे जान हैं ।
 जब हुते नदी पार आगे सुनौ नैना मेरे,
 तब हुते नदी अब समुँद समान हैं ॥१६६॥

—११६६६६६६—

भँवरगीत

जाके जोग जुगिया^२ जुगत ही सौं जोग जागै,
 भगत संजोग यसि अलख अलेख है ।
 सनक सनन्द सनकादि शिव मुनि जन,
 सारद नारद हू के लगत निमेष है ।
 'आलम' सुकवि आनि ब्रज नर भेष धर्यो,
 ध्यावत ही जाको ताके नाहीं रूपरेख है ।
 निगम तैं अगम सुगम करि जान्यो तुम,
 निगुन ब्रह्म सोई सगुन के भेष है ॥२००॥

सोई स्याम सुनहु अगाध के समाधि ध्यावैं,
 सोई स्याम रैनि जामै नितही समाति है ।
 सोई स्याम पलक लगे तैं स्यामताई हीं में,
 तनमय^३ होत तब फत पद्यताति है ।

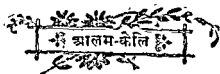


'आलम' सुकवि कहै सोइ स्याम घन घन,
 तारनु^१ तें न्यारे नहीं कन दिललाति है ।
 तुमहीं मैं स्याम तुम स्याम ही मैं रमि रही,
 यादि ही बिकल बिहवल भई जाति है ॥२०१॥

कर्म को ब्रियापी को है धर्म के समाधि ध्यावै,
 अमु के सुनावै सु तो ब्रह्म ही के नाम को ।
 कैसो जोग जुगति संजोग कैसो कहा जोग,
 ज्ञान हू की गांठि कैसी ध्यानन को धाम को ।
 'आलम' सुकवि इहां वृन्दावनचन्द्र कान्ह,
 चितये चकोर कहौ ज्ञान विसराम को ।
 जहाँ रस परस सरस मुरली की घोर,
 तहाँ ऊधौ सगुन निगुन^२ कौन काम को ॥२०२॥

रुचिर, धरन चीह चंदन चरचि, सुचि,
 सरहु को, चन्द्र चाहि चितहि धरत हैं ।
 विविध बिलास बसि रास ब्रजपति प्यारे,
 तेई ब्रज बतियां उचित उचरत हैं ।
 'आलम' सुकवि अब वैसे कान्ह ऐसे भए,
 उतहि लुभाने किधौ इतहि ढरत हैं ।
 मधुवन बसत - मधुर मुरली की धुनि,
 मधुप कयहुँ माधौ सुरति करत हैं ॥२०३॥

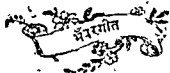
१-तारनु=नेत्रों की पुतलियां। २-निगुन=निर्गुण।



पतियां पठाये अम्बुपात तो भले पै होत,
 बतियनि विरह वितैवो कछु हाँसी है ।
 'आलम' निरास येन मुने कौन जोरै नैन,
 हिये को कठिन ऐसो कौन ब्रजदासी है ।
 ऊधो ये सँदेसे जैये वाही चितचोर पै लै,
 आपुन कठिन भये और को विसासी है ।
 यहाँ लौं न आवै नेकु वाँसुरी सुनावै आनि,
 विनसैगो कहा आये जो पै अधिनासी है ॥२०४॥

अँखियाँ भली जु ऐने अमुबनि धरै, नावो
 धारा पल छूटे 'तिहुँ देस न' समाति है ।
 आँधि है जु धूम की उसाँस रूँधि राखी है सु,
 'नेकु लेत चौसह अँधारी' होति राति है ।
 'आलम' संताप स्वेद साँचिबो अधार कौ हूँ,
 भूरी है कै देह फिर खेह ज्यों उडाति है ।
 छाती पै सराहीं बरु दीया की सी भाँति ऊधौ,
 पाँती लिखे लेखनी ज्यों बाँती बरी जाति है ॥२०५॥

नरनिजा नट बँसी-बट कुंज 'पुंज' घोधी,
 बन घन जहाँ तहाँ आनँदपयोगी हूँ ।
 सोई रहै ध्यान ऊधौ ज्ञान को न काज कीजै,
 ये 'तो' ब्रजदासी ब्रजराज के वियोगी हूँ ।



'आलम' सुकवि कहै तन बीच फान्ह छवि,
 जोग दैन आये तुम कहा हम जागी हैं ।
 जोग तौ सिखैये ताहि जोग की जुगति जानै,
 जोग फौ न काज हम बंसोरस भोगी हैं ॥२०६॥

याँसुरी : सबद सिंगीनाद पूरि पूरि रहे,
 ताही को अदेस^१ सोई तन मन धुनि है ।
 धिरह की ज्वाल साथै साथै जलु नैननि को,
 निद्रा तन भूष साथै साथै उनमुनि^२ हैं ।
 'आलम' सुकवि यहि जुगति जागै सु जोगी,
 अलि उपदेस हम सुन्यौ^३ है न सुनिहै ।
 सुमिरन मोन उर उरध उसाँस रुँधै,
 जैसे ब्रजवासी ऊधौ^४ ऐसे कहां मुनि हैं ॥२०७॥

चाहती सिंगार तिन्है सिंगी सौ सगाई कहा,
 औधि की है आसा^५ तौ अधारी^६ कैसे गहिये ।
 धिरह अगाध तहाँ सुधि की समाधि कीन,
 जोग काहि भावें जु धियोग दाह दहिये ।
 'सेख' कहै मैन मुद्रा मोहन जु लाये वन,
 मुद्रा लाओ काननि मुने ई सुल सहिये ।
 लागै लग नैकहूँ कहँ जौ वैरी नीरो होय,
 ऊधौ पते बीच की विचारि यात कहिये ॥२०८॥

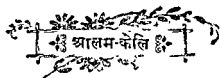
१-अदेस = आदेश, आज्ञा । २-उनमुनि = योग की एक मुद्रा ।
 ३-सुन्यौ = शून्य । ४-ऊधौ = भोजी । ५-आसा = लगन । ६-अधारी = भोजी ।

गाँसी जाहि सूत ताहि हाँसी न हँसाये आवै,
 पासी^१ परै येम सुनि साँसी^२ कहियत है ।
 मन गये मानस मकरै मारि साँस लेत,
 परगट नैसकु उदासी कहियतु है ।
 'सेख' कहे सोई गीत हरि बिलुरत ऊधौ,
 यावरे विकल ब्रजवासी कहियतु है ।
 सुर वाँसी^३ घेघत विसारे सर ध्याधि सोई,
 तातें घेड़ो बधिक विसासी कहियतु है ॥२०६॥

वारै^४ तें न पलक लगत विनु साँवरे ते,
 घावरे अजान ऊधौ भले उपदेश हैं ।
 तादिन ते धन सुनो घरु है दहत दूनो,
 तारनि^५ में ज्योति नहीं जटा भये केस हैं ।
 'आलम' विहान छिन जानो जात फोटि दिन,
 कौन रैन की समाई सुरति न नैस^६ हैं ।
 हम हू ते स्याम दूरि स्याम हू ते हम दूरि,
 वै तौ आछे काछे स्याम सखी मैले भेल है ॥२०७॥

बूझि कै अबूझ ऊधौ होत ऐसी-बूझियै रे,
 जो पै ऐसी बूझ तौ अबूझ किन बूझै जू ।
 भूखत भुरत भूखकेतऊ खिभायै भूकि,
 तुम भूकयत भूठो जूझ कौन जूझै जू ।

१—पासी = फाँसी । २—साँसी = (साँची) सत्य । ३—वाँसी =
 बंशी । ४—वारै तें = आरंभ हो से । ५—तारनि = नेत्र की पुतलियाँ ।
 ६—नैस = तनक ।



आलम-केलि

जोगु दीजै जोगिन संयोगिन को भोगु दीजै,
 राज भोग कान्हजी बड़ाई सब दोजिये।
 'आलम' अलख बान मुकुति मुनिद लेहि,
 देव कबिलास^१ वसैं पेमहि पतीजिये^२।
 रूप रुकुमिनि रमै साई सत्यभामा के हौ,
 कुशजा के परस परेखे - कत छीजिये।
 बिनती इहाँ काँ इहै याही वंसीधरजू साँ,
 हमैं नेकु वाँसुरी बजाइ मया कीजिये ॥२१४॥

वे तौ ऊर्धो - परम पुनोत पुन्य पाइयत,
 भावन प्रथीन प्यारे पावन दरस जू।
 गाँव की अहीरी हमैं गोरंस की वास भरी,
 खरीये गाँवारि गुन रूप ही नः रस जू।
 कहे कवि 'आलम' विराजित वै राजा कान्ह,
 राजनि के राजा गुन पूरन दरस जू।
 बिसखो बसेरो वन वीथी अरु ब्रजवासो,
 अति मन भाई पाई कुबिजा सरस जू ॥२१५॥

सीत रिनु भीन भई छाती राती ताती तई,
 पेसे ताप, तिय तन तये हैं न तवंगे।
 'आलम' अनिल इतराय कै कलिन मिलि,
 दीन्हो है कलेस सुधि आये दूनो दवंगे।

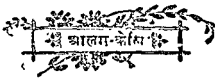
१-कबिलास = स्वर्ग लोक। २-पतीजिये = विश्वास कीजिये।



ग्रीपम ते ऊपम है विपम अपाढ़ ऊधो,
 माधो जो न आये मन भ्रमर ज्यों भवेंगे ।
 यधिधे फो वूँदनि धियोगिनि को योनि योनि,
 आये वेंरो यादर बिसासी बिस बवेंगे ॥२२६॥

पेम नेम गहें नेह वार्ते निरवहें जाते,
 अय उन्हें कहा परी महाराज भये हैं ।
 कलुक सँदेसे ऊधो मुख के सुनाउ आनि,
 हम सुख मानै उन जेते दुख दये हैं ।
 इहां कधि 'आलम' पुरानी पहिचानि जानि,
 जोगी सुधि आये ते वियोगी भूलि गये हैं ।
 इहाँ वैरी विरह विहाल करै वार वार,
 सालत करेजें नटसाल! नित नये हैं ॥२२७॥

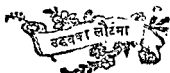
जब सुधि आयै तब तन बिनु-सुधि—होत,
 वन सुधि आये मन होत पात पात है ।
 'सेख' कहै सरद सहेठ के वे गीत गुनि,
 बाँसुरी की धुनि नटसाल गात गात है ।
 तुम कह्यो मानौ उपदेश हम नाहीं कह्यो,
 जैसी एक नाहीं तैसी नाहीं सौक सात है ।
 पेम सौ बिरुधौ जिनि हा हा हियो रूँधौ जिनि,
 ऊधो लाख घातनि को सूधी एक वात है ॥२२८॥



भावतो दिदेस जियेँ भामिनि कवनि भाँति,
 भवन न भावे भ्रम भोत न सँभारिये।
 'आलम' लगत नहीं पलनि सौँ पल पल,
 प्रलय समान पिय विनु पल टारिये।
 उमड़त जल रही न्यारी है डरारी भारी,
 डोलते डगन कहूँ कहो कहाँ डारिये।
 हाथहिँ कै लीजै लै कै दीजै धजनाथ हाथ,
 ऊधौँ दोऊ अँखियाँ लै साथ दी सिधारिये ॥२१६॥

उद्धवका लौटना

लीजै छबि जुगति अछूनी छाप प्राणपति,
 सरसो हूँ पलक पुनीत मेरी जासु है।
 'आलम' उन्हें न परतीति और पेम विनु,
 वंसी विनु और कहूँ ठौर न बिसासु है।
 पतिया पटाई तुम पतिया न वृष्को उन,
 गति औरें नारि ब्रज औरै भयो बासु है।
 यासर उसाँसनि सौँ श्रौसरौ न पावै पलु,
 निस अँसुवनि सौँ न नेक हू उकासु है ॥ २२०



मड़हो^१ मलीन कुंज खांखरो^२ खरो ई खोन,
 मनु न लगत उदयस^३ लगै आन सो ।
 बिरह विकल गोपी डारी हैं वै ठौर ठौर,
 मानौ अरसानी आगीं थाकीं करि गान सो ।
 'आलम' कहै हो जात मनक^४ न सुनी कान,
 मेरिये धनक^५ कछू बाला पायो प्रान सो ।
 दूलह बराती लै कै राति ही सिधारो जैसे,
 ऐसो ब्रज देख्यो माधो च्याह को बिहान सो ॥२२१॥

माती मट कोकिल उदासी मधुमास बोलै,
 स्वाती रस तपति अबोली रहै चातकी ।
 'सेख' कहि भौंरा भौंरी कौलनि गुंजारै पुंज,
 छाती तरकति सुनि जुबतो फी जात की ।
 रास रस आवै सुधि सरद सतावै ना नो,
 बिरह बसन्त ब्रज घरी घरी घात की ।
 चितवत चैत फी वै चाँदनी अचेत भई,
 जीती है जुगहारि जिन कातिक की रात की ॥२२२॥

जाको प्रात पंकज प्रकासे राते ताते लागै,
 तैसी कुमुदिनि ताहि तातो क्यां हितति हैं ।
 'सेख' कहि जाके अदनोदै में अदन नैन,
 नाँकह की लाली में ते आली बिलग्याति हैं ।

१—मड़हो = मकान । २—खांखरो = झंझर (जिसमें पतन से पैदा हो-) । ३—उदयस = उजड़ा दुष्ण । ४—मनक शब्द । ५—धनक = शूरत शत्रु ।

चन्द्र की उज्यारी ब्रज ऊजर करति जुदि,
 दीपक उज्यारी हू ते जरि, जरि जाति हैं।
 तरुन बियोग तरुनों को तन तायग्रे को,
 जैसे दिन तरनि तरैया तैसी राति हैं ॥२२३॥

तुम बिनु कान्ह ब्रज नारि मार मारी सु तौ,
 विरह विथा अपार छाती क्यों सिराती हैं।
 तरनि सो तमीपति ताही सौ तलप तवै,
 हेरति ज्यों निसा परी दसौ दिसा ताती हैं।
 कानन में जाय नेकु आनन उंधारि देत,
 ताकी भार फूली डारं दूरि तें सुखाती हैं।
 वारि में जो बोख्यो तनु लागति ज्यों चुरै मीन,
 वारिज की धेलें ते बिलोके बरी जाती हैं ॥२२४॥

—६६—

जसोदा विरह

दान की दहेडो मिस कान्हर की बेर जानि,
 देवकी के डार हैं के कें हैं विधि जीजिये।
 तजि सयै नात मात तात की न घात कहें,
 धौघारे धार्यै कहाय कें हैं विधि जीजिये।

१—तमीपति = चन्द्रमा । २—तलप = संत । ३—धौघा = फारि
 गस गते ।

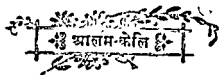


जरि जरि रहै मेरी छाती बरि बरि उठै,
 'आलम' छिनहि छिन छौना विनु छीजिये ।
 गहरु न लाउ जिति मोहि अकलाउ थाउ,
 चलहु महर मथुरा ही घर कीजिये ॥२२५॥

कपिन को पेम देखि छाती सौं लगावैं छौना,
 वंछरु न देखै तौलों गैया न पेन्हाति है ।
 धिरिया की चाह देखि चाँचह में चारो राखै,
 'चेदुआ' की चाह विनु सोऊ न अघाति है ।
 'आलम' कंठिन तेरो हियो हौं सराहौं नन्द,
 चन्द्रहि पिछौड़ौ छुँड़ि लायो कारी राति है ।
 हम निरमोही मोही वनके पखेरु पसु,
 बालक वियोगु कहँ विपद विहाति है ॥२२६॥

गोपी विरह

दिये हक हुलैसी है, औधि ह न आये बरि,
 हेरि मग हारी ताते भई तनु खोनी है ।
 'आलम' सुकवि थकी विकल वयारि लागे,
 मारि मैत सकल सकेलि बिथा दीनी है ।

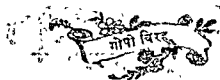


उससि उसाँसन साँ पाँसुरी है न्यारी आई,
 बीच बीच अँसुवनि आँखि भर लोनी है ।
 विरह के बीज-पये सलिल साँ सींचि दये,
 आँधी भूमि मानो फामकाँधी^१ क्यारी कीनी है ॥२२७॥

कंचन में आँच गई चूनी चिनगारी भई,
 भूपन भये हैं सब दूपन उतारि लै ।
 बालम बिदेस ऐसी वैस मैं आगि लागै,
 जागि जागि उठै हियो विरह धयारि लै ।
 अथ कत पर घर माँगन है जाति आगि,
 आँगन में चाँदु चिनगारी चारि झारि लै ।
 साँझ भई भौन साँझवाती^२ क्यों न देति है री,
 छाती सो छुवाय दिया वाती आनि वारि लै ॥२२८॥

जय तें गोपाल मधुवन को सिधारे माई,
 मधुवन भयो मधु दानव विषम सो ।
 'सेख' कहै सारिका सिपंडी पंडरीच मुक,
 मिलि कै कलेस कोन्हो कालिन्दी कदम साँ ।
 जामिनी^३ धरन यह जामिनीयो जाम जाम,
 वधिवे को जुवति-जनाघै, टेरि जम साँ ।

१—काँधी = एक जाति विशेष जो तरकारी शाक इत्यादि की रोती करती है। २—साँझवाती देना = चिराग जलाना। ३—जामिनी = जमराज की इती (मौत)



देह करै करठाँ करेजो लीन्हों चाहति है,
 कागु भई कोइल कगायो करे हम सों ॥ २२६ ॥
 मैं बस कौनी मनभावन न श्राये पाते,
 सावन को आवन सुने हूँ अकुलाति है ।
 (शालम) घयारि बरे विजना की छीजै तनु,
 पिजुरी की कौदनि पसोजि भोजि जाति है ।
 थोरे थोरे बादरनि चितै मुरभाति है ।
 सोरी है ही भूमि पियराइ जु रही ही तनु,
 सीरी होति ज्यों ज्यों ऋतु सीरी नियराति है ॥ २२७ ॥
 कारी धार परी कारी कारी घटा जु रि आई,
 तैसई तमाल सोलँ कारे कारे भारे हैं ।
 सिखँ कहै साखिन के सिखरे सिखर प्रति,
 सिखिन के पुंज सुरसिखर पुकारे हैं ।
 निरखि निरखि तेई तरुनि तनेनी दाती,
 जिनके वें निहुए निनोही कंत न्यारे हैं ।
 वरपि वरपि जात वरिष सो पल पल,
 बूंद बूंद पैरी मानो विसिख विसारे हैं ॥ २२८ ॥

१—करठा = अति काली । २—कगायो करे = कांय २ क्रिया करता है ।
 ३—ऋतुसीरी = सरदऋतु । ४—ताज = ताड़ पत्त । ५—सिखिन =
 मोर । ६—सुरसिखर = जंचे स्वर से । * तनेनी हीनी = फेंक जाती है
 (जड़पर होती है)

रजनी उज्यारी है रहति, जग या ते नभ,
 ज्वाल पुंज अगिनि जरति एते मान है ।
 सुधासई सीतल है सुभग सरूप जाको,
 सकल संसार जानै सु तो सति आन है ।
 एक परतीति मन आवै कवि 'आलम' सु,
 विनु हरि कछू विपरीति की उठान है ।
 विधु गिलि घैठो सु वदन विधु चाहै मेरो,
 विधु नहीं आली री विधुंतु^१ मरै जान है ॥२३२॥

तमीपति तामस^२ तें तमिल^३ है उयो आली,
 तियनि बधनि कहँ हुनोई दवतु^४ है ।
 आपो बरि जातो जो न बेगि बूझी वारिनिधि,
 बैरी रवि आगे आगे नीरोई नचतु है ।
 'आलम' सुकवि रातो किरनि सलाका सी है,
 राका की डरौहीं राति कहाधौं स्रवतु है ।
 चन्द्रिका बितौत तनु चिनगै उठत हैं री,
 चाँदनि न होइ चाँद चूनो सो बवँतु^५ है ॥२३३॥

विस ज्यों वमत यदै अंनक सो आयो या ते,
 कंत विनु अंनक-दसो^६ को नियराती हैं ।
 रातो रातो पाती वन वाती सी घरन लागी,
 घानां काम ताती कै लगार्इ छोरी छाती हैं ।

१—विधुंतु = गड्ड । २—तामस = क्षीप । ३—तमिल = कूट ।
 ४—दवतु है = जड़ता है । ५—बवँतु है = (वमन करता है) वगड़ता है ।
 ६—अंनक दसा = शयु ।



लै लै अलि भूनी डारें फूलो अनफूलो हू ते,
 भूली भूली फूल ही सी नारी मुरझाती हैं ।
 जरी जरी रहें सहें घगी घरी हरी कहें,
 हरी हरी बेलें देखि मरी मरी जाती हैं ॥२३४॥

फूल फुरमान छाप छपद^१ दुहाई पास,
 नूतन सुसाज टेसू तंबू दे परो री है ।
 कीर कारकुन पिक घानी चौठी आई जमा,
 विरह बढ़ाई छवि रंयति मरोरी है ।
 सीतल ययारि घादि मापि रूप लीनो हैं री,
 उपज हमारे हरि ध्यान जु घरो री है ।
 आयो है वसन्त ब्रज ल्यायो है लिखाइ आली,
 जोन्ह कै जलेबदार^२ काम को करोरी^३ है ॥२३५॥

पंकज पटीर^४ देखे दूनी दुख पीर होत,
 सीरे हू उसीरनि तें पीर चीर हार की ।
 श्रैया सो श्रयास भयो तथा सो तपत तनु,
 अति दी तपत लागै भार घनसार की ।
 'आलम' मुकवि छिन छिन मुरझानि जाति,
 सखिन बिचारि तजा रीति उपचार की ।
 मन ही मरुरे मरि रही मन मारि नारि,
 एक ही मुरारि विनु मारी मरें मार की ॥२३६॥

१—छपद = भौटा । २—जलेबदार = सुसाइब । ३—करोरी =
 तदसीबदार । ४—पटीर = (पाटीर) चंदन ।

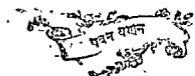


माधो विनु राधिका आधिक आधियो न रही,
 हारी डारी रहै आपु खरी खीन खेह^१ में ।
 पिजर को भलक भलकै, जाने आंग बीच,
 कुनै मन भूमै । तन, भँखै भुरै गेह में ।
 रती न रकत रह्यो 'आलम' नपति तावे,
 भोजोई रहत उर नैननि के मेह में ।
 सोचनि मसूमनि उसाँसनि साँ मरी जाति,
 मासक ते मासाऊ न माँस रह्यो देह में ॥२३॥

उत्तपनि रतर रितुपति में सपति अति,
 निसिपति-कर उर ताप सी महति है ।
 हरि विनु हखोई, हरधु^२ हर-हर^३ हठि,
 हौही हारी हेरि, सूधो मगु न चहति है ।
 'आलम' नलिन अरु अलिन परसु अघ,
 अंगना खे अंग जानो अंगिनि बहनि है ।
 कहा कहीं, कहि कहीं, कोह की कहानी मोहि,
 कुहु फुह कहि कहि फोकिला बहति है ॥२३॥

बुधि कौन, बिधि की जु बिधु साँ बधावे याफे,
 बधुनि-बधनि की धौं कब तें चला^४ चली ।
 माधो विन सुनो मधुबन जानि मधु मास,
 मो को धौं लै आयो मधुपनि की सेनाचली ।

१-खेह = धृत्त ; २-उत्तपनि रत = उताप में रत (स्वयं संतप्त) ।
 ३-हरहर = हर से दूरा गया (कात्र) ४-चला = चाल, शक्ति ।

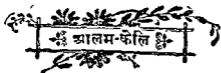


अनल^१ सो अनिल^२ नलिनमाला नल^३ मयी,
 अनिल^४ न लाउ री न लाउ मलया-अली ।
 एक इन अनेंग अनेरी^५ दही 'आलम' हो,
 दूजे आनि चाँदनी या दाहति भाँती भली ॥२३६॥

पवन-वर्णन

वारक जो ब्रजराज ब्रज तज्यो जव अब,
 सध मिलि एक वारी बैरी भये वरज्यो ।
 मूरख मयूख-हिम^४ हुमकि^५ हुमकि^५ हने,
 हमहि ये जानै हियाँ हीं मैं हिमकर ज्यो ।
 जलजावली ते ज्वालाजाल जलजाल जरै,
 लाल लाल भरि दृग जुग जलधर ज्यो ।
 एक मनु-भारे में तो माराही की मारी मरौं,
 दूजे मारै भरुत प्रवेश विष-सर ज्यो ॥२४०॥
 सघन घटा घुमरि जगु रह्यो घन घिरि,
 घेरि घहरात जात सिंधु भरि नीर जू ।
 'आलम' सिखिनि^५ सुनि सवद सुहाये सुर,
 बूंदनि के संग बहै सीतल समीर जू ।

१—अनिल = पवन । २—नल = नावक की नजिका । ३—अनेरी =
 व्यर्थ ही । ४—मयूखहिम = चंद्रमा । ५—सिखिनि = मोर ।



पवन पियारे ऐसे कहियो सुनाय अथ,
 हम अबला हैं कैसे धरें जीय धीर जू।
 पल पल प्राण ये तपत पिय पास को सु,
 पालौ पेम सहि न सकति पल पीर जू ॥२४१॥

सघन अखंड पूरि पंकज पराग पत्र,
 अच्छर मधुप शब्द घंटा कहनातु है।
 धिरमि चलत फूनी बेलिनि की वास रस,
 मुख के सँदेसे लेत सबनि सुधातु है।
 'सेख' कहि सीरे सरवरनि को तौर तौर,
 पीवत न नीर! परसे ते सियरातु है।
 आवन बसन्त मन भावन घने जतन,
 पवन परेवा मानो पाती लीने जातु है ॥२४२॥

फेला दल डोलें मूल मंद मंदाकिनी कूल,
 एला फूल बेला की सुधात बर बासी है।
 सरद की सांभ भई सीरी लागे सोय गई,
 साजन सहेट भँटि उठति उदासी है।
 मालती को मिलि जय मलय कुमार आये,
 रेवा रस रोमनि जगाय नौद नासी है।
 सखिन सुहेल घर दच्छिन समीर यह,
 बरौ पुरवैया बरी बैरिनि विसासी है ॥२४३॥



जमुना-कुंज

अरविन्द पुंज गुंज डोर भौर ही ब्रती,

हलोर ओर थोर ज्यों निसा चलत चंदनी ।

निकुंज-फूल मौल बेलि छत्र छांह से धरे,

तटी कलोल फोक पुंज सोक संक दंदनी ।

आलम कवित्त चित्त रास के विलास ते,

प्रकास धंदना फरी बिलोकि विश्व-धंदनी ।

समीर मंद मंद केलि कंद दोष धंद यो,

अनन्द नन्दनंद के बिराजे हंसनंदनी ॥२४४॥

लता प्रसून डोल बोल कोकिला अलाप फेकि,

लोल फोक कंठ त्यों प्रचंड भृंग गुंज की ।

समीर धास रास रंग रास के विलास धास,

पास हंसनन्दिनी हिलोर केलि पुख की ।

आलम रसाल धन गान तारल कालि सौ,

विहंग धाय गेगि चालि विश लाल गुंज की ।

सदा यमंत हंत सोक ओक देव लोक ते,

बिलोकि रोकि रही पाँति माँति सौ निकुंज की ॥२४५॥

गंगा-वर्णन

जाँही भौंहं भीजी आँखि ताकि है जु तीजिये से,
 जीवी-कहे ज्याइहै अमर-पद आइ लै ।
 अंबर पखारे ते; दिगंबर । पनैहै तोहि,
 छलकः छुआये-गज छालः तन द्याइ लै ।
 'सेख' कहे थापी कोऊ जैनी है कि जापी षडो,
 पापी है तो नीर; पैठि नागन-लप्राय लै ।
 अंग बोरि गंग-में निहंग^१ है कै बेगि चलि,
 आगे-आउ मैल धोइ-वैल गैल लाइ लै ॥२३६॥

नीके न्हाइ धोइ धूरि पैठो नेकु; वैठो आनि;
 धूरि जटि गई; धूरिजटो^२ लीं भवन में ।
 पैन्हि पैठो; अंबर, सु निकखी दिगम्बर है,
 दग, देखो भाल, में अचम्भो लाग्यो मन में ।
 जैसो हर हिमकरा घरे; औ गरे ताजरल
 भारी; घर; डरे घर। छाँड़्यो एक खने में ।
 देखे दुतिना परत पाप रते; पा परत,
 सापरे; ते; सुरसरि साँप रेंगे; तन में ॥२३७॥

१-निहंग = नंगा (शिव) । २-धूरिजटो = महादेव । ३-सापरे
 ते = स्नान करने से ।



दीनता

जथा गुन नाम स्याम तथा ने सकृति मोहिः ।

सुमिरि त्रिधाणि कलु कृष्ण कथा कहिये ।

गोकुल की गोपी किये गाइ किये ग्वारि किये ।

बन की जु लौला यहै चरनानि कहिये ।

कुंजनि के फोट वै जु जमुना के भीट तिनै,

पुजिये कपिले है कौ कविलास कहिये ।

सेख रिस रोपे कले दोपनि को मोप है ।

जो एकौ धरी जनम में पोपे माँक रहिये ॥२४८॥

मिटि गयो मौन तपौन साधन को सुधि गई,

भूली जोग जुगति विसाखो तपे वन को ।

सेख अप्यारे मन को उजारी मयो पैम नेम,

तिमरु अज्ञान गुन नास्यो बालपने को ।

चरन कमल ही की लोचनि में लोच धरी,

रोचन है राव्यो सोचामिटो धाम धन को ।

सोक लेस नेकु हकलेस को न लेस रह्यो,

सुमिरि ओ गोकलेस गो कलेस मन को ॥२४९॥

पैडो समे सुधो वैडो कठिन कियार द्वार,

द्वारपाल नहीं तहाँ सबल भंगति है ।

१—कविलास = सगी । २—पोप = अदीरों की बस्ती (वन) ।

३—गोकलेस = गोकुलेश (श्रीकृष्ण) ।



श्यालम-कैलि

‘सेख’ भनि तहाँ मेरे त्रिभुवन राय हैं जु,
 दीनबन्धु स्वामी सुरपतिन को पति है ।
 पैरो को न घेरु बरियार्ई को न परबेस;
 हीने को हटक नाहीं छीने को सकति है ।
 हाथी को हँकार पल पाछे पहुँचत पावै;
 चींटी की चिघार पहिले ही पहुँचति है ॥५०॥

राम किसी भाँति भेजि राघव की रीति तजि,
 श्रेता ही ते तेरो दिन नीके जिय जानि लै ।
 ‘सेख’ भनि वापर घडाऊँ कोटि द्वापर जु,
 स्वारथ निवारि परमारथ की वानि लै ।
 सोई दिन सोई रैन सोई ससि सूर गैन;
 करु नीको नाम सोई समय में आनि लै ।
 कलजुग तो पै जौ तू कलि के कलेस मानै,
 सति भाखि सत लिये सतजुग मानि लै ॥५१॥

सीता सत रख्यारे तारा हू के गुन तारे,
 तेरे हेत गौतम की तिरिया ऊँ तरी है ।
 हौं हूँ दीनानाथ हौं अनाथ पति साथ बिनु,
 सुनन अनाथनि के नाथ सुधि करी है ।
 डोले सुर आसन दुसासन की और देखि,
 अंचल के ऐ चत उघारो औरै घरी है ।

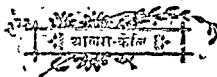


एक ते अनेक अहू धाई सेत सारी संग,
तरल तरंग मरी 'गंग' सी है ढरी है ॥२५२॥

रजनी को काजु नर घोस ही ते सोचै वैध्यो,
घोस हू के काज को विचार यहै राति है ।
हँसै खेलै खाय न्हाय बौलै डोलै आयै जाय,
गन ही की रुचि नीके तन ही हिताति है ।
'आलम' कहै हो बिनु पूरो गथु पाये ऐसी,
थोरी पूंजी बीच जन्म मौतियो सिराति है ।
घरी है गनतु घरियार ज्यों ज्यों याजत है,
जानतु है नहीं कि बजाये आयु जाति है ॥२५३॥

जनमत छिति पखो पलना बहुरि परि,
हाथी हय सुखासन पखोई यहतु है ।
अरिनि के प्रस परि विपयनि बस परि,
जुवतिन रस परि सुखहि चहतु है ।
तासो तोहि परनि परी है मेरे प्यारे प्रान,
हा हा परकृत^२ छाँड़ि 'आलम' कहतु है ।
प्रनति सरीर सील परिवे ही पर रुचि,
पखोई रहतु ता ते पखोई चहतु है ॥२५४॥

१-परनि परी है = पड़ने की आदत पड़ गई है । २-परकृत = प्रकृति, स्वभाव ।



शिव को कवित्त

गोरख सुदौरी लिये खंभु ताको मत दिये:
 आपुन अकेलो संग गौरी तिहि लोग ना-
 धरना विभूति धार धार लै लै मुख लावै,
 उरह लगावै पुति भावै कछु भोग ना ।
 अधारी लै धौरे घरी संपत्ति धतूग भरी,
 कृपम लै चलै जाय बोऊ ताको लोग ना ।
 जटा द्विष्टफाये छवि द्योना में विद्याये छाल,
 वासुकी बिरागी धाकी टेक बैठो जोगना ॥२५५॥

देवी को कवित्त

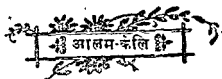
मौन को दरसे पुन्य-मौन मेरे नेरे आयो,
 छत्र-छाँह परसत छर्वनि साँ छयो हौं ।
 मंगला के मंगल ते मंगल अनेग भये,
 दिगलाज रांको लाज याहि काज नयो हौं ।
 सेषमति सेष ही सुसेष की सी दीनी तुम,
 राघरे सिखाये सिख दिग आनि लयो हौं ।

दुर्गा देवी नेरेंद्र दया से दुर्गा मति आयाँ, *
 पावतो दुर्गे सुनित्य पार मयो ही ३२५३३

रामलीला

पुन में बैठनु परागी भये पवित्रि के,
 भागन के छार नर पार करि रहि ।
 'संग' भूमि दामिद कि विम-पेलि दामिद कि,
 दुम है कि काँपि है कीमत्या पारि रहि ।
 पन गिरि देरनि' करेरे दुम केमे रहि,
 कोपरे पुनाए मकुनाए मेरे रहि ।
 मैसे नन कर ए नमेले दान कहनि के,
 पनकन कोरि छोगि दान पार रहि ॥३५॥

राजा को मरुतु विदुषन शूरंगिय ही,
 केकरे को दुम निदि दुम कहियतु ही ।
 सिवा ही सुनि मूय दान से पन परे,
 दुगका पन हैरे नारै दुगी जति ही ।



'सिख' भनि न्यारे होत घर के उज्यारे दिया,
 सुधि आये साँस लेत बिप सो पियत हौं ।
 अन्तर मैं जरी नख सिख परजरी नहीं,
 ताते अधजरी हौं मैं मरी न जियत हौं ॥२५॥

जरि उछ्यो पौन गौन थोक्यो मौन पंखी भये,
 मानस की कौन कहै विधा जु अकथ की ।
 'सेख' प्यारे राम के बियोग तात प्रात ही ते,
 रह्यो मौन मुख सुधि गई ज्ञान गाथ की ।
 टेकई न प्रान पल; केकई पुकारे ठाढ़ी,
 राजा राजा करत भुलानी पानी पथ की ।
 दरसत; दुसह उदासी देस तजि गये,
 देखी जिंन दसई^१ दसा जु दसरथ की ॥२५॥

ऊंचे चढ़ि देखि तुम नीचेई चलत अथ,
 चले कित जाहु जु चले हो पार चाउ सौं ।
 आके पग परस पखान ही को पांख भयो,
 पानी ही को डोंगा सु उड़त लागे वाउ सौं ।
 'आलम' कहत रघुनाथ साथ ऊभे^२ हाथ,
 केवट कहत टेरि हेरि भय भाउ सौं ।
 नीरे न लै आहौं जु फेरो करि जाउ अथ,
 मेरो सब कुट्टम जियत याही नाउ सौं ॥२६॥

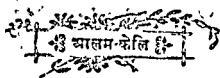


हुरे जहां महाधीर राजन की महा भीर,
 महाराज धीर रघुवीर पैज अति की ।
 'आलम' जनक जानकी की मरजाद राखी,
 दोनी पति कीनी छत्र छत्रिनि के दृति की ।
 कर जु करेरे कर उठी है धनुष धुनि,
 बारद सुनत सुवि भूली जंत्र जति की ।
 कूंद के करक मूंदे लोचन तराक^१ इन्द्र,
 गुन के तराक^२ छूटी तारी भृगुपति की ॥२६१॥

पनच पुरानी ढरि पानी सो धनुष आयो, -
 छुअत छ-टूक मयो तासों कहा--करिये ।
 'आलम' अल्प अपराध साध जीय जानि,
 छिमा छीन करि कत क्रोध भार भरिये ।
 द्विज कर सूक्ष्मयत वृक्षियो न जूझि बर,
 कठिन कुठार जानि फंठ पर धरिये ।
 गुरु मति लोपिये न पूजा पाय कोपिये न,
 तासों पाउ रोपिये न जाके पांड परिये ॥२६२॥

आयो चिनगी जगाइ लपकि लंगूग लाइ,
 उठी है धनूरा की कँगूग ही सों जागी है ।
 मरके भवन भद्रगने भट भारे भारे,
 मोरे भरे हैं भूप दीप समा भुलि भागी है ।

१-तराक = शीघ्र । २-तराक = धीर शब्द । ३-भी = भीति ।



'आलम' विलखि लखि लाखें ही ज्यो लंका जरै,
 वृष्णि देख लंकापति देह लागि दांगी है।
 लोने लोने भौन नये छिनक में छारि भये,
 होनहार पेसो कहूं सोने आगि लागी है ॥२६३॥

घारं घार घालिनुत घोले अरे लंकापति,
 कौन गति मति ताहि दीन्ही विधि यावरे।
 अजौ जीय जानि कै रे जानकी लै जाय मिलि,
 पैर बकसाइ गहि राघो जू के पाव रे।
 'आलम' अलंप कोप किये ही ते देखहुगे,
 पानी में तरीहें सठ पाहन की नाव रे।
 कंचन जो संचयो है सु बचि है न रंच एरु,
 रचना के भौन सय राख हूँ राव रे ॥२६४॥

जीत गई प्रांननि अनीत भई भौति बसि,
 वांति गयो औसर बनावै कौन वतिया।
 ऊक भई देह बरि चूक है न लहे भई,
 हूक बढ़ो पै न विवि दूरु भई छतिया।
 'सेख' कहि सांस रहिये को सहुचनि कपि,
 कहा कहीं लाजनि कहौगे निलज तिया।
 और न कलेस मेरो नाथ रघुनाथ आगे,
 भेनु यह भासियो सँदेस यह पतिया ॥२६५॥



वीरन बिछोड़, बार छोरि छारि डारी, ही सु,
 भारी नहीं जटनु अजहुँ तक तैसी है ।
 'आलम' घरीक घर पैठे नहीं तब ही ते,
 बंठे बन तन तपसी की गति तैसी है ।
 पीरे पीरे पात खात पात ही से पीरे भये,
 पीर रघुवीर जू तिहारी कछु ऐसी है ।
 राजु कैसो राज और स्वारथ को आजु लागि,
 भरथ न देखी सु अजोध्या फिरि कैसी है ॥२६६॥

दुसह दुखारो सब नेमनि ते न्यारो जिहि,
 पैम पथ आवे सोस पग है दरतु है ।
 राते किये वाते सुनि ताते सहि जात नहीं,
 लोह भरे घाह ताते लोहे सो लरतु है ।
 कपे जासो काल ज्वाल कपे तैसो कठिन है,
 कपत वियोगी जु उसाँसनि भरतु है ।
 ऐसो काह करे तकसीर करवत लीवो,
 जैसो घेर बिरही सो बिरह करतु है ॥२६७॥

नैना नीर धोइ हाखो लोह सब रोइ ताते,
 भूरो है कै भूरो अब लोह न लडतु है ।
 'आलम' न आवे वात पीरे मुख सीरे गात,
 तातो हियो रातो करि सुलहि सहतु है ।

१—तकसीर = धराराथ । २—करवत लीवो = धारे से सिर कटवाना ।



भीतर की भीत कहूँ लग्यो है पछोत थकि,
 रीति यहै नही की विदेही निबंहुतु है।
 एक एक हेरत हिराइ रहो चित्त विनु,
 मित्र को वियोगी मानो चित्र है रहतु है ॥२६८॥

रेखता

दौरि दौरि द्वारे आवैं ऐमें दिल भी न जावैं,
 किया है पखेरु तें दखाय के नवारे का।
 परा मेरी सुरात के नूर गिरदायर बीच,
 फूल सा फकीर किरै साँझ ली सवारे का।
 हरद सा है जु रहा दरद न जाइ कहा,
 मुआ है हिलाक योच मारना क्या मारे का।
 सारा दिन फिता करे तेरेई फिताक योच,
 जो न चाहे चितमों तो चारों क्या विचारे का ॥२६९॥

दाने की न पानी की न आवैं सुधि खाने की सु,
 गली महवृष की अराम खुसखाना है।
 रोज ही सो है जु राजी याद को रजाइ बीच,
 नाज़ की नजर तेज नीर का निसाना है।

१—किया है नवारे का = नवाम का पक्ष बना जाता है। २—गिर-
 दाय = भेंवत। ३—दिलक = मृत्यु। ४—फिताक = तलाश। ५—महवृष =
 मिष। ६—रोज = रीना। * नाज = दाय माच।



सुरति चिराक रोसनाई आसनाई वीच,
 १० यार यार धरै बलि जैसे परधाना है ।
 दिल साँ दिलासा दोऊँ हाल के न ख्याले हूँजै,
 ११ 'वेणुद' फकीर वंहे आंसिक देवाना है ॥२५०॥

दिलतै तरीके धोइ इस्क महरम होय,
 रोसनाई को न रोइ यार 'पुरनूर' है ।
 मनी की मनाही यारों तेना जौक जेती यारी,
 यारी बीच ख्यारी का गुमान ही गहर है ।
 'आलम' जुदाई ते तू काहलाँ न परि देखि,
 दरद नजोक पाए दोरु कहा दूर है ॥
 साबिन कदम राखि कयहँ न भूले राह,
 सादक नजर किए हादका हजूर है ॥२५१॥

गम के नसीब तै गनी है जैसे राज पाए,
 आसक गरीब को गुमान मनो माल क्या ।
 नाज ते निवाजि के नजोक ही निहाल किया,
 जीवने की जौक में जुदाई का जवाल क्या ।
 यह उस रोज से खराय हुआ खाक ही में,
 खेर नहीं खूबी पीचि घुनी तेरा ख्याल क्या ।
 दिल दै जु थायँ साँ दिलासा भी न पायँ वानाँ,
 यार दिजंदार येने वेदिल का हाल क्या ॥२५२॥

१-वेणुद = वेणुय । २-इस्क महरम = प्रेम का मनो जानमेवाला ।
 ३-रोसनाई = प्रकाश । ४-पुरनूर = प्रकाशपूर्ण । ५-मनी = शहंकार ।
 ६-जोक = मजा । * सादक = सच्चा । हादक = सच्चा वैय । गनी = पनी ।

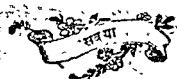
आलम-केलि ६

थोरो बार है जु कहु थोरो सो मैं, ताकि आई, १००
 थोरो सो पिलाइ कहीं खिन हो मैं-खोइगो ।
 धीरज अघार-ते रछा है-खंग' धार जैसो; १०१
 आँसुन की धार सों न धूरि है जु धोइगो ।
 आहि सुनि आई औ न चाहि ताहि पाई^२ फेरि,
 देखि 'सेख' मजनूँ विना हो नोइ-साइगो ।
 नोकै के निहारि, वाके बसननि झारि डारि,
 तार तार ताकि कहुँ बार, सो जु होइगो ॥२७३॥

सवैया

लई छलु कै हरि हेन, हला मिलई, नवला-नव; कुंजनि माहीं
 'आलम' आली-अकेली डरै-हितवैपति जे; बतियां चित माहीं
 मुखनाथ भरे दग दीन तियाँ, जल छोन में मोन मनो अकुलाहीं
 चौक परै चितवै चल नीचहि डोलत ज्यो; पिय की परिछाहीं

१-खंग = तजवार । २-चाहिराई = देव पाया ।



[२७५]

कान्ह प्रिया घनिकै विलसैं सखी साखि सहैटः यदी जिहि काछें
 कवि 'आलम' मोक्ष यिनोदनि सौं तनस्वेद समै मदनजल ताछें
 तिय भोल जगम्मग है बिदुली अलकै सुकियानन ऊपर आछें
 प्रांसत है प्रसिवे ससि संगम भानु छप्यां सुरभानु^१ के पाछें

[२७६]

बनिता बनि घेप चलीं यन को विहरै जहँ कान्ह बिहारनि सौं
 अलकावलि स्वेद प्रसून लसैं प्रगटे उड़ ज्यौं तमधारनि सौं
 तिलकदुंदुति चारु मृगम्मद सौं छवि छोर लगे दग तारनि सौं
 कवि 'आलम' सोभित कज उमै अधमै भुवभृंग के भारनि सौं

[२७७]

सांभे समै निकसी घर सौं धुनरी पहिरै रति रूप सवाये
 'आलम' लै संजनी तिहि को गुरु बैठे की संक सकोच गँवाये
 नूपुर को धुनि घाई कै कान्ह रीझि रहै सखी यौं रिझवाये
 घुंघट हीं महँ नेकु चितै हैसि गोहँ चली तियभौंह नचाये

[२७८]

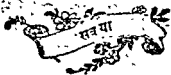
ए लै अली लखि लाई हौं लाल यहै सुनि बाल सबै दुख मोचै
 है सकुची गुरु मोरनि मै अनबैननहीं चित सौं चित रोचै
 गुरु ठौर उठी बहराइ कै बाल रखा न पखो अति लोचन लोचै
 घुंघुट ली पलकै कर ज्यौं पसरै फिरि एरहि बार सकोचै

१-सुरभानु = राहु ।

थोरो थार है जु कछु थोरो सो मैं ताकि आई,
 थोरो सो पिलाइ कहीं खिन ही मैं खाइगो ।
 धीरज अथार ते रहां है खंग धार जैसो,
 आँसुन की धार सौं न धूरि है जु थोइगो ।
 आहि सुनि आई श्री न चाहि ताहि पाई^२ फेरि,
 देखि 'सेख' मजनूँ बिना हो नाँद साँइगो ।
 नोकै के निहारि वाके यसननि भारि डारि,
 तार तार ताकि कहुँ थार सो जु होइगो ॥२७३॥

सवैया

लई छलु के हरि हेतु दला मिलई नवला नव कुंजनि माहीं
 'आलम' आली अकेली डरै दितथैपति जे यतियां चित माहीं
 मुखनाय भरै दग दीन तियां जल छोन में मीन मनो अकुलाहीं
 चौक परै चितथै चल नीचहि डोलत ज्यों पिय की परिछाहीं



[२७५]

कान्ह प्रिया यनिके बिलसैं सखी साखि सहेट बदी जिहि काछें
कवि 'आलम' मोद बिनोदनि सौं तनस्वेद समै मदनजल ताछें
तिय भाल जगम्मग है बिहुली अलकें सुकियानन ऊपर आछें
वासत है प्रसिबे ससि संगम भानु छप्यो सुरभानु के पाछें

[२७६]

यनिता बनि वेप चलीं धन को बिहरै जहँ कान्ह बिहारनि सौं
अलकावलि स्वेद प्रसून लसैं प्रगटे उड़ ज्यो तमधारनि सौं
तिलकंददुति चारु मृगम्मद सौं छबि छोर लगे दग तारनि सौं
कवि 'आलम' सोभित कज उमै अधमै भुवभृंग कं भारनि सौं

[२७७]

सांभ समै निकसी घर सौं चुनरी पहिरै रति रूप सवाये
'आलम' लै सजनी तिहि को गुरु थैठे की संक सकोच गँवाये
नूपुर को धुनि धाड़ कै कान्ह रीझि रहै सखी यो रिझवाये
घुंघट हीं महँ नेकु चितै हँसि गोहँ चली तियभौंह नचाये

[२७८]

ए लै अली लखि लाई हीं लाल यहै सुनि बाल सबै दुख मोचे
है सकुची गुरु जोरनि में अनबैननहीं चित सौं चित रोचै
गुरु डोर उठी बहेराइ कै बाल रह्यो न पखो अति लोचन लोचै
घुंघुट औ पलकें कर ज्यो पसरै फिरि एरुहि धार सकोचै

थोरो पार है जु कहु थोरो सां में ताकि आई, १११
 थोरो सो पिलाइ कहीं निन हो में सांगो ।
 थोरज अघार ते रहां है संग धार जैसो, ११२
 थामुन कौ धार सौ न धूरि है जु धांगो ।
 थाहि सुनि आई औ न चाहि ताहि पाई^२ फेरि,
 देखि 'सेख' मजनूँ बिना हो नहि सांगो ।
 नाकै के निहारि घाके बसननि झारि डारि,
 तार तार ताकि कहूँ बार सो जु होइगो ॥२७३॥

सवैया

लई छलु कै हरि हेतु हला-मिलई नवला नव-कुंजनि माहीं
 'आलम' आलो-अकेली डरै-हितवैपति जे यतियां चित माहीं
 मुखनाथ भरै दग दीन तिया जल छोन में मोन मनो अकुलाहीं
 चौक परै चितवै चल नीचहि डोलत ज्यों पिय की परिछाहीं

१-अन = ततपार । २-चाहि रई = रख पाया ।



[२७५]

कान्ह प्रिया धनिके विलसै सखी साखि सहेट बदी जिहि काले
कवि 'आलम' मोद विनोदनि सौ तनस्येद समै मदनजल ताले
तिये भोल जगम्मग है बिदुली अलके सुकियानन ऊपर आछे
घासत है प्रसिये ससि संगम भानु छप्यो सुरभानु^१ के पाछे

[२७६]

बनिता बनि येप चली बन को विहरै जहँ कान्ह विहारनि सौ
अलकावलि स्वेद प्रसून लसै प्रगटे उड़ ज्यो तमधारनि सौ
तिलकदुति चारु मृगम्मद सौ छवि छोर लगे दग तारनि सौ
कवि 'आलम' सोभित कज उभै अधमै भुवभृंग क भारनि सौ

[२७७]

सांभे समै निकसी घर सौ चुनरी पहिरै रति रूप सवाये
'आलम' लै संजनी तिहि को गुरु धैटे की संक सकोच गँवाये
नूपुर को धुनि धाई कै कान्ह रीझि रहै सखी यो रिझवाये
घुंघट हीं महँ नेकु चितै हँसि गोहँ चली तियभौह नचाये

[२७८]

ए लै अली लखि लाई हीं लाल यहै सुनि बाल सबै दुख मोचै
है सकुची गुरु नारिन में अनबैननहीं चित सौ बित रोचै
गुरु ठौर उठी बहेराई कै बाल रखा न पखो अति लोचन लोचै
घुंघुटा औ पलकौं कर ज्यो पंसरै फिरि एकहि बार सकोचै

[२७६]

नयला नव नेह, नपीने सखी-तिन, सौ सकुचे मुख मोरनि हे
 प्रथमागम संक छुटी कुछु पै ; चित, में, रसरोति हिंडोरति हे
 कवि 'शालम', घुंघट श्रोदहि में कबहुँ, प्रिय, सौ, दग जोरति हे
 जितनो चितया उत ओर, चहुँ पुनरो ; सुरि लाज बहोरति हे

[२८०]

उडि शाली चलो-वनमाली, जहाँ जमुना जल मंद हिलोरनि की
 व. वि. 'शालम' चां वन-वीधिनिमें मुरली धुनि है ; वन मोरनि की
 दग घोरिज जानि बिलंपति हे जिय संक धर-अलि डोरनि की
 सुनि त्वंदमुखी मुख चंद, चिते निसि, चंचल चंचु चकोरनि की

[२८१]

चांद प्रसून प्रवाल लता, प्रति प्रीति लीं है-प्रिय, कुंज, गली रो
 मंद-समीर सुनोर कलिदी, के, धीर तही, प्रज, वीर, बली, रो
 मादमपी मुरली मधुध्वनि लै कवि, 'शालम', सीख, भली रो
 आति मुजाति तू जाति नहीं बन जाति है, प्राति, सिराति, अली रो

[२८२]

घोर घटा उमड़ी चहुँ श्रोत ते मानु न कीजतु पेसो अयानी
 तू जु बिलंबतु हे विनु काज यड़ी बड़ी धुँदनि आवेंगी-पानी
 मेरे कहे, उडि मोहन पै चलि को सध, प्राति कहेंगी कहानी
 देख तुही ललनारी लतानि को येऊं नमालनि, सौ सपटानी



[२२३]

नयलो नयनेह नधीन प्रिया रतियो रति राइ डरे लखि ओऊ
 'आलम' अंग छुटी अंगिया तन कंचन आभ भई छवि कोऊ
 पसखो कर कान्हको चौकी तिया करसौ कुच घायन भाँपत साँज
 देखि भुअंगम कंचनि मध्य दुरे माना हंस के साथक दोऊ

[२२४]

बैठे प्रजंक प्रिया प्रिय अंकुत संक तजे भरि अंक मिलाहीं
 गोल कपोल दिपे दग चंचल मध्य तें सेते कटाछ न जाहीं
 कामिनी को कमनी तन कुंदन रोम की माल लस हिय माहो
 'आलम' उष्म का भवरी कवरी प्रतिविम्ब कि स्यामकी छाहीं

[२२५]

सैन समै सित सेज सपीप सुसोभत स्यामल गौर को संगम
 भामिनि भूयन भेष वनी भरि कोटिक भाव करै भुव भंगम
 अधरपुट पान पियूष के पुंज कुचपर देत पिया रस संगम
 'आलम' सिधुत शंदन इंदु चक्या मनो संधि सुमेरु भुअंगम

[२२६]

यन के गृह सुन्दर सैन किये ललना नंदलाल इकतन के
 कथि 'आलम' ये छवि ते न लहै जिन पुंज लये कल वचन के
 तन स्याम के ऊपर सोभित यौ लागि फूल रहे सतपत्तन के
 जल झाल सरायर मध्य मनो झलके प्रतिविम्ब नछत्तन के

[२०७]

राति रंगी रति रीतिहिमें रसे ही रसे 'नायक' सों । रति को
रुचिसों मुचिके सुचि सैन करी अलि संग कली जनु मालति की
लित फूल हिये हरि के छिटके कवि 'आलम' या उपमा चिति की
सँचरी भंभ रंभन के भंग है निसि में मनु ज्योति निसापति की

[२०८]

एके समै सँग प्राणपिया जु रमै । नंदलाल प्रज कहि जू
छनु कैऽप चली बरवालकी आलि हुरे बरनायक अंकहि जू
धाई गही कवरी कर तै अघरगुट देत निसंकहि जू
अहि के मुख तै मानो लेत छुड़ाइ ज्यो गारुड़ मैन मयंकहि जू

[२०९]

सतपत्रके पत्रनि सेज सजै मिलि सोचत । कान्हर संग लली ।
पिय की भुजतीय की प्रीय गही तिय की भुज पीय की गीव रली
कवि 'आलम' अपरोमावलिके जगै चोकी जराघकी जोति भली
जुग जानु सुमेरुके धोच । मनो धरि धीर । कलिदीकी धार चली

कलिदीकी धार चली

विपरीति वर्णन

विपरीति वर्णन

विपरीति वर्णन

विपरीति वर्णन

[२६०]

सागर त अग्रात रची रति मोति धँसै हँसि हंस । विहंगम
 फूँद छुटी अटकी लट सौ छिटकी छुटै अग्र ज्यो । गंग तरंगम
 हौ जल 'आलम' धार सहस्र है ह्यो कुच मेरु विरे सिय जंगम
 धार हिये हरि के जु लसै मानो होत सितासित सागर संगम ।

[२६१]

रोति ठटी विपरीति के अंग करी ललना भुव भंग अधंगति
 'आलम' ओमल आलि कहुँ रति पेसी कछू अयकोकि उमंगति
 लोल छुटी लट सौ मुकुता लर अग्र जुटी धम के कन संगति
 लूटि सुधानिधि राजकी राहु चल्यो पनहासु चली उड़ पंगति

[२६२]

कैलि करै विपरीति कला रचनी नंदलाल उमै पुत्रि भारे
 अधको धसि गो पटु सीसहुँ ते निकसी कवरीक पनी कचकारे
 'आलम' गोरे लिलाट लसे ललित धुतिफूल जराउ के धारे
 अंडित रन्दु की कोरनि मानहु मंडित है दुहु ओरनि तारे



[२६३]

मजि सौज संयोग को भोगकला जुग मेज मिलाई गई सजनी
कधि 'आलम' हाम कैयास मिलै मलयादिक ओर सुवास घनी
कुच कुंकुम के कन अंकुम सों भूलकै तन कान्ह के जोति वनी
परसे जुग मेरनि सों मनु हैं लगीं स्याम घटा तन हेम कनी

[२६४]

हेम लना तन राधिके जू तन स्याम सट्टे दिन ही दिन यानी
पतिसों वनिराय जलपै दिनसों ते सुने कधि 'आलम' प्राणहितानी
हास विलासनि दंतन में छिटकै छवि सो उपमा जिय आनो
मानो विधुंतुद^२ प्रासु समै सुती आय कलानिधि मध्य समानी

[२६५]

अनील निचोल निसा महँ ल्यों विधुं पैठत फंचुकी कुंभ अटारी
छुवै पिय पेल्लव कालिम ज्यां कुच मैनु गही कर मूड़ जटारी
'आलम' यां जुवतो अथ दै नख रेख चली त्रिभंगी हरि टारी
मई रति सों रितु राति रगी रति मानो हना हर काम कटारी

[२६६]

हरि कामो अंपूरति काम जिते सचु^२ लेन पिया यनिता घर तें
कधि 'आलम' हन संकेत समै रसकेलि कलोल उभै भर तें
कुच उद्य मे धक नखच्छस यां घरनो मनमोहन छुवै करतें
अति आरकता^३ सुक चंचुपुटी निकसी मना फंचन विजर तें

१—यानी = रगत । २ विधुंतुद = राट्ट ।

* इ-व छः का अर्थ हनाटी समझ में नहीं आया । हस्तलिखित प्रति में पाठ पेशा ही है । २—सचु = मुख । ३—आरकता = (आरका) दूब लाव



[२६७]

रति समै रतिनायक जू सुखदायक सेज सुदेश निवासी
 आनंद कंदश्रमोद साँ पोषि विपारति केलि कला साँ विलासी
 प्रात भये अलसाने लला सरसानी अली रस लेत हुलासी
 याते सनेह सुगन्ध भयो मिलि तीय तिली पिय फूलनि वासी

[२६८]

रति रीति वितै रमनी भुकि कै रिस नैकु कगी अध ऊरध भौहि
 आलम भूषन धारि सुधारि कसे कुच कंचुकि फेरि पिछौहि
 कर ऊपर बेसरि मंडि नासा मुकुताहल के गजरा छवि साह
 घेरि मनो उड़पुंजनि ले सरसारुह आनि करे ससि सोहि

[२६९]

रति अंतसों कामिनि दंत समै रसही बस में सुखसैन समै करि
 मदनानल पीर सरीर भई तन में कवि आलम आलसता भरि
 पिय पानि कुचगद दं तिय के भलके नख मंजुल जोति जगै धरि
 संभु के सोस सरोरुह के दल छोरनि मानहु आस रही दरि

[३००]

रतिदानु दये अचला विगसी भ्रुकुटी करि वंक सगासन सी
 कवि आलम कुंतल चारु छुटे कहँ कुंकुम अंकित है कन सी
 लट ले खलि बेसरि नानिक के अरुभै भख भूम चले वनसी
 मिलि कै कच पुंजनि लाल चुनी चमकै घन में पटवीजन सो

[३०१]

कोक कला खनी रति नागर केलि ठट्टे सब रैन सिराई
 प्रात सभ सिधलत्तन सुन्दरि अंग रही पसि आलसताई
 जागि चली कर आली के कंध दे है कवि 'आलम' ऊपम पाई
 चंदन खंभ के अंकम' मानहु डोलत चम्पक माल सोहाई

[३०२]

अति मुहित है प्रमदा मन में मधुसूदन को मधु मोद लये
 कवि 'आलम' लालस आलसु डारि चली सुअली तजि यौद लये
 कर पल्लव दीप दुराये भई दुति पानि में रैन विनोद लये
 कथिता धरने छवि ताहि मनो सयिता सुत धारिज गोद लये

[३०३]

नवला अम लोचन रोचन के पल मोचने पूरि रही जल सौ
 कवि 'आलम' केलि कला हरिजू रिभई न कलू खिभई धल सौ
 तिहिको भरु ज्यों रथिके अंग को अंगयो न परै नलिनी दल सौ
 कल कोमल धाल कलेवर यो अति कादल होत कुलादल सौ

[३०४]

कंधुकी नील लसै कुसुंभी मुकता लरे कंठ में कुंतल छोरे
 नैन विसाल मराल कोसी गति बाल रसाल बहिकम धोरे
 नेकु चितै हरि त्यों कवि 'आलम' चंचल चाल चली चित चोरे
 जोयन रूप जगामंग सो फोउ या मंग नारि गई तन गोरे

१—के अंकम = शंकर में लेकर । २—भट = धार । ३—अंगयो न परै = सँभाला नदी जाता । ४—बहिकम धोरे = धोरी वस्त्रको (नवला) ।
 ५—त्यों = तत्क ।



[३०५]

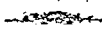
सजनी मिलि द्वै अवलोकि कहैं अतिही हरि राधिके के बस री
सखि देखि धौं कुंज बिहार यहै कवि आलम और कहा रस री
अंगिया सित भीनी फुलेल मली तरकी १ ठौर ठौर कसी कस री
किधौं प्रात सुमेरु के दोस भयो जितहीं तित ओस मनो पसरि

[३०६]

प्रात समै धन योधिनि मैं निरखै एक नागरि नारि निमेखैं
आलम आलस भूपन अंग रह्यो लगि भावतो भामिनि भेखैं
कुचुकी लाल कछु मसकी कुचसीध की ओर चलो सखि देखैं
प्रात रतोपल २ के तरके ३ प्रगटी मानो पुंज पराग की रेखैं

[३०७]

स्याम असंक मयंक मुखी निरखे रति औ रतिनायक हार
आलम कुंकुम के रंग की अंगिया अंग मैं छवि कोटिक धार
मसकी कुच कोर की ओर लसै सु कहा उपमा कवि और विचार
बूडत चंचुपुटी प्रगटी चकया मानो पीत परागहि टार



१—तरकी = मसक गई है । २—रतोपल = (रतोपल) लाल कमल ।
३—तरके = फटने से ।

यशोदा की उक्ति

[३००]

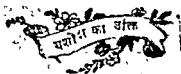
औरि धरयो है दुराय दुहार के प्यारे लला रुचि सों पय पीजे
 लोटत हाथ के भुवन छूटत रोघत ही यलि ती बल छोडे
 'आलम' दूध दही को मिठाई को मेवा को नाहि करे कहा कीजे
 कान्हर आरि निधारि बलाइ लियो आपनी माइ बिभाई न लाजे

[३०९]

अपने गृह माखन खाइयो जाइयो लाल नहीं कधहुँ पर नरे
 अरजे जननी कवि 'आलम' यो बिलमी जु कहूँ न अवेर सधरे
 ही सिख देन सुनी सुत स्थाम व फंस के सैन सब अरि तेरे
 धाम रही निकसी न कहूँ तुम राँक को सो धन कान्हर मेरे

[११०]

धीर घड़े मुरली लघु बीरन माँगन है तुम देउ यत्ना हो
 ही तो न वेही न डेत है माहि तू दे मेरी आनंद खंदकला हो
 'आलम' जान चले नित डोलत झोलत ली जननी सुख लाहो
 जान दे वंसी कहा लै करैगो तू धार लै माखन आर लला हो



[३११]

नन्द लई मुरली करे के नय ले कर कान्ह लखै परछाहीं
 'आलम' लै अधरों परसै छिन ही छिन चाउ सौ माखन खाहीं
 अंकुल कान्ह बजाइ न जानत त्यों जननी पहँ पहुँचन जाहीं
 मैयाँ रो ज्यों बज की वँसुरी ऐसी मेरीयो वँसुरी बाजतु नाहीं

[३१२]

दौरत गाँव बंदोरन छाँह ते घामे नै धोरि बयारिन साधे
 डोलंत हैं जिनहीं नित 'आलम' सु गोधृत फँसि रह्यो धन आधे
 कानेरि के दिन सौ कवि 'आलम' आवत लै धरुँह धरि काँधे
 हात छरी पनहीं पग पातें की सोस खुदू कवि कामेरि काँधे

[३१३]

कालि के कान्ह कलिन्दी के कुल लये संग बच्छ बसे धन में
 धुलिया अंकुलानि बिहानि नै गानि बिछुद्धित ताप नई तेन में
 कवि 'आलम' जीधन ओट भये पल लोचन सोचें बढ्यो मन में
 ताते असोधन है चली सोधने सो धन है गयो गौधन में

[३१४]

आलज पुंज के मध्य लला दरसै परसै रज अंग रुचै
 निरखे कवि 'आलम' पंगु भयो मनु रूप अपारहि क्यो डब रुचै
 नम्र नाहर थक हिये हरि के जटितम्मनि में उपमाहि सुचै
 यिनयै परिवा दुनियागम सौ मनो द्वेज कला दिननाथ मुचै



[३१५]

सुर हान जु ध्यान मुनिन्दनि कै बरन्यो- असकंध दुआदस में
 कवि 'आलम' पूरव प्रेम प्रताप सु तौ प्रज नारि कियो बस में
 खुनि कुंडल माल औ भूपन भूपित किकिनि मुद्रिक सैन समैं
 तन कान्ह कियो मनि जोति मनो जमुना जल सूरज की रसमैं

[३१६]

कछनी कटि स्वच्छ कछे कचनी घरही घर पुछ को गुछ बनो
 वन राजत श्री मुरली घर जो धुनि सौ दिन अनंद हांत यनो
 हिरदै भृगु चरण को चिन्ह लसै उपमा कवि 'आलम' कौन गनो
 प्रगटे सु अनंग प्रसंग लगे छवि सुन्दरि अंग के अंक मनो

[३१७]

मधुदंदन श्री नंदनन्दन जू दुखकंदन चंदन खौर करी
 तुलसी दल माल बिसाल लसै निरखे छवि कामकी कान्ति हरी
 कवि 'आलम' भालके ऊरध यौ उपमा सिखि-चंद्रकी पतिधरी
 सुखमा के समूह सरोवर में मानौ फौलि फुलेल की छोट परी

[३१८]

अंग त्रिभंग किये मन मोहन ते मन काम फे कोटि हरे
 चित चाहि चुभयो वृषभान सुता तन बांसुरी-आँगुरि गैन धरे
 चंचल चारु-चलै कर पल्लव 'आलम' नेकु न नैन टरे
 तजि रोस सुचारु सुधा कर पै मनो नीरज फे दल निर्र करे

[३१६]

नंदलला मुष चंद्र चंद्र छवि कोटिक चंद्र कला पचि हारी
 'आलम' काम को काम यहै ब्रज याम को काम की कामना टारी
 सुन्दर नासिका पास रही अघ भीजनि है मसि मोमित भारी
 पाँडुकि फंठ नवीन उठे प्रगटी मनो फोर के फंठ की फारी

[३२०]

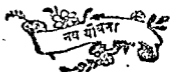
सुन्दर नंदकिसोर तरंगनि अंग को संग अनंग गद्यो
 महिला सय मोहि रही मदि की भनै 'आलम' रूप महा उमद्यो
 मसि भीजति कान्ह के आनन पै लखि स्याम सी रेख को भेष कद्यो
 छवि परन इन्दु के मंथ मनो दुतिया के सरूप है राहु रणो

[३२१]

जल फ्रीडत थी नैद-नंदन जू दुति वंदन निन्दति सुर प्रगा को
 यनितादिक मुदित उदित रूप तै वंचति जानैद चंद्र सुधा को
 'आलम' को कुवलै दल मोलि वन्यो तनु स्याम विराजत जाको
 मूरतिवंत लये सरिता संग संभु परै मनो सैल सुता को

[३२२]

मुकुता मणि पीत हरी वनमाल सुतो सुरचापु प्रकामु कियो जनु
 मूपन दामिनि दीपति है धुरवा सित चंदन खौरि कियो तनु
 'आलम' धार सुधा मुरली वरणा पविहा ब्रज नादिन को पनु
 आवत है वन ते घन से लखि री सजनो घनस्याम सदा-घनु



नवयौवना



[३२७]

पेड़ पेड़ों चली फिरि ओरनि ऊँचकै भौंहनि मीस उचाये
 नैन डरै पिडरै फिरि आपन काननि कोर दरीन दुराये
 'आलम' आनि गहो पहिले मन ठौरहि ठौर को भेदु यताये
 राहु फिखो तन को नगरी मुगुधार्ई' गयी अय जोयन आये

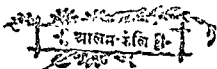
[३२८]

मोर भयो जो मरीस धिये निकसो सरकार हुनी लरिकाई
 ठौरहि ठौर भई कहु और जु अंग अंग, फिरि है दुहाई
 आइ गये अयताली' दोऊ कुच छाप लये सिर स्याम सुहाई
 'आलम' लाल गुपाल को सौं सिरदार भई तनमें तरनाई

[३२९]

वैस फिरे पलटो कल फंड लफै फटि फैलै कपोलनि पाई
 चाहनि नैननि चाह रहै चमकै चख औ भुजमूल, कलाई
 रूप दसा सब त्योंही भई तन जोयन को छवि यों भटि आई
 पाहिर दर्पन ज्यों दरसे भलकै छवि छाँहर में जिमि भाँई

१—मुगुधार्ई = लडकपन । २—अयना रा = (पाठ अयताली) अदभुत
 परज कर क्षेत्राला हाकिन । ३—फैल = फैलाव, विस्तार (धियाम)



मानवर्णन

[३३०]

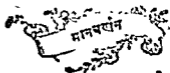
श्रीधि टरी न टरी ललना न श्रयो चित नेकु रणो लव लीनो
 'आलम' छोन छपाकर जोति छपो निधि छीर छपा भई छीनो
 तेहि टौर टरोज के अग्रनि लीं परसी जलधार भये दग दीनो
 'खेलत संभु सुधाकर में घनसी कर डोर लगी जुग मोनो

[३३१]

मान मनो सज्जतो सिख मानि पनी सिख दैन को मान हटो मुकि
 'आलम' नैननि रूप को भेष निमेषन जो पिय देखत हैं दुकि
 गन्दन की बिंदुलां पर रंग भरे मुकुटा छबि है ललना जुकि
 भूमी लता कन ओस लगे शध गोन बंधूक प्रसून रहै भुकि

[३३२]

मान कला नवला सुनि कै सहुलासनि, लाल मनावन आये
 'आलम' आली न मानें कछो पै तिया मन में मनमोहन भाये
 रोस भरे अँसुवा पट ओलक लोलक मालक मध्य समाये
 अँजन सों मिति कज्जल है जुग खंजन ज्यों जमुना जल न्हायें



[३३३]

तंजिमान मुग़रिपै नारिचली कवि 'आलम' लोल कलिन्दी के तोरहि
 दार हिये हरये पग धारि दिपै द्विज पंति हरै छवि होरहि
 मुज डोलत योलत मंद गती फर पल्लय चारु लये छवि वीरहि'
 कोस पिदारन के भ्रम सो निकसे दल फंज गहे मनु कीरहि

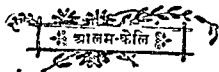
[३३४]

सुधा को समूह ता में दुरे हैं नछत्र किधौ,
 कुंद की कलो की पाँनि धानि घीनि घरी हैं ।
 'आलम' कहे हो ऐन दामिनी के धये बाँजु,
 धारिज के मध्य मानो मोतिन की लरी है ।

स्वातिक की वूँदें विवि विहुम में वासु लीन्हो,
 ताकी छवि देखि भति मोहनै बिसरी है-।
 तेरे हँसे रदन किशोरी दुति राजत है,
 होरनि की घानि 'ससि मध्य है निकरी है ॥

[३३५]

तैं कियो मान मनावत ही मनमोहन जामिनि जागि' गये
 अजहं रही मौन अनम्मनि है मन' ही मन नीचहि नैन नये
 तेरनी अरुनी रचि प्राची दिसा कवि 'आलम' उष्यमा ये जु ठये
 तम नास को भात महीप चढ्यो तँबुआ तकि तानि उतंग दये



[३३६]

पेइये जो तुम कंज के रंघनि कालि बिलोकी गोपाल के धोरें
 याजु अयानि है आई है देखि मनो उन घातनि के तिन तोरें
 चितये कच में विपरीति समै अलि सायक से मधुमिन्न में डोरें
 गुलाल की लालकली कलकों मनो लेत कि लालको लाल जुभोरें

[३३७]

गोकुल तें गुकुलेसहि लै गवन्यो सुफलासुन है अधिकारी
 कवि 'आलम' गोप गऊ गोपिका गन घोप मये सब दीन दुखारी
 नन्द पटै फिरि जो नँद-नंदहि दंद-उदेग उठ्यो जिय भारी
 हारि सरङ्गसु मारि मनै, जैसे हारि चलै कर मारि जुआरी

[३३८]

ए रे अहीर अर्जो कहि धौं धौं तो जाऊँ तहाँ हैं जहाँ गिरिधारी
 कैसे फिखो मुख वा रुख सौं सय गोकुल की सुख की निधिडारी
 हेरि कहै जमुदा पति सौं कवि 'आलम' व्याकुल है जिय हारी
 आनंद चन्द गोविन्द बिना अय नन्द भई मति मन्द तुम्हारी

[३३९]

दीसत हैं दिसि और दसो जिय आस ससंक प्रकास दिसाकी
 कवि 'आलम' अंग लगे दगज्यो अयला वसिसंग बिसाल विसाकी
 हिरदै अति ताप भई सुत के मुख सूखन है तिजि आनि तिसाकी
 नेमुय दृन सफौं कहि हौं सखि धौं निसि है कथ जोन्हि निसाकी



[३४०]

पीय पयान की पावत चाह भये सुपयान को प्राण उतालें
 थाँसु श्रौ साँस उसाँसनि हैरति प्रासनि साल वियोग के सालें
 'आलम' अंग अनंग की ज्वाल तें आंगनु भौन फुनिङ्ग सं चालें
 ज्यों जिय को दिग आवत जानि परै जमराज को जी हू के लालें

[३४१]

कान्ह चलौ घिलँधौ, न कहँ सजनी जुगवै अथ लौ अथलै
 कवि 'आलम' व्याकुल नैन वियोग अरी विरहानल देह दलै
 थाँसुआ भरि डारै उसाँसनि सौ भलकै तन कंपत हीय हलै
 सरजात की बूँद अथै रस, मै छवि लोल मनो जल डोल चलै

[३४२]

जो भरिहैं भरिहैं घट सी घट है न घटै अँखियाँ, उनई हँ
 नीद गई निमपौ बिसरी कल में पल, में पलको न दर्ई हँ
 'आलम' आँधि की ओल अली अथ लौ इन थाँसुनि साँस लई हँ
 पानिप डींठि सकेलि सबै जुरि कै पुतरी भर, भार नई हँ

[३४३]

कान्ह पयान कछो सजनी तिय प्राण पयान के, से दुख पावै
 'आलम' छीन परी मुरछाइ परी छिति नीर सखी मुख नावै
 सीतल हू पग पानि गये छतिया तपि कै पियरी तन छावै
 जो हू की जानि परै न कछू सखि देखत हँ जमह, अम आवै

[३४४]

कान्ह वियोग वियोगिनि नारि परै दुख सोचनि नेकु निखूटै
 'आलम' देह सदेह वियोग विरोपि^१ दलै सुख सम्पति लूटै
 त्यों जम आवत आजु कै नीठिहू आजु^२ के ओर दुआनल टूटै
 इते पर चंद दुखी करै मो कहँ या दुखतें सखी कैरे कै छूटै

[३४५]

बिछुरै ते बलबीर धरि न सकति घोर,
 उपजी विरह पीर ज्यों जरनि जर की।
 सखिनि सँभारि आनि मलय रगदि लायो,
 तैसी उड़ो अवली कहँ तैं मधुकर को।

[३४६]

बैठयो आय कुच बीच उड़ि न सकत नीच,
 रहि गई रेख 'सेख' दंत दुहुँ पर की।
 मानहु पुरातन सुमरि धैरु संभु जू सौ,
 माखो सम्भरारि^३ रहि गई फौक सर की ॥

[३४६]

मारिये को तिय मार के मैं रही मेरे कहे विक मोरनि मारि दै
 मारत मंद सु चंद दहै तनु मंदरि मंदि सखी दिसि पारि दै
 स्याम बिना कवि 'आलम' धाम तैं ककुम मेद सुगंधदि डारि द
 पारि कै देखि परै तन वाती सो नारि तू यावरी पारिज पारिदैं

१—विरोपि = विशेष रूप से । २—आजु = आज । ३—सम्भरारि = काम ।



[३३७]

रूप सुधा मकरन्द पिये ते तऊ अलि कंट बियोग अरे हैं
 'सेख' कहै हरि, सौ कहियो अलि ध्यान प्रतच्छ समाप्त करे हैं
 जो मन भूरति के निरखे हम देखत ही गिरि गात गरे हैं
 जोति प्रसंग पतंग जरे इक भाँई के भूमत तेल तरे हैं

[३४२]

पंगु कियो पिलवान को पौरुपु लै चल्यो कुंजर कोटिक पेलि ज्यो
 'आलम' दंती के दंत हिलायकै हाथलिये कियो खेल सोखेलि ज्यो
 कान्ह वली^१ तन थोन की छंछु लसैं अति जग्योपवात सौमेलिज्यो
 नील नगपर इंदुबधू घनसार गिरिपर बिदुम वेलि ज्यो

[३४६]

कर पोथो लै पंथी के पंथ चले छिन ठाढ़े है पूछति है कहैं जैहो
 गुन वैदके वेदन घाँह गहो बिरहा घर को गुन कौन बतैहो
 जोतखी हो ती चलौ घर भोतर घोषि, धखो सुधरी दिन वैहो
 'आलम' आजु घनो, घन है घन के उनये जु घनो दुख पैहो

[३५०]

धरि रूप सुधा को पियूप मिले बिनु जीम के स्वाद कहा रचिये
 कधि 'आलम' घास को घास नहीं मन भृङ्ग सुवास भले सचिये
 जल में जल के गुन जाने नहीं भये अछर अछर क्यों रचिये
 मुकुतै न कछु जुगुतै जवलों, 'सव' सुतो भगतै भगतै जँचिये

चन्द्र कलंक

[३५१]

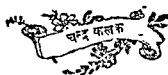
विधु प्रह्ल कुलाल को चक्र कियो मधिराजति कालिमा रेनु लगी
छवि धौ सुरभीर पियूप को कीच कि वाहन पोठ की छाँह खगी
कयि 'आलम' रैनि सँजोगिनि ह्ये विय के सुख संगम-रंग पंगो
गये लोचन बूड़ि-चकोरनि के सुमनो पुनरीनि की पाँति जगी

[३५२]

धिर फुरम थापि रसानल में विधि जानि सुनौ त्रिकुटी है ठटो
धरनोधर मत्य समत्य फगी सरिता सर विधु सनेह तटी
'आलम' के गुन मेर मनो रवि प्रात को दीपनिखा जो जटो
निदि धूम धुके दुति कज्जल की अजहँ नम कालिमा लै प्रगटी

[३५३]

श्रीपथिनाथ विरोध गुनो गुन सोधि तमोरस भेद विचारा
'आलम' पूरि धरी धरिया रवि कोनो नरे तप तेज पसारा
आगि दई अथये अरुनो अति फूटि के जंघु गयो उड़ि पारा
रैनि भगी कजरी विधुरी जनु है फन धातु लगे मढ़ि तारा



[३५४]

गुन पाये हैं द्वै श्रिमैंगी हरि के किधौं मैत घसन्तहि जोर परी
सुरचाप गड़ी तड़ तेग तये कधि 'आलम' उत्तर दन्डिन री
प्रणट्यो परिवार विपुन उते इत पछिम है विधु अर्घ धरी
दिसि वारि चितै चित चक्रित है अनु जुद्धत जोधनि खंगफरी

[३५५]

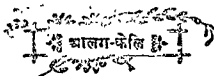
तै न सुन्यो जनकादि के द्वार पिनाक पखो जु सवै विरचै
कधि 'आलम' थान थपे उथपे की रहै बलु कै नर यैन रचै
सार के साल उसालि धरे बुकि रावन देखि यहै परचै
धिगुटी गुन चाहि टकोरत ही कर लै रघुवीर करी किरचै

[३५६]

कोसिला सासु सखी रघुबंसिनि केतक दूरि सवै संग पैया
हौं अंध हारी हौं हारी कछो सुनि कै हरि नैन हिये जल लैयो
'आलम' नीर कै गोय रही किये जानकी भूमि की ओर कचैवो
घँघर से वन वे वर रुद्र तहाँ हू ते और कहाँ लागि जैवां

[३५७]

टेरु को मेरु अनेगनि टारिहौं दानव द्वार को दारुन हाथी
'आलम' कूत के मूल कुदारि हौं मेदि कुमन सुमंत को गाथी
रावधराइ को दूत धली जिहि दूखन खंडि कै तारिका नाथी
अंगद नाम अभंग भुजाबल बालि को बालकु रामको साथी



[३५८]

मंडित पान प्रचंड अखंडित संधि सिलीमुख दंडि कुदंडन
 'आलम' लै श्रवनी कवनो चलयो आवतु राम अडंडन डंडन
 हे दसमाथ सनाथ अजौ करि माथ पुनीत है कै वर मंडन
 तारिका तेज उतारक धारक तारि कहै खर दूपन खंडन

कुकुच छवि

(कुच छवि)

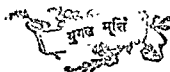
[३५९]

अनि आतुर चातुर फान्ह रमै तन में रस रासि नई संचरै
 कवि 'आलम' याम बिहार वढ़ै सजनो सिख चित्त सबै विसरै
 मुख पै कच कै अधिकारी खुले अध चौकी जगम्माग जोति करै
 उत है मानो सूर उदोत कियो इत और सुमेरु कुह उतरै

३६०

अलि फान्ह लता-पनिना मधि में मधु पान कियो मन मौत^१ समै
 कवि 'आलम' मध्य मुचे सकुची गति उर्द्ध करी अकुटी रिस में
 छुपि नील निचोल उरोजनि त्यों मसक्यो परिंभन^२ के मिल में
 फनकाचल शृङ्ग प्रकासन को रवि को कर दौरि परी निसि में

१—मनमौत = मन भावत, मनभाया । २—परिंभन = शालिगन ।



[३६१]

रजनो वितई रति सौ सजनो विरकै एग द्वै तजि चंचलमा
 कवि 'आलम' आलस ही जलपै किलकै कुच खोन भई कलमा
 किये बकित बाम हरो कँचुकी गई उद्यकि यौ छवि अंग लेता
 सकुच्यो जु सिघार समोर लगे प्रगटी सरको मनो उज्जलता

[३६२]

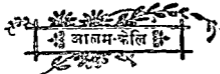
रजनी मधि राधिका गौन कियो निरखी अँखियाँ पति प्रेम भरी
 कवि 'आलम' रंमन को ललचो रति लालच ले हिय लाई हरो
 खरे खोन हरे पट की अँगिया दरकी प्रगटी कुच कोर सिरी
 अरुके जुग लाल सिघालनि मैन के चक्र^२ की चंचु मनो निसरी

युगल मूर्ति

युगल मूर्ति

[३६३]

प्रज भूपन भावति राधिके जू गुन रूप के साँचे सुअंग गढ़ी
 कवि 'आलम' अंग सुगंध सदा परचै विरचै करि कोक पढ़ी
 कवनो भुज स्याम के फँध धरे रचनो मनो प्रीति की रीति यड़ी
 छवि ता तन स्याम की सुन्दरता मानो चंगलता नग नील चढ़ी



[३६४]

चार तमाल प्रसून लता किधौं स्याम घटा संग विज्जुल गोरी
मधुपावलि फंत्त की माले मनो छवि पारस कंचन खंम की जोरी
मूरतिवंत समुद्र समीप दिपै यड़वागि सिखा फलु थोरी
जो चलि 'आलम' नोके लखौं तो पै नन्दलला वृषभान किसोरी

[३६५]

गुन रूप निधान विचित्र, घधू हित प्यारो पिया मधुगंजन की
कवि 'आलम' पूरन काम समीप-सुदेह दिपै दुति मंजन की
कर पल्लव कज्जल सौं दग छोरनि, रेख रचै पति अंजन की
लिखनो दल मंजुल कंजकी मंन लै चंचु सँवारत खंजन की

[३६६]

प्रज संपति, दंपति राजत है धन देखत रीझि अनंग गता
कवि " आलम " संग सुगंध समे अंग अंग अतंग सुगंधरता
भरि भँटत भामिनि भेटनि मै भुज छे छवि पावति फोटि सता
मनो मंजुल लोल तमाल में नौतन चारु चढ़ी कलधौत लता

[३६७]

वाम दिवू प्रजराज प्रिया वनि कै विहरै धन निग्रम में
कवि 'आलम' एकहि कोक पढ़ै अति दंपति परु 'षडिकम' में
ललना कल फाँति कलेवर का झलकै हरि के हृदयास्रम में

४ ४ ४ ४ ४

१—रुतपौत=सोना । २—चदिजन = (चपकम) प्रस्था ।

[३६८]

धृन्द धवूनि के घोच जगै नथ नेह लगै उमग्यो तन आवै
चाह को चाउ खरे चपलै कलु लाजनि नैन सो नैन दुरावै
'आलम' है इत लाल लटू निरखै इकही टक घोच न पावै
यो लपटै पल में पुतरी चितवै पिय को मुख डीठि धचावै

[३६९]

संक तजे वृषमानु सुता जमुना महँ न्हात भई छुथि भारी
धपु राजत चारु चिटपु किये जनु हेम लता कनकाचलि धारी
हरै हरै आह गण हरि हेरि सखीनि के ओझल है गई प्यारी
घारि में नारि दुरावति है कुच कोक मानो विधि बूझकी मारी

[३७०]

कुंज की थोट कलिन्द-सुता तहँ क्रोड़त राधिका संग कन्हाई
पौढ़ि प्रजंक सुथंक मिलै अंग अंग लसै अति मंजुलताई
रंधनि है निरखै सजनी भनि 'आलम' यो उपमा मन आई
रैनि बरै सरि पारस^१ यो झलकै जल में जनु पावक भाँई





ॐ आलम-केलि ॥

अभिसार

[३५१]

किंकिनि फंकन फान' मिलै घर दादुर मींगुर की. भनकारहि
भूपन की मनि एक भई जुगनू घर की मनि जोनि अपारहि
'आलम' कामिनि को तन कुन्दन जाइ मिल्यो जग थोजु उजारहि,
काम के प्रासनि स्याम निसा घर पैरी सहाइ भये अभिसारहि

[३७२]

चन्द्र सुधाकर धार द्रवै जग मज्जित कालिमा टारि गई है
जोति की श्रोत्र सहेट भई अभिसारक के आभिलाष नई है
सौस चख्यो रजनीस, जबै तन की धिर पावन' छाँह भई है
जोन्ह छपा दुरि आयन को तम सौज मनो कर लाइ लई है

[३५३]

सोघ सहेट भई रस के घस घासर की सुधि बेस विसारी
है तुम सौं तमई^१ वितई अघ, सौस चख्यो सु चढ़ी कुल गारी
कौलनि तै छुटि भौर चले तिन्ह की अभिसारिक छाँह निहारी
दौरि, चलै दुरिघे को हिये जिय जानति है यह जानि अँधारी

१-कवान = (सं० कवण) भूपणों की मंकार । २-पावन = प्रति
छोटी । ३-तमई = तमो, रात्रि ।



[३७४]

रैनि सरह सुधानिधि पूर चढ्यो जग कालिम छाँह अडारी
 सैनि सहेट वदी निसि मैं बिचख्यो उठि गौन कियो अभिसारी
 भूपन के मुकुता सति अंग सुकेल पुहुप्पनि सौ छवि टारी
 दुरावति छाँह मनो मुसुकाइ सुजाइ मिली मनमोहनै प्यारी

[३७५]

माधव जू मधुमास मधुञ्चन राधिका सौ करि केलि मुचे ते
 तहाँ रस के घसि आरस मैं सु गये तजि संगम सैन मुचे ते
 उर तें उड़ि गो पट न्यारो उरोज सु 'आलम' हार के बीच रुचे ते
 मनो गिरि संधि के सिंग दुबिख के वासनि आसनि मध्य उचे ते

[३७६]

औधि की टेक प्रबोधन को पिय सोधन कुंज गई सजनी
 कवि 'आलम' बाल बिलंबि भये कलपै मिलि सेज सँताप घनी
 पगि पीठि प्रसून उठी छवि सौ छवियाँ लगि कुंकुम स्वेद कनी
 विरहा हनी फोंक फबी उत है प्रगटी इत है मानो वान अनी

[३७७]

औधि टरी न हरी निरखे मुडरी तिय कुंजगली भय भारी
 कवि 'आलम' आसउदास लये ल्यौल्यौ स्वाँस भरै अखियाँ भरिहारी
 हिये चौकी जराउ की आनन है मधि छूट चली धवली जलधारी
 साँव सुमेर की अंकम काज मनो रवि को विधु बाँह पसारी



आगतपतिका

[३७८]

हरि आगम की अँगना सुनि चाह सँवारत अंग हुलास हियो
कवि 'आलम' भूपन भेष बने छवि कोटिहि मैत को अंसु लियो
तिलकदुति कुंकुम मध्य ललाट सुचारु जराउ को बिन्दु दियो
अनुराग तँ जाग जगभग मानो सुहाग को भाग प्रकास कियो

[३७९]

घर आँगन पैठत साँभ सवार मिलो अँखियाँ अँखियाँ जिय जी सों
'आलम' आन न सैन लखैं पियको चितु तीय तिया चितु पी सों
पुर बोधिनि में मुरली सुनि के चलि आवत एक कछू मिस ही सों
कान्ह चितै मुसुकाइ इते कछु बोलति है कहि बात सखी सों

[३८०]

बातक सों घरु वैरु बढावत घाटहि घाट अनीति सची है
ताहि सों खेल करौ नँद को सुन जाके हिये यह बात खंची है
'आलम' यादिहि दोषु लगी सब कोऊ कहै यह याहि रची है
काँकरि यों जु कपोलनि छ्यै गई देखत ही कैसे आँखि बची है



[३८१]

डरिये इन्ह सौं जितनो हरि ये निसि में पटमोटनि खोलति है
इत इतर है इतराई चले फिरि छाँह चितै तन तोलति है
कवि 'आलम' और तौ मोंगि रहैं अरां यातो इते पर बोलनि है
रहिरो मचलानु कहा कहिये माई आपने जी पर डोलति है

[३८२]

लाज तजी जिहि काजु सखी इन लोगन में बसि आपु हँसाऊँ
'आलम' आतुरता अति ही तिहि लालचु हौं तुम्हरे संग आऊँ
कान्ह मिलै तो मया करि चाहत हौं न कछु जिय हू की सुनाऊँ
देखन को अँखियान महा सुख जो अँसुवानि सौं देखन पाऊँ

(३८३)

गोरस फेरि दुनासन के मिसि जाँवन हू हित जोवन जैये
रुखे है रोप शोराहनो हू यहि लालच बसक धान बनैये
औरहु काज गर्ये कवि 'आलम' पै ओहि नंद गली होइ अँधे
फौनहु भाँति कछु छिन कान्हरु जो अँखियाँ भरि देखन पैये

[३८४]

जात चले कछु दोषु लगै तेउ बावरि रोस करै ब्रज में बसि
'आलम' नैननि रीति यहै कुलकानि तजी पुती री मुँह में मसि
जघपि घूँघट ओट कियो हम कान्ह कहँ चितयो फिरि के हँसि
किंकिनि छूटि गई तरफो तनी लाज के संग चलयो अँचरा बसि



[३२५]

टोकत हो मग रोकत हो सु कहा इन यातनि कान्ह अघैहो
 'आलम' ऐसीयै रीति चली माई या ब्रज में कछु उलटिये ही
 गागरि डारि भजे इंडुरी गहि काँकरि डारत औसरु लैहो
 हौं उमहीं जु कह्यो सु कह्यो हम का कहिहैं तुम ही पछितैहो

[३२६]

ओर सबै ब्रज की जुवती तिन तो अपने हितु कै हरि लेखे
 'आलम' सैन सहेटनि भेटनि है तिनहू रति मैन विसेखे
 मै सखी रूप की छांह सी छवै कबहूँ अँखियाँ भरि कान्ह न देखे
 मो तन चाहि उन्हें चितवैँ सहिये कैसे माइ ये लोक परेखे^१

(३२७)

कहा कहिये केहि सौं कहिये हित सौं कहिये कछुना कहि आवै
 देखत ही सब घोष घँघोवत देखत ही हरि देख्योई भावै
 क्यों सुनि कै रहिये ग्रह ज्यों जमुना तट टेरनि आनि सुनावै
 सो मुरली सुनि कै कवि 'आलम' दंद उदेग^२ उचाट उठावै

(३२८)

संटकारी लट्टें रतनारे से नैननि अङ्गन अङ्ग [अनङ्ग जगी
 दिग ठाढी तोसों हँसती जु हुती अघ ही उठि भीतर भीन भगी
 मड़हा गढ़ है किधौं नंदलला जैसे मानत ही कोठ और ठगी
 नेकु न्यारे हु मोहि सु देखन देहु कहाँ किनको नहि फौन लगी

१—लोक परेखा = लोकापवाद का दु:ख । २—उदेग = उद्वेग ।



[३२६]

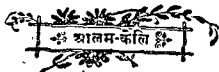
जोवन के फूल घन फूलनि मिलनि चली,
 बीच मिले कान्ह सुधि बुधि बिसराई है ।
 बाँसुरी सुनत भई बाँसुरियो बाँसुरी सु,
 बाँसुरी की काहि 'सेख' आँसुनि अघाई है ।
 थकि थहराइ थहराइ बैठियो न कहूँ,
 ठहराइ जीय पेसी पुनि ठहराई है ।
 वाहनी बिरह आक वाक बकवास लगी,
 गई हुती छोक दैन आपु छुकि आइ है ॥

[३२७]

जहाँ तैं निवारौं जाइ नहाँ उठि परै धाइ,
 हियो अति अकुलाइ लाज न करत हैं ।
 देख्यौ चाहैं चार चार मुरि नन्द के कुमार,
 अति ही वंसी बिहार प्राननि हरत हैं ।
 देखे तैं है मुरझात बिनु देखैं बिललात,
 दुख देत दुहूँ भाँति व्याकुल करत हैं ।
 मारि मारि मीजि कै मरूरन मरोरि डारी,
 मेरे नैना मेरी आई मोहीं सौं अरत हैं ॥

[३२८]

फूलि फुलवारी रही उपमा न जाइ कही,
 कहा धौं सराधौं ताते जोति अधिकानी है ।
 'आलम' कहै हो धरी मोतिन की पाँति धरी,
 हीरनि की काँति छुबि देखि कै लजानी है ।



दारिम दरकि गयें चाके संमुहें न भये,
 रवि की चमक कितो चार में बखानो है ।
 तनक हँसनि मैं दसन ऐसे देखियत,
 दीपत नलुत्र मानो दामिनी दुरानी है ॥

[३६२]

काम कलेसहिं भेष फिरो सब कामहिं नेकु परै कल कैसे ।
 'आलम' ए अलि नैन अली मुख बारिज बाभु' रहै नहिं तैसे ।
 सीता के सोक में तापन राम विलापन आप तयो तनु तैसे ।
 छीन मलीन अधीन दुखी दिन रैनि गये रजनी पति जैसे ।

[३६३]

केसू कुरहरें^२ अंध जरे मानो कैला धरे,
 कैनहाई कोयल करेजो भूँजे खाति है ।
 फूली बन बेली पै न फूली हौं इकेली तन,
 जैसी तलबेली औ सहेली न सुहाति है ।
 चहुँघा चकित चंचरीकनि की चारु चौप,
 देख 'सेख' रानो कौप छाती खौप^२ जाति है ।
 होन आयो अंत तंत मंत पै न पायो कछू,
 कंत सौं बसाति ना बसंत सौं बसाति है ॥

[३६४]

रैनि गढ़ गूढ़ रही 'आलम' अकास मिलि,
 चन्दु गढ़पति जानै अटल अट्टि है ।
 दौरि दिनु लाग्यो नारि मेरु भरि सूर आगे,
 गोला छूटि लाग्यो ताते पुछपौरि फूटि है ।

१—बाभु = बिना, बाँर । २—कुरहरें = चितकरे (आधे काले आधे लाल ।) ३—सौं जाति है = पुस जाती है ।



दिसि की उजारी जानी जोन्ह भीति भहरानी,
 हलमले द्विजराज जाम सोम छूट है ।
 आपु चल्यो प्रकुलाइ छपति नछुत्र पाछे,
 दल भाजे जात प्रात पनहरी लुटि है ॥

[३६५]

बरुनी कटोली भौंहे कुटिल कटारी सी हैं,
 काम की विचित्र ऐसी काके पर डारिहै ।
 अलक तिलक नैन अनग अनंग टीको,
 अनियारे औ उतंग उर पर डारिहै ।
 'आलम' कहै हो कहुँ कान्ह जू कितै है आइ,
 सोचति तव न श्रव रोक्त न सँभारिहै ।
 जोवन की माती ग्वारि अंचर सुधारि देह,
 दैव की सँवारी काहू मानसहि मारिहै ॥

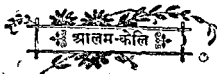


शान्तरस

(३६६)

अलि पतंग मृग मीन दीन छवि छीन नलिन पुनि ।
 गज बाजी कुन्दनहि हंस सारस कदली गुनि ।
 कोकिल कीर कपोत कुन्द जो पटतर भापहि ।
 हौं क्यों यहि विधि कहीं बुद्धि अनचाहत नापहि ।

वृषभान सुता सम कहन कहँ, 'आलम' त्रिभुवन में शु कछु,
 यह मन बच क्रम कै जानियहु कहि कहियो सो सयँ तुछु ।



(३६७)

मेजु सुखासन हेम हीर पट चोर विविधि वर,
 निरखि निरखि मन मुदित होत निज सुख संपति पर ।
 आपु बनै वनिना वनाइ विलसन विलास अनि,
 जग रत्नक जगदीस सो जु भूल्यो जु अल्प मति ।
 अजहँ सँभारि 'आलम' सुकवि, जौ लौ अन्तक नहि अस्यो,
 पग डगमगांत हेत हँसत, विरह भुशंगम को डस्यो ।

इति श्री आलमकृत आलमकेलि समाप्तम् ।



साहित्य-भूषण कार्यालय, काशी

सं

भाष्य पुस्तकें

१—अलंकार मंजूषा	...	१)
२—विहारी-बोधिनो	सजिल्द	२॥)
" "	अजिल्द	२)
३—सोनागानी (नाटक)	...	॥)
४—ब्रह्मचर्य की वैज्ञानिक व्याख्या	...	३)
५—सनेहसागर	सजिल्द	॥॥)
" "	अजिल्द	॥=)

छप रही हैं

- १—सूक्ति सरोवर
- २—मनिराम सनसई
- ३—रामचन्द्रिका सटीक

और पुस्तकों के लिये सूचीपत्र मंगा कर देखिये ।

